دہلی کلاتھ مل یا انسانوں کا بوچڑ خانہ؟

"سر" شری رام غور کریں!

- آج تہذیب کی سیڑھی پر انسان اور سماج اونچا اُٹھتا جا رہا ہے۔ ایسا خیال کیا جاتا ہے!
- انسان کو چھوڑیئے۔ حکومتیں حیوانوں پر بے رحمی کو روکنے کا انتظار کر رہی ہیں۔
- لیکن قوم کی خدمت کی آڑ میں تجوریاں بھرنے والے سرمایہ دار کارخانوں میں کام کرنے والے مزدوروں کو ان حیوانوں کے برابر بھی درجہ دینے کو تیار نہیں۔
- ملک کی راجدھانی دھلی کے سب سے بڑے کارخانہ مالک "سر" شری رام کے دہلی کلاتھ مل میں انسانوں کو منافعوں کیلئے بے روک ٹوک قربانی کا اکبر اپنایا جا رہا ہے!
- منافعوں کی طمع میں ایک مزدور سے چار کا کام لیکر پیسہ بچانے کیلئے نئی مشینوں میں حادثوں سے بچاؤ کا انتظام نہ کرکے مشینوں کی رفتار حد درجہ سے بڑھا کر چارج شیٹ اور برطرف کرنیکے نوٹسوں سے زبردست دہشت پھیلا کر مزدور کو آٹھ گھنٹہ تک پانی پینے یا رفع حاجت تک کا موقعہ نہ دے کر غیر اُن پر ہر طرح کا ناجائز دباؤ ڈال کر۔ کلاتھ مل منتظمان مزدوروں کا خون چوس رہے ہیں۔
- چوبیس گھنٹوں میں ۲۳/۱۱/۵۹ اور ۲۴/۱۱/۵۹ کی صبح کے درمیانی وقفہ میں چار انسان مالکوں کے منافعوں کی قربانگاہ کی بھینٹ چڑھ چکے ہیں۔ مل کے بجلی گھر میں شری کرن سنگھ۔ برجی رام اور رام سہائے۔ بجلی کی موٹروں سے نکلتے ہوئے دھدکتے شعلوں سے کوئلہ بن کر اروِن ہسپتال پہنچ چکے ہیں۔ کوئلہ کی "کنویر بیلٹ" پر کام کرتے سردار کندن سنگھ کا داہنا ہاتھ جڑ سے اُکھڑ کر بیلٹ میں رہ گیا۔ یہ بہادر دیش بھگت مزدور بھی اروِن ہسپتال میں زندگی اور موت کے بیچ لٹک رہا ہے۔
- ہر روز ایک نہ ایک حادثہ مزدور کو مُنہ پھاڑے نگلنے کو تیار ہے۔
- سرکار کا فیکٹری محکمہ نہ جانے کہاں سو رہا ہے؟
- کیا وہ نہیں جاگے گا۔ جب تک مزدور کے صبر کا پیمانہ لبریز نہ ہو جائے؟

بی۔ ڈی جوشی جنرل سکریٹری۔ کپڑا مزدور ایکتا یونین (رجسٹرڈ) گئوشالہ گیٹ ڈبل پھاٹک روڈ کشن گنج۔ دھلے

देहली क्लौथ मिल या इंसानों का बूचड़खाना?

'सर' श्रीराम ग़ौर करें !!

- आज सभ्यता की सीढ़ी पर मनुष्य और समाज ऊंचा उठता चला जा रहा है ऐसा विचार किया जाता है।
- इंसान को छोड़िए हकूमतें हैवानों या पशुओं पर बेरहमी को रोकने का इन्तज़ाम कर रही हैं।
- लेकिन देश सेवा की आड़ में तिजौरियां भरने वाले सर्मायेदार कारखानों में काम करने वाले मज़दूरों को इन पशुओं के बराबर भी दर्जा देने को तैयार नहीं।
- देश की राजधानी देहली के सब से बड़े उद्योगपति 'सर' श्रीराम के देहली क्लौथ मिल में मुनाफ़ों की बलिवेदी पर धड़ाधड़ इंसान कुर्बान किए जा रहे हैं।
- मुनाफ़ों की होड़ में एक मज़दूर से चार का काम लेकर खर्चे बचाने के लिए नई मशीनों में मार से बचने (यानी 'सेफ्टी') का इंतज़ाम न करके मशीनों की चाल हद दर्जे तक बढ़ाकर, चार्जशीट, और नौकरी से निकालने के नोटिसों से निरंकुश दमन करके- मज़दूर को आठ घंटे तक पानी पीने या लघुशंका तक के लिए छूट न देकर और उनपर हर तरह का नाजायज़ दबाव डालकर क्लौथ मिल मैनेजमेंट मजदूरों का निर्मम शोषण कर रहा है।
- चौबीस घंटोंमें २३-११-५९ और २४-११-५९ की सुबह के बीच चार इन्सान मालिकों के इस नरमेध यज्ञ में आहुती का काम कर चुके हैं मिल के बिजली विभाग के सर्वश्री करणसिंह, बुर्जीराम और राम सहाय बिजली की मोटरों से निकलती हुई धधकती ज्वाला से कोयला बनकर इर्विन हस्पताल पहुंच चुके हैं। कोयले की कन्वेयर बैल्ट पर काम करते करते स० कुन्दनसिंह का सारा दायां हाथ जड़ से उखड़ कर बैल्ट में रह गया. यह बहादुर देशभक्त मज़दूर भी इर्विन हस्पताल में जीवन और मौत के बीच लटक रहा है।
- हर रोज़ एक न एक दुर्घटना मुंह फाड़े मज़दूर को निगलने को तैयार है।
- सरकार का फ़ैक्टरी विभाग न जाने कहां सो रहा है। क्या वह नहीं जागेगा। जब तक मज़दूर के सब्र का प्याला छलकने न लगे।

बी. डी. जोशी

महामंत्री — कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन

गौशाला गेट- डबल फाटक रोड, किशनगंज- देहली

(कोह नूर प्रेस लाल कुंवां, दिल्ली)

१.

मिल कामगार यूनियन की १ली अप्रैल १९५८ से ३१ मार्च १९५९ तक की संगठनात्मक रिपोर्ट

मिल कामगार यूनियन और मज़दूर वर्ग की एकता

१९५० के अंत में यूनियन के लाल कार्यकर्ता जेल से छूट गये। इस वक्त यूनियन की हालत बिल्कुल छिन्न भिन्न थी। पिछले तीन वर्षों के दमन ने लाल झंडे के प्रति मज़दूरों में काफ़ी आतंक पैदा कर दिया था। जूने कार्यकर्ता भी इस आतंक के शिकार थे।

यूनियन का लाल कानूनी और आन्दोलन का काम काज ठप जैसा हो गया था। एक ही होल-टाइमर कॉ. राठोड़ थे जो दोनों वक्त यूनियन के आफिस को खुला रखते थे। अब यूनियन को पुनर्जीवित करने का काम मुख्य था।

जूने कार्यकर्ता मिलों में यूनियन का काम करने में घबराते थे। ऐसी परिस्थिति में काम करने का ऐसा तरीका ढूंढ़ निकालने की जरूरत थी जिसके अपनाने से यूनियन के तमाम कार्यकर्ताओं को क्रियाशील बनाया जा सके। इसी दौरान में मोनोग्राफ मिल के कार्यकर्ताओं की मीटिंग में मोनोग्राफ मिल के एक

कार्यकर्ता ने "स्वतंत्र" कमेटी बनाने का सुझाव
रखा। यहीं "स्वतंत्र" कमेटी के सुझाव में से
"संयुक्त कमेटी" का विचार पैदा हुआ। मिल कामा-
दार यूनियन ने संयुक्त कमिटियों का नारा दिया।
इस नारे का जोरदार स्वागत हुआ। कितने ही
मिलों में संयुक्त कमिटियां बनने लग गईं। अलग
अलग ख्याल के मजदूरों को नीचे से ठोस प्रश्नों
पर, ख्याल करके रेशनलाइजेशन और आटोमेटिक
सांचों के विरुद्ध चलाये गये आन्दोलनों में, एक
करने में इन संयुक्त कमिटियों ने महत्वपूर्ण
भूमिका अदा की है। इस ~~तथ्य~~ तथ्य से इंकार नहीं
किया जा सकता।

यह सब कमिटियां मिल कामदार यूनियन की
अगवानी में बनी। कानूनी कामकाज से लेकर आन्दोलन
चलाने तक सारी की सारी लाइन मिल कामदार यूनियन
ही देती थी।

आरंभ से ही इन कमिटियों का स्वरूप Rival
यूनियन जैसा था। उनका हिसाब किताब सब अलग
था। हर एक मिल की संयुक्त कमेटी का लवाजम
उठाने की बुक अलग थी। उनका अपना प्रमुख,
मंत्री, खजांची सब कुछ अलग था। यूनियन को वे
फी केस पीछे या तो मासिक एक निर्धारित रकम
देती थीं।

यहां पर संयुक्त कोमिटियों की शव-परीक्षा करने का स्थान नहीं है। भूतकाल में भी उनके बारे में कितने ही प्रश्न उठाये गये हैं और आज भी उठाये जा सकते हैं। जैसे कि :- संयुक्त कोमिटियों का स्वरूप सही था या नहीं? उनका संचालन मिल कामदार यूनियन द्वारा होता था, तो मिल कामदार यूनियन उनके संचालन में क्या गलतियां कीं? यहां नारा सही था या नहीं?

इन सब प्रश्नों की छान बीन करना आज निरर्थक है। यह सब कोमिटियां अब विसर्जित कर दी गई हैं और इनके अवशेष मिल कामदार यूनियन में मिला दिये गये हैं।

इन कोमिटियों के द्वारा बहुत से ठोस सवालों पर, खास करके औद्योगिक जांचों के विरोध में आन्दोलन खड़ा करने में मिल कामदार यूनियन ने अभूतपूर्व सफलता हासिल की है। इतना ही नहीं, परन्तु नीचे से मज़दूर वर्ग को इन ठोस प्रश्नों पर एक करने में मिल कामदार यूनियन ने सफलता हासिल की है। लाल, सारंगपुर मिल, और केलिको मिल के आन्दोलन इसके ज्वलंत प्रमाण हैं।

संयुक्त कोमिटियों द्वारा ठोस प्रश्नों पर आन्दोलन चलाने और नीचे से टेक्सटाइल मज़दूरों को एक करने के साथ साथ मिल कामदार यूनियन ने दूसरी मज़दूर संस्थाओं को — मज़दूर सभा (P.S.P. संचालित) मज़दूर मंडल (स्वतंत्र) — आदि को भी एक करने के निरंतर प्रयास किये हैं। परन्तु मज़दूर सभा और मज़दूर मंडल ने एक होकर आन्दोलन चलाने से

इंकार किया है।

केलिको मील का आन्दोलन बहुत ही शानदार रहा। भूख हड़ताली कामदारों की मांगों के समर्थन में जमालपुर वाडे के तमाम व्यापारियों ने भी एक दिन की हड़ताल की। अहमदाबाद के मज़दूर आन्दोलन में पहिली मर्तबा मज़दूरों की मांगो के समर्थन में व्यापारियों ने हड़ताल की। दस हजार के जुलूस और २० हजार की मीटिंगे इस आन्दोलन के दौरान में ही हुई।

इस आन्दोलन की मुख्य विशेषता यह थी कि अलग २ विचार के मज़दूरों ने — मज़दूर सभा, मज़दूर मंडल और कहीं कहीं पर महाजन में मानने वाले मज़दूरों ने भी — भूख हड़ताली मज़दूरों के समर्थन में 3.3 बजे और रात को बारा बजे जुलूस निकाले, फंड इकट्ठा किया और आन्दोलन को सफल बनाने में सम्पूर्ण सहयोग दिया।

विरोधी यूनियनों ने सिर्फ असहकार ही नहीं रखा। परन्तु कभी कभी इन आन्दोलनों का सक्रिय विरोध भी किया। सारंगपुर मील के आन्दोलन के वक्त मज़दूर मंडल ने विरोध में एक पत्रिका भी निकाली थी। केलिको मील में अधिभार के सांचों के प्रश्न पर जो १२ जून से हड़ताल होने वाली थी इसके विरोध में, मज़दूर मंडल के जनरल सेक्रेटरी श्री चन्द्रकान्त दरू ने अखबारों में निवेदन भी किया था।

सबसे ज्यादा इन आन्दोलनों का विरोध मज़दूर महाजन की तरफ़ से हुआ। उसने कितनी पत्रिकाएं बांटी। मिलकामदार यूनियन को जी भरकर गालियां दी और पूरी मशीनरी इन आन्दोलनों के विरोध में लगा दी।

सीकर भी खामोश न रही। कैलिको मिल और १२ जून की हड़ताल के वक्त हर मिल के फाटक पर पुलिस तैनात कर दी गई। मज़दूर इलाकों में पुलिस का कड़ा पहरा बैठा दिया गया। जमालपुर वाडे पुलिस कैंप जैसा लगता था। मुख्य हड़ताली मज़दूरों, मय मिल कामदार यूनियन के उपप्रमुख कॉ. अब्दुल रज़ाक शेख बाबन को गिरफ्तार कर लिया गया।

मिल कामदार यूनियन की आगेवानी में संयुक्त — कमिटियों द्वारा चलाये गये इन आन्दोलनों ने जूने सांचे उखाड़ कर आधुनिक सांचे दाखिल करने की मिल मालिक और मज़दूर महाजन की चाल को नाकामयाब किया, एक हद तक रेशनलाइज़ेशन पर रोक लगी। मिल कामदार यूनियन की इज़्ज़त भी बहुत ज्यादा बढ़ी।

परन्तु इन आन्दोलनों और कमिटियों के संचालन में गंभीर गलतियें भी हुई हैं। कमिटियों का Rival यूनियन का स्वरूप जारी रहा। कमिटियों के हिसाब का भी ठिकाना नहीं रहा। और कितनी ही कमिटियों का हिसाब आजतक मिल कामदार यूनियन को नहीं मिला। कमिटियों के कितने ही केसों के संचालन में, संगठन के बारे में यूनियन ने काफ़ी ध्यान नहीं दिया। इसकी वजह से काफ़ी असंतोष भी फैला। इन आन्दोलनों में सैकड़ों मज़दूर शामिल हुये परन्तु उन्हें संगठित नहीं किया जा सका। जमालपुर वाड, जहांपर व्यापारियों ने मज़दूरों की मांगों के समर्थन में हड़ताल की थी, आज वहां कुछ नहीं है। इन दिनों के दौरान में यूनियन की गलतियों, सफ़लताओं, असफ़लताओं के बावजूद जो गलतियां हुई वह यह कि संघर्ष के दौरान में वह संगठन बनाने में एकदम निष्फल रही।

परन्तु इन तमाम बातों के बावजूद यूनियन ने अपनी एकता की लाइन जारी रखी। उसने बराबर यह प्रयास किया कि विभिन्न मजदूर संगठन कॉमन सवालों पर एक होकर आन्दोलन चलायें। कानपुर का स्टैण्डर्डाइजेशन विरोधी हड़ताल के समर्थन में मिल कामगार यूनियन की एकता की कोशिश सफल रही। मिल कामगार यूनियन, मजदूर मंडल और दूसरी पार्टी यूनियनों ने मिल कर एक सभा पुराना आई टाउन में की। सभा का प्रमुख स्थान पर अड़कानी (सामान्य मंत्री, मजदूर मंडल) बोलने वाले थे। परन्तु वे नहीं आ सके। लगभग १८ यूनियनों ने इस मीटिंग में हिस्सा लिया। सभा कामयाब रही। एक कामगार फंड भेजने के लिये बनाये थे। परन्तु यह कुछ भी काम न कर सका। मिल कामगार यूनियन ने काफी फंड कानपुर भेजा। कानपुर के लिये फंड इकट्ठा करने में अरविन्द मिल के प्रमुख कार्यकर्ता मेरोलाल और अम्बिका नं २ के प्रमुख कार्यकर्ता डी. कालजी भाई को मील से निकाल दिया गया।

मार्च १९५८ में तमाम यूनियनों को एक होकर आन्दोलन चलाने की निगाह से एकता सप्ताह मनाया गया। ८ मार्च १९५८ को एक जुलूस निकाला गया और मीटिंग की गई।

२८ जुलाई १९५८ में २५% परेल मजदूरों में इजाफा किये जाने के बारे में मिल कामगार यूनियन ने आन्दोलन चलाया। मिलों के फाटक पर मीटिंग की गई। २५ हजार दस्तखत इकट्ठा करके किये गये। जुलूस निकाला गया और मीटिंग भी कांग्रेस हाउस के सामने की गई। मीटिंग और जुलूस दोनों कामयाब रहे।

८.

इस प्रश्न पर भी तमाम यूनियनों को एक होने की दावत दी गई थी। इस वक्त मज़दूर महाजन संघ को मीटिंग में शामिल होने की दावत दी गई थी। एक पत्रिका भी निकाली गई। मज़दूर महाजन संघ के मंत्री श्री सोमनाथ दवे ने अखबारों में एक बयान प्रकाशित कर बताया कि वे महाजन को छोड़कर किसी दूसरे की सभा में नहीं जाते। दूसरी यूनियन के नेताओं ने कोई जवाब नहीं दिया।

दूसरी एक २७ यूनियनों की संयुक्त मीटिंग P&T के मज़दूरों की मांगों के समर्थन में, और ८ अगस्त १९५८ को से होनेवाली हड़ताल को कुचलने के लिये केंद्रीय सरकार ने पार्लामेंट में जो Imergency Bill पेश किया था, के विरोध में हुई। इसमें मज़दूर मंडल और मिलकामदार यूनियन तथा दूसरी यूनियनें शामिल हुई। P.S.P. संचालित मज़दूर सभा इसमें भी शामिल नहीं हुई। मीटिंग में जनता परिषद के प्रमुख और पार्लामेंट के सभ्य श्री इन्दुलाल याज्ञिक भी बोले।

इस प्रकार से मिलकामदार यूनियन १९५१ से लेकर आज तक अहमदाबाद के टेक्सटाइल मज़दूरों, और उनमें काम करने वाली विभिन्न यूनियनों की एकता की अविराम गति से निरंतर कोशिश करती रही है।

— X —

टेक्सटाइल उद्योग के मज़दूरों में काम करने वाले विभिन्न संगठन.

अहमदाबाद के सूती वस्त्र उद्योग में निम्न लिखित विभिन्न विचार धाराओं का प्रतिनिधित्व करने वाली यूनियनें काम करती हैं :-

मज़दूर महाजन (INTUC), मज़दूर सभा (Hind Mazdoor Sabha) मज़दूर मंडल (स्वतंत्र), मज़दूर संघ (लोहिया ग्रुप), मजूर पंचायत ([illegible]) और मिल कामदार यूनियन (A.I.T.U.C.)

अहमदाबाद में मिल कामदार यूनियन को इन यूनियनों में से महाजन को छोड़ कर बाकी की दूसरी यूनियनों को, सूती वस्त्र उद्योग के मज़दूरों के सवालों पर, एक करके आन्दोलन चलाना है।

<u>मज़दूर महाजन</u> के साथ आज की हालत में अहमदाबाद में किसी भी सूरत पर एक हो कर चलने का सवाल ही नहीं पैदा होता है। क्योंकि वह बहुत ही मज़बूत है। अहमदाबाद में इसकी ४० वर्ष पुरानी नींव है। वह नींव यहां के स्थानिक मज़दूरों में खास करके हरिजन और बाहरी मज़दूरों में बहुत ही गहरी है। इसलिये मज़दूर महाजन हमारी बात नहीं सुनने वाली है।

<u>मज़दूर सभा</u> की स्थानिक लीडरशिप की नीति एकदम एकता विरोधी है। भूतकाल में उनके साथ विशिष्ट प्रश्नों पर होकर आन्दोलन चलाने में निष्फलता मिली है। परन्तु आज जो देशव्यापी परिवर्तन हो रहे हैं, और जून १९५७ की H.M.S की कार्यकारिणी के प्रस्ताव तथा २८ मार्च १९५८ को मज़दूरों की मांगों पर देशव्यापी संयुक्त प्रदर्शन आदि को देखते हुए मज़दूर सभा के साथ एक होकर आन्दोलन

चलाने की संभावना को एकदम इंकार नहीं किया जा सकता है। यह सच है कि यहाँ की लीडरशिप आंदोलनों से प्रभाव नहीं देगी। और जनता की शोषण एकता की किसी भी हलचाल का विरोध करेगी। परन्तु यदि सही तरीके अख्तियार किये जाय और मजदूर सभा के निचले कार्यकर्ताओं से सम्पर्क स्थापित किया जाय और उन्हें एकता के महत्व को समझाया जाय तो निश्चित है कि हम मजदूर सभा की लीडरशिप को आगे बढ़ा उसकी एकता विरोधी लाइन से मुकाबला कर सकते हैं।

मजदूर मंडल के स्वरूप को हम सब अच्छी तरह से जानते हैं। उसके पास कोई विचार धारा नहीं है। वह वकीलों की पार्टी है।

आज की हालत में मजदूर मंडल के साथ मिलकर आन्दोलन चलाने की संभावना और यूनियनों के मुकाबले में ज्यादा है और यह हम १८ जनवरी के जुलूस और सभा से देख सकते हैं। यह एक बड़ी आशा का चिन्ह है। हमें उसका सही मूल्यांकन करना चाहिए और इस एकता का विकास कैसे हो इसके लिये सही लाइन अख्तियार करनी चाहिए।

मेम्बरशिप की निगाह से मजदूर मंडल महाजन के बाद दूसरे नंबर की यूनियन है। इसका टेकनीकल काम अन्य यूनियनों के मुकाबले में ज्यादा व्यवस्थित है। एक साल पहले इसका आधार बहुत व्यापक हो गया था। परन्तु इसकी मेम्बरशिप और आधार अब धीरे धीरे घटता जा रहा है। उसके अंदर आपसी झगड़ों, गुटबाजी, स्वार्थपरायणता की वजह से फूट पड़ गई है। ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ इसकी वजह से मजदूरों का एक असरदार ग्रुप मंडल में से निकल कर मिल कामदार यूनियन में शामिल हो गया है।

कई कामरेडों का कहना है कि मजदूर मंडल ने संयुक्त जुलूस और संयुक्त मीटिंग के बारे में (१८ जनवरी पर) इस—

वह मंडल को जान कि उसकी ताकत बढ़ रही थी और उसने
नेताओं के खिलाफ आलोचनात्मक पत्रिकाएँ निकली हैं। एक तरह
यह बात सच है परन्तु हमें १९ जनवरी के जुलूस और मोर्चे को
केवल निगाह से देखना चाहिए? हमारी निगाह सिर्फ मंडल के
नेताओं तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। परन्तु इसके पीछे
जो मजदूर हैं और वे क्या चाहते हैं, इस पर हमें अपना ध्यान
केन्द्रित करना चाहिए। १९ जनवरी के जुलूस और मोर्चे में
दोनों संगठनों के मजदूरों को एक दूसरे के नजदीक आने
और समझने का मौका मिला है। इससे एक सुन्दर वातावरण
में निर्माण होगा। हमारी कोशिश जारी रहनी चाहिए
कि मंडल के मजदूरों में जो प्रमुख प्रतिनिधि हैं, उनसे हमारा
सम्पर्क और भाईचारा कायम हो तथा बढ़ जाये। अपने
आपसे हमें मंडल की टीका करने का टाल नहीं करना चाहिए।
हमारी टीका का उद्देश्य सिर्फ टीका के लिए न हो परन्तु समझने
और समझाने के लिये हो। आलोचना रचनात्मक होने से सही नीति
अख्तियार किये तो १९ जनवरी जैसे अनोखे मौके
में भी पैदा कर सकेंगे।

~~[illegible]~~ मजदूर संघ (लोहिया ग्रुप) का असर उत्तर
प्रदेश के पूर्वी जिले के लोगों में थोड़ा बहुत है। यों तो उनकी
लाइन डॉक्टर लोहिया की रहती नहीं की लाइन है। परन्तु
१९ जनवरी के जुलूस और मोर्चा में दिखाई भी देती कत
को भी। इससे आशा है काफी दिखाई पड़ते हैं।
मजदूर पंचायत शक्ति रही नेतृत्व नहीं है। उसका
कुछ भी असर नहीं है। [illegible] इसमें चलते हैं। मजदूरों
में इसका कोई काम नहीं है।

१२. एक बुनियादी मुद्दा बाकी रह गया। १६ जनवरी को जो संयुक्त जुलूस निकला और मीटिंग हुई इसका मूल कारण मजदूर मंडल का प्रतिरोध मंडल है। उसने पहल की और लीडरशिप को संयुक्त होने के लिये बाध्य किया। इस प्रकार हम देखते हैं कि अहमदाबाद में टेक्सटाइल मजदूरों की एकता का प्रश्न नीचे से -- सामान्य कार्यकर्ताओं और मज़दूरों की पहल पर आधारित है। आज की स्थिति में यह नितान्त आवश्यक बन गया है।

इसके लिये हमें मुख्यरूप से दो कार्य करने होंगे:—

१. तमाम यूनियनों के कार्यकर्ताओं से हमारा सम्पर्क बढ़ाना। उनके साथ भाईचारा कायम करना। उनकी लीडरशिप की एकता विरोधी नीति की इस प्रकार टीका करना कि उन्हें समझ में आ सके। टीका करते वक्त और व्यक्तिगत शब्दों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। टीका मित्रतापूर्ण हो। मीटिंगों और भाषणों में भी हमें यही तरीका अख्तियार करना चाहिए कि वे ठोस प्रश्नों पर अपने नेताओं को एकता के लिये मजबूर कर सकें।

२. विभिन्न मिलों में इन संगठनों के कार्यकर्ता काम करते हैं। वहां हमारे कार्यकर्ता भी काम करते हैं। इन मिलों के अनेक छोटे बड़े प्रश्न हैं। इन प्रश्नों पर एक होकर काम करने की काफी गुंजाइश है। अगर तमाम संगठनों या किसी एक संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर हम एक पत्रिका निकाल सकते हैं, एक संयुक्त गेट मीटिंग कर सकते हैं, या तो कैंटीन या कोऑपरेटिव सोसायटी के चुनावों में संयुक्त हो सकते हैं, तो हमें इन अवसरों को हाथ से जाने नहीं देना चाहिए।

अगर हम ऊपर बताई गई दोनों बातों पर ध्यान दें और उन्हें अमल में लायें तो जो संभावनाएं हमारे सामने

है उनको मूर्तरूप दिया जा सकता है।

मज़दूर महाजन की नीति का हमें अच्छी तरह पर्दाफाश करना होगा। परन्तु मज़दूर महाजन के जो ईमानदार प्रतिनिधि हों उनके साथ सम्पर्क बढ़ा कर, इन्हें शिक्षित कर, महाजन के नेताओं की मज़दूर वर्ग विरोधी नीति को रोकना चाहिए।

जिला कमिटी/यूनियन

हमारी जिला कमिटी यूनियन की हालत क्या है?

आज जिला कमिटी यूनियन की हालत चिन्ताजनक है। ३५००) का कर्ज सिर के ऊपर है। होलटाइमरों का पूरा वेतन नहीं दिया जाता। आफिस का भाड़ा रुक जाता है। मकान मालिक हमेशा नोटिस की धमकी देता है। वकील को मेहनताना समय पर नहीं दिया जाता। प्रचार कार्य बिल्कुल ठप है। टेकनीकल व्यवस्था नहीं जैसी है। और इन तमाम बातों के अलावा लीडरशिप और रैंक-एण्ड-फाइल में निराशा और उदासीनता है। जो थोड़ा बहुत कामकाज चल रहा है, वह यंत्रवत है, उत्साह और आशा का उसमें नामोनिशान नहीं है।

क्यों? इस क्यों का जवाब देना बहुत ही मुश्किल है।

अहमदाबाद की हालत निराली है। यह गांधीवाद का गढ़ है। वर्षों से यहां पर मज़दूर महाजन काम कर रहा है। उसको काफी प्रतिष्ठा जुटी हो मिली है। उसके पास व्यवस्थित टेकनीकल और संगठनात्मक स्टाफ

१३. है। स्कूल, व्यायामशालाओं, हॉस्टेल, बैंक आदि के
जरिये उसने अपनी जड़ें बहुत गहरी कर ली है। गृह
मकानों की सहकारी सोसायटियां चलाती है। जाति
के पंचों पर उसका असर है। मिलों में चंदा उगाहने का
उसे अधिकार प्राप्त है। मिलों में अधिकारी उसके ही
प्रतिनिधियों की बातें सुनते हैं। वह प्रतिनिधि यूनियन
है। Bargaining Power उसके हाथ में है। उसने अहमदाबाद के
मज़दूरों में जबरदस्त वैधानिकता का भ्रम फैला रखा है। हमेशा
ही उसने अहमदाबाद के मज़दूरों को आन्दोलन से दूर रखने की
चेष्टा की है।

यह तस्वीर का एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है
कि महाजन के प्रति मज़दूरों में अविश्वास पैदा होता
जा रहा है। उसकी समग्र कार्यपद्धति, मज़दूर विरोधी
करार, काम की हालत, रेशनलाइज़ेशन आदि बातों
ने मज़दूरों में उसके प्रति व्यापक असंतोष फैला दिया
है। महागुजरात के आन्दोलन ने उसके दुर्जय किले
की दीवारों को बुरी तरह से झकझोर दिया है। खंडु भाई
देसाई की आम चुनाव में हार और वसावड़ा साहब
का बाल बाल बच जाना इस बात का ज्वलंत प्रमाण
है। इतना ही नहीं। लगभग २५ मिलों में मिल कामदार
यूनियन के चुने हुए प्रतिनिधि कैंटीन और क्रेडिट
सोसायटियों (तथा प्राविडेंट फंड ट्रस्टी बोर्ड) में हैं। ~~[illegible]~~ इससे साफ़
ज़ाहिर होता है कि मिल कामदार यूनियन की प्रतिष्ठा
मज़दूरों में व्यापक प्रमाण है। अगर आज तमाम कार्यकर्ताओं
को सक्रिय बनाया जा सके तो काम करने की जो संभावनाएं
आज हैं वे पिछले कभी भी नहीं थीं। यूनियन की मेम्बरशिप
बढ़ाई जा सकती है और मज़दूरों के बुनियादी

सवालों पर व्यापक आन्दोलन खड़ा किया जा सकता है।

१-४-५७ से ३१-३-५८ तक के यूनियन के

कार्य

कानूनी काम काज के अलावा यूनियन ने अलग अलग मीलों में उठते हुए रोजमर्रा के प्रश्नों को भी हाथ में लिया। किसी मिल में सूत की खराबी का प्रश्न था या तो इसी किस्म का कोई दूसरा सवाल। ऐसे सवालों पर यूनियन ने पत्रिकायें निकाली, गेट मीटिंगें कीं। इसमें आंशिक सफलतायें मिली।

बोनस

१९५७ का जो बोनस का समझौता मजदूर महाजन ने मिल मालिकों के साथ किया उसकी वजह से मजदूरों ~~के व्यापक असंतोष~~ बड़े हिस्से में व्यापक असंतोष फैल गया। इसकी वजह से १५, १७, १८ अक्टूबर को न्यु गुजरात कॉटन, मोनोग्राम, मार्सडेन, सिल्वर तथा मालाकिया मीलों में हड़ताल हो गई।

१९५७ का बोनस, २१ मीलों को ३ महीने का, २४ मीलों का ७५ दिन का और बाकी की मीलों का ३८ दिन से ५५ दिन तक का मिला। इसलिये बोनस के समझौते के खिलाफ जो असंतोष पैदा हुआ वह भी सीमित डिग्री का था। यही वजह है कि जबसे बोनस का पंचवर्षीय करार हुआ तब से इस प्रश्न पर बड़ा आन्दोलन नहीं खड़ा हो सका। परन्तु यह हड़ताल, पिछले चार वर्षों से बोनस के प्रश्न पर जो कदर हो रहे थे,

इसके खिलाफ़ मज़दूरों में पैदा होने वाले असंतोष का खुला प्रदर्शन था।

हालांकि यह प्रश्न ५ मीलों की स्वयंस्फूर्त हड़ताल से सुलझने वाला नहीं था। इसके लिये अहमदाबाद के कपड़ा उद्योग में काम करने वाले तमाम मज़दूरों को संगठित करने और आन्दोलन चलाने का प्रश्न था। यूनियन को ज्यों ही हड़ताल की खबर पड़ी फौरन ओहदेदारों की मीटिंग बुलाकर पूरी हालत की चर्चा करने के बाद यह निर्णय लिया गया कि इस सवाल पर इन पांच मीलों की हड़ताल से काम नहीं चल सकता। पूरे ६५ मीलों को जिनमें १५ दिन का बोनस दिया गया है, संगठित करके आन्दोलन चलाना चाहिए। इसके लिये एक पत्रिका फौरन निकाली गई। पत्रिका का असर भी अच्छा पड़ा।

फौरन ही इन मीलों से सम्पर्क स्थापित किया गया। न्यु गुजरात कॉटन मील में हड़ताल भी बन गई। परन्तु दूसरी मीलों में ऐसा नहीं किया जा सका। मानो ग्राम मील में जहां हमारा काम और असर भी है वहां मज़दूर कंपनी के एजेंटों के भड़काने में आकर किसी भी प्रकार के संगठन के लिये तैयार नहीं हुए। इधर लेबर कोर्ट ने हड़ताल को गैर कानूनी जाहिर कर दिया। दो दिन में हड़ताल खत्म हो गई और कोई बड़ा आन्दोलन खड़ा नहीं किया जा सका।

इस हड़ताल में यूनियन ने जो सही लाइन अख्तियार की और मज़दूरों से सम्पर्क स्थापित किया उसकी वजह से यूनियन की इज्जत बढ़ी।

हड़ताल ने हड़ताल का विरोध किया। मज़दूर मंडल के मंत्री श्री चन्द्रकान्त रहे — न्यु गुजरात कॉटन मिल के मंडल के प्रतिनिधियों को कहा पहिले हड़ताल खत्म कर दो बाद में कुछ बात करना। मज़दूर सभा लगातार लोगों का ख्याल दूर ही रही।

न्यु गुजरात कॉटन और दीपक मिलों की तीसरी पालियों का बंद होना.

न्यु गुजरात कॉटन और दीपक मिल की तीसरी पाली के बंद होने का नोटिस दिसम्बर के अंत में लगा। यूनियन ने इसके खिलाफ़ आन्दोलन चलाने का निम्नलिखित फैसला किया :-

1. अखबारों में निवेदन करना,
2. मिलों के झांपो पर मीटिंग,
3. हेंडबिल निकालना,
4. मज़दूरों के दस्तख़त लेकर मज़दूर प्रधान बम्बई और दिल्ली को अर्जी करना,
5. जुलूस निकाल कर कलक्टर को मिलना।

दोनों मिलों की तीसरी पाली के मज़दूरों के दस्तख़त लेकर बम्बई और दिल्ली के मज़दूर प्रधानों को मेमोरेन्डम भेजा गया। बम्बई के मज़दूर प्रधान ने जवाब देने की तकलीफ़ ही नहीं उठाई जबकि दिल्ली से जवाब मिला कि सरकार इसमें मामले में कुछ नहीं कर सकती है। दो जुलूस निकाले गये।

एक डैपुटेशन कोशकल में कलेक्टर को मिला। कलेक्टर ने
१५. सरकार को लिखने का आश्वासन दिया। दूसरा एक हफ्ते के बाद निकाला गया। शाहपुर में मीटिंग हुई। मीटिंग की सदारत शाहपुर वार्ड के म्युनिसीपल कारपोरेटर श्री मुन्शीजी ने की। सभा में दो दूसरे म्युनिसीपल कारपोरेटर श्री वासुदेव त्रिपाठी तथा श्री भानुपाल कोवाला बोले। सभा में तीसरी पाली को चालू करने की मांग की गई।

भरतखंड टेक्सटाइल

भरतखंड टेक्सटाइल में लम्बे अर्से से महंगाई भत्ता १० तारीख को नहीं दिया जाता था। मजदूर महाजन इसके लिये कुछ भी करने को तैयार नहीं थी। इस मिल में मजदूर मंडल का भी काफी असर था। परन्तु इस यूनियन पर उसने भी कुछ नहीं किया। अंत में परेशान होकर मजदूरों ने ११-११-५४ को हड़ताल कर दी। महाजन ने हड़ताल तोड़ने की कोशिश की परन्तु कामयाबी नहीं मिली। मंडल के प्रतिनिधि टेल साहब के पास गये। परन्तु उन्होंने कहा कि पहले हड़ताल खत्म कर दो फिर मेरे पास आओ।

इस हड़ताल को यूनियन के प्रमुख कार्यकर्ता श्री शंकरजी और हमदूम साथी किशनलाल ने यूनियन के आदेश के मुताबिक चलाया। कुछ मजदूरों के साथ श्री शंकरजी भूखहड़ताल पर बैठ गये। कंपनी ने भी शंकरजी को बातचीत करने के लिये बुलाया। अंत में कंपनी ने नोटिस लगाया:-

१. पिछले महीने का महंगाई भत्ता फौरन दे दिया जायगा,

२. आगामी महीने से १० तारीख तक महंगाई भत्ता

दे दिया जायगा।

3. हड़ताल में भाग लेने वाले किसी भी मज़दूर के खिलाफ़ कोई एक्शन नहीं लिया जायगा। 38

10 वर्षों से उत्तरखंड टेक्सटाइल मिल के मज़दूरों को समय से महगाई भत्ता नहीं मिल रहा था। अन्त में मज़दूरों की एकता और दृढ़ता ने उन्हें नियत समय पर महगाई भत्ता दिलाया।

इसके सिवा अलग मिलों में उठने वाले सवालों को मिल कमेटी यूनियन ने हल किये। परन्तु कोई डेढ़ वर्ष उल्लेखनीय आन्दोलन नहीं चला।

यूनियन की संगठनात्मक हालत

यूनियन की संगठनात्मक हालत बहुत ही कमज़ोर है। यूनियन के तमाम पुराने कार्यकर्ता ख़त्म जैसे हो गये हैं। उनमें कितने शक्तिशाली साथी भी हैं। इनकी निष्क्रियता नये आने वाले कार्यकर्ताओं पर भी बुरा असर डालती है। नये साथी कुछ दिन तक बड़े उत्साह से काम करते हैं। फिर पुराने कार्यकर्ताओं की निष्क्रियता उन पर भी असर डालने लगती है।

यूनियन का जो चंदा आ रहा है वह ज्यादातर नई मिलों जो थोड़ा बहुत काम शुरू हुआ है, उसकी वजह से है। और जहां पर ज्यादातर नये कार्यकर्ता हैं। पुरानी मिलों जहां हमारा काम काफ़ी पुराना है चंदा या तो बंद हो गया है या तो लगभग बंदी होने के करीब आ चुका है। हालांकि इन मिलों में हमारे पुराने साथी अभी भी मिलों में

१६ कितने ही सवालों को हल करते, मिल में मजदूरों की उनकी आस्था भी है, परन्तु कितने बार ऐसे मिलमजदूर काम करने के बाद भी संगठन में आने और चंदा उगाने की तरफ ध्यान नहीं देते।

इसका कुछ कारण तो पिछले दिनों यूनियन के द्वारा इन मिलों के सवालों को हल करने में जो गलतियां हुई हैं, वह है। दूसरा कारण यह है कि जो कानूनी काम होता है, या हो सकता है, उससे ज्यादा अपेक्षा रखी गई है। दोनों ही कारणों की वजह से दुराव आया है। इसमें यूनियन की मुख्य गलती यह है कि इसने कार्यकर्ताओं की शिक्षा का समुचित प्रबंध नहीं किया। वह हालत फौरन भी चालू है। जल्दी ही उसे दूर करना चाहिए।

चंदा बढ़ाने के लिये निम्नलिखित काम फौरन ही किये जाने चाहिए:—

१. मिलों के अंदर उठने वाले रोजमर्रा के प्रश्नों को मिलों में ही हल किया जाना,

२. ~~आआश्र~~ आफिस से ~~स~~ मिलों के रोज-ब-रोज के प्रश्नों को हल करना,

3. प्रचार.

१. मिलों के अंदर आज की हालत में काफी काम किया जा सकता है। यह सच है कि जहां तक महाजन के प्रतिनिधि की बात अधिकारी सुनेंगे, वहां हमारे प्रतिनिधि की बात नहीं सुनी जायगी। परन्तु अब पुरानी परिस्थिति नहीं रही है। कितनी ही मिलों के अंदर हमारे बहुत से कार्यकर्ता

कितने ही सवालों को कुशलतापूर्वक हल करते हैं। परन्तु यह कार्य, मील में काम करने वाले कार्यकर्ता की पहल, उसका अधिकारियों से सम्बंध, मजदूरों पर असर और प्रश्न को हल करने के तरीके से सम्बंधित है।

2. आफिस द्वारा कार्य आज भी होता है। परन्तु इस कार्य की रफ्तार को ज्यादा तेज करने की जरूरत है। मीलों में जाकर इन्क्वायरी, कानूनी काम आदि जितनी जल्दी हो सके निपटाने की कोशिश करना।

3. मीलों में रोजाना उठते हुए सवालों पर हैंडबिल, गेट मीटिंग, जुलूस आदि का आयोजन।

अगर हम ऊपर बताये गये कामों को हम कर सकें तो इसमें सन्देह नहीं कि हमारी यूनियन की मेम्बरशिप, संगठन, तीन गुनी बढ़ सकती है। वास्तविक हालत मौजूद है। संगठन और यूनियन के असर के दरम्यान जो खाई है उसे जल्दी ही दूर करना चाहिए। तमाम कार्यकर्ताओं को सक्रिय किया जाना चाहिए। काम करने के रास्ते में क्या मुसीबतें आती हैं, उनका बारीकी से अभ्यास करके उन्हें दूर किया जाना चाहिए।

मील कमेटी

अभी मील कमेटी बनने जैसी स्थिति नहीं पैदा हुई है। ज्यादातर हमारा काम खाताखाते में है। धीरे धीरे दूसरे खातों में हमारा काम बढ़ रहा है। परन्तु तुलनात्मक दृष्टि से वह नहीं जैसा है।

एक मील में जितने भी हमारे कार्यकर्ता काम करते

22.

उन सबका संगठन बनाना आवश्यक है। कितनी मीलों में खातेखाते में हमारे खातावार प्रतिनिधि हैं। हर प्रतिनिधि भी है। अक्सर उनकी मीटिंग उनके मील के प्रश्नों पर होती रहती है। इसकी वजह से प्रतिनिधि उनके प्रश्नों को समझती है और उन्हें हल करने की कोशिश करती है। परन्तु कितनी ही मीलों खातावार प्रतिनिधि नहीं हैं। परन्तु इक्के दुक्के कार्यकर्ता हैं जिनके जरिये यूनियन का कार्य ~~करके~~ होता है। ऐसी मीलों में जहां तक हो सके खातावार प्रतिनिधि खड़े करने चाहिये। इससे यूनियन का बल भी बढ़ेगा और काम भी अच्छा होगा।

कई मीलों में हमारे कामरेड काम करते हैं परन्तु न तो उनका पता लगता है और न तो उन मीलों में काम ही कुछ होता है। पिछले दिनों इस हालत को खतम करने की कोशिश की गई परन्तु इसमें सफलता नहीं मिली। इन मीलों के कामरेडों से मिलकर फिर से कोशिश की जानी चाहिये और इस हालत को जल्दी ही खतम किया जाना चाहिये।

वार्ड कमेटियां

मिल कामदार यूनियन का काम सिर्फ मीलों में काम करने के आधार पर नहीं चल सकता। इसको मजबूत ~~कम~~ वार्ड कमेटियां और जहां कहीं भी संभव हो चाल ग्रुप या चाल कमेटियां बनाकर काम होना चाहिये। अभी वार्ड कमेटियों का काम लगभग ठप जैसा है। जो जिन्दा वार्ड कमेटियां मानी जाती हैं जैसे नरोडा

चान्दपुर, सरसपुर, मनीनगर, उनका भी कुछ काम नहीं चलता है। वर्किंग कमिटी की मीटिंग साल में सिर्फ एकही बार मिलती है। जबकि यूनियन की ~~मीट~~ मिनीटिंग के लिये नामों का सुझाव करना होता है और वर्किंग सेक्रेटरी चुनना होता है और ये वर्किंग सेक्रेटरी फिर कभी भी मीटिंग नहीं बुलाते। अगर कोई बड़ा सवाल आ जाय और वर्किंग की मीटिंग बुलाने के लिये उन्हें कहा जाय तोभी वर्किंग की मीटिंग मिलेगी नहीं तो नहीं।

सच बात यह है कि जब से मीलों में लवाजम उगाना शुरू हुआ है तब से वर्किंग कमिटियों का संगठन एकदम ढीला पड़ गया है। उसे फिर से मजबूत तथा पुनर्जीवित किया जाना चाहिये। जबतक इनका संगठन बराबर नहीं होगा यूनियन का काम भी बराबर नहीं चलेगा। वर्किंग कमिटियों द्वारा निम्नलिखित कार्य किये जाने चाहिये:-

1. मजदूरों के अहम सवालों पर चाल मीटिंग, गेट मीटिंग, प्रचार कार्य आदि।
2. चालों की सफाई, म्युनिसिपल कार्य आदि।
3. लवाजम उगाना, यूनियन के लिये फंड आदि.

जनरल कौंसिल

लगभग तीन वर्षों से यूनियन की जनरल कौंसिल बनाई गई है। इसके सदस्य वे

23. वे लोग होते हैं जो कमसे कम पांच मजदूरों का लवाजम उठाते हैं।

इसका काम यूनियन के लिये नीति तय करना तथा और महत्वपूर्ण सवालों पी आन्दोलन चलाना है। हर तीन महीने में यूनियन के कार्य की रिपोर्ट इस जनरल काउंसिल में रखी जाती है। जनरल काउंसिल में हर वर्ष यूनियन की मेनेजिंग कमेटी और ओहदेदारों का ~~बु~~ चुनाव होता है।

अभी तक जनरल काउंसिल के फंक्शनिंग में पूरी सफलता नहीं मिली है। हालांकि उसकी हर तीन महीने में मीटिंग भी होती है और उसके सामने त्रैमासिक रिपोर्ट भी रखी जाती है फिर भी जो उसके बनाने का उद्देश्य है वह अभी तक पूरा नहीं हुआ है। सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि जो बिरादरी जनरल काउंसिल के सभ्य हैं वे उसकी मीटिंगों में ज्यादातर गैरहाजिर रहते हैं। इसलिये फैसले लेने और अमल करने में बड़ी दिक्कत होती है। इसके लिये एक प्रयोग और किया गया। यूनियन के साधारण सभ्य जो सूझ बूझ रखते हैं अक्सर उन्हें भी ऐसी मीटिंग में आमंत्रित किया जाता रहा है। परिणाम यह हुआ कि आमंत्रित बिरादरों की संख्या ~~की~~ जनरल काउंसिल के सभ्यों से ज्यादा ~~हो गई~~ रही।

अगले वर्ष जनरल काउंसिल के संगठन को ज्यादा ठोस रूप दिया जाना चाहिए। उसके सदस्यों को मीटिंगों में हाजिर रहने की सख्त ताकीद की जानी चाहिए। अगर जनरल काउंसिल की मीटिंगों में कुछ

उसके साथ हाजिर रहेंगे तो ही यूनियन के लिये नीति तय करते हैं, फैसले लेते हैं और फैसलों पर अमल करने में आसानी होगी। यूनियन का कार्य भी सुचारु रूप से चलेगा।

मैनेजिंग कमेटी

मैनेजिंग कमेटी यह जनरल काउंसिल के बाद सबसे बड़ा संगठन है। इसमें यूनियन की नीति तय करते हैं, कपड़ा मज़दूरों का संगठन बनाने में तथा, उनकी मांगों के लिये आंदोलन चलाने में बड़ा योग देता है। इसे अहमदाबाद के एक लाख बीस हजार कपड़ा मज़दूरों की अगवानी करनी है।

चूंकि हमारी मैनेजिंग कमेटी का संगठन बहुत ही कमजोर है। इसमें कितने ही बिरादर ऐसे हैं जो कि दूसरे मज़दूरों का लवाजम उगाना तो दूर रहा, नियमित रूप से खुद का लवाजम भी नहीं देते। ऐसे बिरादरों को कई बक्त ताकीद करते हैं बाद भी खुद का लवाजम नहीं भरते हैं। कई बिरादर ऐसे भी हैं जो ज्यादातर मीटिंगों में हाजिरी भी नहीं देते हैं।

अक्सर ऐसे बिरादरों के नामों का सुझाव बड़े कोठारियों की तरफ से आता है। आशा लगाई जाती है कि जिनके नामों का सुझाव किया जा रहा है वे

नियमित काम करेंगे। परन्तु ऐसा नहीं होता। मैनेजिंग
२५. कमेटी मीटिंग्स के सिवा उनका कोई अलग यूनियन से
आफिस से नाता होता। कई सेक्रेटरी ऐसे हैं जो कि जनरल
काउंसिल, या तो सभा सोसाइटी में भी भाग नहीं लेते।

इसलिये इस वर्ष के लिये जिन सेक्रेटरी का नाम मैनेजिंग के लिये पेश किया जाय उनके बारे में निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखा जाय :-

1. खुद का लवाजम देते हैं या नहीं,
2. दूसरे मजदूरों का लवाजम उगाते हैं या नहीं,
3. यूनियन के कामकाज जैसे कि सभाओं, जुलूसों आदि में भाग लेते हैं या नहीं
4. वार्डों के समाचार में दिलचस्पी लेते हैं या नहीं।

अगर ऊपर बताई गई शर्तों का पालन जिन सेक्रेटरियों ने पिछले वर्ष न किया हो तो इस साल मैनेजिंग कमेटी में नहीं चुनना चाहिये. चाहे वे कितने ही [illegible] क्यों पुराने और आफिसरी क्यों न हों। एक बात बिल्कुल साफ है कि जबतक यूनियन की एक मजबूत और [illegible] कार्यकारिणी नहीं होगी तब तक यूनियन का काम नहीं चल सकता।

आज यूनियन के सामने [illegible] हो गये हैं पार्ट टाइम सेक्रेटरियों जिन्हें यूनियन के ओहदों पर चुना जाता है, वे भी मीटिंगों के सिवा कभी यूनियन के आफिस पर नहीं आते और न वार्डों में ही संगठन के काम में रस लेते हैं। इसलिये चाहिये कि चुनाव में भी सतर्कता का

इस्तेमाल करना चाहिए। अगर ये ओवरसियर यूनियन के संगठन के कार्य नहीं करते तो यूनियन को संगठित होना करेगा।

तीन चार होलटाइमरों से ये अपेक्षा करना कि वे होलटाइमरों के कामों को भी करेंगे, यूनियन के संगठन के कार्य कर भी लेंगे और आन्दोलन भी चलायेंगे, तो कोई भी काम ढंग से नहीं हो सकेगा। परिणाम में आपसी झगड़े, अविश्वास और निराशा कुंठा में ~~[illegible]~~ वातावरण रहेगा।

दूसरे होलटाइमरों को वेतन की भी व्यवस्था होनी चाहिए। आज जो वेतन होलटाइमरों को दिया जाता है वह एकदम ही कम है और वह भी नियमित नहीं दिया जाता है। परिणाम में होलटाइमरों के ऊपर काफी कर्ज चढ़ गया है। ~~[illegible]~~

क्योंकि हालत की खराबी की वजह से हमारा प्रचार और टेकनीकल तंत्र बहुत ही कमजोर है। इसके लिये हमें निम्नलिखित कार्य करने चाहिए

१. पोस्टर प्रचार

२. चालियों में ग्रुप बनाकर जाना, सभा, जुलूस, पोस्टर आदि द्वारा प्रचार

३. यूनियन की मेम्बरशिप ५००० पर ले जाना

२८. ४. मिल कमेटियां, वर्क कमेटियां, ज्वाइन्ट काउंसिल, मैनेजिंग कमेटी का व्यवस्थित होना,

५. कार्यकर्ताओं की शिक्षा का प्रबंध,

६. विभिन्न स्थान के मजदूरों में एकता कायम करने के लिये आन्दोलन करना

७. रेशनलाइज़ेशन, बोनस, पगार, बीमा योजना आदि प्रश्नों पर आन्दोलन चलाना

८. यूनियन के खास प्रश्नों पर स्पष्ट पकड़ करना।

—— x ——

261

BOMBAY STATE TEXTILE WORKERS' CONFERENCE

TUR
8.40
13

A conference of textile workers in Bombay State was convened in Bombay City on November 28-29. More than 700 delegates participated, of whom nearly 100 were from outside Bombay City.

Com.S.M.Joshi, MLA, President, Mumbai Girani Kamgar Union presided over the conference. Com.S.A.Dange, M.P., General Secretary, AITUC, greeted the delegates.

The conference noted the millowners' offensive which was particularly marked during the last two years. Thousands of workers have been rendered jobless by outright closures of mills, heavy retrenchment and introduction of automatic machinery.

The main offensive of the millowners in the State now centres round their objective of introducing 4-loom and 4-side working. In several centres, the INTUC unions have openly entered into agreements with millowners in their attacks on jobs and wages of the workers.

The conference viewed with concern the delay in submission of the report of the Textile Wage Board and demanded an immediate wage increase of 25%.

In a resolution on closures, the conference criticised the failure of the Government of India in implementing the decisions of the tripartite Nainital Conference.
The resolution suggested establishment of an autonomous corporation to take over management of closed mills and offered necessary cooperation to Government, if it takes adequate steps in this direction.

The conference also demanded modification of the Bombay Industrial Relations Act, in the light of recent tripartite decisions.

Regarding ESI, the conference demanded 50% reduction in workers' contribution, immediate construction of hospitals, extension of medical care to families of insured workers and improved sickness benefits.

The formation of united organisations of textile workers in Bombay State, irrespective of political or other affiliations, was greeted by the conference. A call was given to intensify efforts to form one union in one industry, including unions of INTUC also in this campaign.

A 13-member Action Committee was constituted, to formulate ways and means of struggle to win the demands of textile workers in the State. The conference ended in a mass rally on November 29, in which over 30,000 textile workers participated.

PRODUCTION OF LITERATURE FOR
WORKERS' EDUCATION

TUR
8.10
13

Proposals for production of literature and audio-visual aids under the workers' education scheme was discussed by a sub-committee of the Central Board of Workers Education at its meeting in Bombay on November 29.

It was decided that booklets written in simple language, understandable to the ordinary literate worker who has little or no general education, should be published. Copies of such booklets will be given free to all worker-teacher trainees and literate worker trainees at unit level. Copies should also be given free upto a certain number to trade unions and other institutions undertaking workers' education programmes. In other cases, a nominal price should be charged.

The committee decided to seek the advice of the ILO Expert now working with the Union Labour Ministry, in the matter of syllabus, etc.

Com.M.K.Pandhe attended the meeting on behalf of the AITUC.

HIMACHAL TRANSPORT WORKERS' GAINS

Daily-rated workers have been made regular and house-rent allowance of Rs.10 to 15 has been granted to the road transport workers in Himachal Pradesh.

The workers also won a significant victory when the Himachal Pradesh Administration accorded recognition to their most representative organisation, the Himachal Transport Workers' Union (AITUC), Simla.

SUB-COMMITTEE ON CODE OF DISCIPLINE

A meeting of the sub-committee on Discipline in Industry and Labour Participation in Management was held at New Delhi on December 8. Shri Gulzarilal Nanda, Union Labour Minister, presided.

The sole item on the agenda was consideration of the proposed Code of Efficiency and Welfare. The opposition of both employers and workers to such a Code (though from differing standpoints) had already been expressed on a number of previous occasions. Hence, Shri Nanda in his introductory remarks made it clear that his Ministry was not insisting on getting approval for any "Code" as such, nor were the draft which had been circulated to be taken as rigid or final, even in the Ministry's own thinking.

Shri Nanda also admitted that unless the Code of Discipline was observed more faithfully by all concerned and the climate of industrial relations improved thereby, there was no utility in adopting yet another Code. Nevertheless, he wanted employers and workers to give serious thought to the inter-connected problems of discipline, efficiency, productivity, welfare, etc., and to make suggestions on how to improve them.

In the discussion that followed, Shri Naval Tata, the main spokesman of the employers, complained that they were being unfairly charged with non-observance of the Code. He felt that Government, as employer, should demonstrate how to work the Code practically in some selected Public Sector units, instead of criticising the private sector. Shri Tata also referred to what he called a "breach" of the Code when workers resort to hartal on the occasion of death or funeral

of one of their fellow workers or of some prominent public figure.

Shri Nanda differed from this view and held that such instances were distinct from industrial disputes and hence fell outside the purview of the Code.

Another employers' delegate, Shri Lakshmipat Singhania, claimed that the bulk of important employers faithfully observe the Code, while workers do not. But it was difficult to get observance from the large number of small-scale employers.

The representatives of the central TU organisations, particularly of AITUC and HMS, gave numerous examples of violations of the Code by employers and State Governments and also pointed out the utter inadequacy of the machinery for evaluation and implementation.

They also stated that problems of industrial efficiency cannot be tackled without reliable data, because generally, it is found that production and productivity are rising while workers are getting nothing in return.

The AITUC representative also mentioned that the Code of Discipline cannot be taken seriously by the workers when they see that even the tripartite agreements of the various Indian Labour Conferences are not respected by the Government itself.

For example, he referred to the report of the Central Pay Commission which revealed that the Finance Ministry did not consider the Government of India to be bound by the minimum wage norms accepted at the 15th Indian Labour Conference.

After discussion, the following broad conclusions were reached:

1. A small sub-committee would be set up to frame a questionnaire, for collecting data regarding various aspects of the productivity and efficiency problems.

2. On the basis of the data obtained, a seminar might be arranged by the Labour Ministry. The object is to try to secure agreement on at least some guiding principles.

3. These principles might be tried out for concrete implementation in a few pilot projects.

4. More intensive efforts should be made to secure better observance of the Code of Discipline by all parties.

The AITUC was represented at the meeting by Com.Indrajit Gupta, Secretary.

REPORT OF CEMENT WAGE BOARD

The AITUC has been informed by the Union Labour Ministry that Government do not propose to release the report of the Cement Wage Board, till the Government takes a decision on the Board's recommendations.

The AITUC had asked for immediate release of the Report since the main recommendations of the Report had been leaked out to the press.

LOAN FROM P.F. FOR FLOOD-AFFECTED WORKERS IN W.BENGAL

The Union Labour Ministry has ordered for grant of loan of Rs.100 or members' own contribution, whichever be less, in each case to the members of the Employees' Provident Fund, who have been affected by the recent floods in W.Bengal.

Orders have also been issued permitting the grant of similar loans to members, who are working in factories exempted from the operation of the E.P.F.Scheme, 1952.

This was communicated to the AITUC by the Labour Ministry in reply to a representation made by the AITUC for grant of loans more liberally out of provident funds, as relief for flood victims.

NOTICE

Letters addressed to the AITUC and the Trade Union Record should state the Delhi Delivery Zone (New Delhi-1) as below:

All-India Trade Union Congress,
4 Ashok Road,
New Delhi-1.

Trade Union Record,
4 Ashok Road,
New Delhi-1.

TUR.
8.10
13

RAJNANDGAON TEXTILE WORKERS

STRUGGLE AGAINST CLOSURE

Textile workers of Rajnandgaon, unemployed for over three months now, following the closure of the B.N.C. Mills have launched a satyagraha from December 3 for the reopening of the mills.

The satyagraha is led by the Lal Zanda Mill Mazdoor Sangh. 59 satyagrahis courted arrest within the first three days.

Earlier, Government had appointed an Inquiry Committee to go into the affairs of the mills but no concrete steps had been taken. An assurance given on October 18 by Madhya Pradesh Labour Minister Shri Dravid that the mills would be reopened soon, has also remained unfulfilled.

STRUGGLE AGAINST RATIONALISATION
AND RETRENCHMENT IN TEXTILE INDUSTRY

INDORE

-

The conference of the Mill Mazdoor Union, Indore held on November 26, under the presidentship of Com. Shivnarayan Sriwastava, strongly condemned the millowners' efforts to impose increase in workload and retrenchment.

The union appealed to the workers to fight unitedly against the offensive. The conference demanded bonus for 1958 and early publication of the report of the Textile Wage Board.

SHOLAPUR

The Sholapur Girani Kamgar Union at its general

meeting held on November 22, noted that the millowners' rationalisation offensive would result in rendering over 3000 workers jobless.

The meeting decided on steps to resist the retrenchment and rationalisation offensive.

The report presented at the meeting stated that the union which is a united and independent organisation has enrolled over 8000 members during the year and has challenged the representative character of the INTUC union in Sholapur textiles.

For the new term, Com.R.S.Ranashingare was elected President and Com.B.Y.Kulkarni, General Secretary.

KANPUR PRESS WORKERS WIN BONUS

The Industrial Tribunal, U.P., has recently awarded Rs.2400 as bonus for the year 1956-57 to the workers of Sadhana Press, Kanpur.

The workers were represented before the Tribunal by the Kanpur Press Workers Union (AITUC).

~~ANDHRA PRADESH HOSPITAL WORKERS' DEMANDS~~

TNR 8-00 13

MEETING OF LABOUR ADVISORY BOARD, DELHI

The Labour Advisory Board, Delhi, which met on September 22, approved a scheme for construction of 1600 quarters for industrial workers during the 3rd Plan period, at an estimated cost of Rs. 75 lakhs.

The Board also approved a suggestion to make funds available for conducting tours of workers to places of national and historical importance.

On the suggestion of the AITUC representative, the Board recommended ~~xxxxxxx~~ doubling of the amount proposed for legal assistance to unions (Rs.20,000 during the Third Plan period).

According to the Labour Officer, Delhi, it was not possible to implement the scheme for setting up canteens, due to lack of cooperation from employers'and workers' organisations.

Com.B.D.Joshi and Com.A.C.Nanda, President and General Secretary of the Delhi Committee of the AITUC participated in the Board meeting.

TVR 8.10 13

NO TRIPARTITE MEET ON BANKING DISPUTE POSSIBLE, SAYS MINISTER

Shri G.L.Nanda, Union Minister for Labour and Employment has ruled out the possibility of holding another tripartite conference to resolve the banking dispute. He said the differences between the parties were of a very wide nature and the Government were thinking of the next step themselves.

The Union Labour Minister was replying to a question by Shri S.M.Banerjee, M.P., in the Lok Sabha on December 2.

Replying to a question the same day, Dy. Labour Minister Shri Abid Ali said that employers were in favour of setting up a National Tribunal in this regard.

THREATENED CLOSURE OF GULBARGA TEXTILE MILL

The management of the Mahboob Shahi Mills, Gulbarga (Mysore State) have announced closure of the mill by end of December. It is alleged that the mill is facing financial difficulties, said to be as a result of financial swindling and squabbles among owners.

The Mysore State Government is stated to have agreed to give some financial aid to prevent the closure on condition that workers accept a 25% wage-cut.

In a letter to the Union Labour Minister and the Minister of Industry, Dr.Raj Bahadur Gour, M.P., Secretary, AITUC, demanded that Government should ensure continued working of the mill till the enquiry ordered has been completed and a settlement arrived at in the light of the enquiry report.

TVR
8x10
13

FREQUENT ACCIDENTS IN DCM

In a letter to the Chief Inspector of Factories, Delhi, the Kapra Mazdoor Ekta Union has drawn the attention of the authorities to the alarming increase in the number of accidents in the Delhi Cloth Mills. Four major accidents had taken place within a period of 24 hours in quick succession which has created intense unrest, resentment and agitation among the workers. The Union has charged the management with resorting to a ruthless drive to extract more output from reduced complement of workers with callous disregard to the life and health of the workers.

The letter cites the example of the Power Plant Section of the mill, scene of the above four accidents where the number of electric motors has gone up four times during the past few years, whereas the number of motor attendants and other auxiliary staff has gone down by almost 33%. Besides, fuseless electric switches provided in recent months are defective and have caused many minor accidents, besides the three serious accidents which occurred on November 23, 1959.

The union has requested the CIF to investigate into the causes of the accident and to take appropriate action against the management.

The Delhi Cloth Mill branch of the union in a meeting held on November 24, 1959 expressed great concern at the increasing rate of accidents in the mills. The meeting passed a resolution condemning the management for its deliberate policy of neglect, coersion and undue extortion of work from the workers - and demanded immediate enquiry into the causes of the accident.

TUR
8.10
13

RECOGNITION DENIED TO THE UNION

The management of the Corborandum Universal Ltd., Tiruvothiyur, Madras, have been denying recognition to the only union in the firm, representing more than 68% of the total number of workers in the firm. ~~and~~ The union fulfilling all the conditions laid down by the Code of Discipline for the purpose of recognition. The conciliation machinery of the Government of Madras has also been unsuccessful in pursuading the management to accept the legitimate demand of the union. This denial of the elementary right of negotiation and representation ~~by the management~~ has created great dissatisfaction and unrest in the establishment. The workers are planning for concerted ~~among the workers and they seem determined to get their~~ action to win their legitimate TU right. ~~union its long due "Recognition" even if they have to take strong measures.~~

BORJULY PLANTATION

~~TEA~~ WORKERS MEET

TUR 8n 10/13

A general meeting of ~~Borjuly~~ Borjuly Tea Workers was held on December 2, 1959 in Borjuly tea garden (Assam) under the Presidentship of Com.Kalidas Digpal. Representatives of the Akhila Bhartiya Chah Mazdoor Sangh(Assam) were invited in the meeting. About 300 workers participated~~. in the meeting~~. Resolutions protesting against the practice of forcibly deducting the bonus money of the workers for the National Savings Certificates; against the policy of discrimination towards the AITUC and demanding recognition of the Akhila Bharatiya Chah Mazdoor Sangh were passed.

DEMANDS OF WOMEN WORKERS
IN RAMGANJMANDI STONE QUARRIES

TUR
8x10
13

~~Women Workers of Rajasthan Protest~~

On November 30, 1959, women workers ~~working for the~~ employed in the ~~Associated Stone Industries Kotah Ltd.,~~ Ramganjmandi, stone quarries held a public meeting in response to a call given by the Stone Quarries Mazdoor Sabha, ~~Ramganjmandi~~.

The women workers expressed their strong protest against non-implementation of the minimum ~~xxx~~ rates fixed by the Rajasthan Government, against ~~xxxxxxxx~~ reduction in working hours and the ill-treatment meted out to them by the contractors.

The women workers also protested against the method of enquiry conducted by the Labour Inspector in the presence of the officials of the management.

They demanded immediate implementation of the rates fixed by the Government and the abolition of Cowrie System of payment.

MINERS EMERGENCY RELIEF FUND

The Government of India have created a fund called "Miners' Emergency Relief Fund" which will be utilized for the benefit of miners involved in accidents and their dependents. The Fund has been created out of the remaining part of the donations received by the Government of India for the relief of ~~the~~ victims of the famous Chinakury ~~accident.~~ mine disaster.

NATIONALISATION OF COAL MINES DEMANDED
IN RAJYA SABHA

TUR
8.10
13

In the Rajya Sabha on ~~27~~ November 27, Com.Bhupesh Gupta, M.P., moved a resolution: "This House is of opinion that all the coal mines in the private sector should be nationalised by 1961."

Moving the resolution, Com.Gupta said that the demand for nationalisation of coal mines was raised many times earlier, ~~xxxxxxxxxx~~ The Coal Mining Committee in 1937 and the Coalfields Committee of 1946 considered this question. The National Planning Committee, under the Chairmanship of Pandit Nehru had also spoken in favour of nationalisation of the coal industry. The report of the Parliament's Estimates Committee relating to the year 1954-55 had stated that "in the long run, nationalisation of the coal industry is essential in the interest of industrial development."

Com.Gupta pointed out that this is not an ideological question as between communism and capitalism. Even capitalist countries like Britain, France and Italy has nationalised the coal mining industry.

From the point of view of conserving this national asset, and especially when reserves of high grade coal are not appreciable, Com.Gupta said, "we cannot discharge the national responsibility if we leave this matter in the hands of the private owners." ~~The monopoly grip over the industry~~

Referring to monopoly grip over the industry, he said that even though there are nearly 900 collieries, 115 companies organised in the Indian Mining Association (IMA) and two

other owners' associations have complete control over production and marketing, especially in high grade coal. In this, British capital has a dominant role and one British-owned managing agency house, the Andrew Yule and Company controls nearly 25 per cent of the high grade coal. Foreign investment in this industry is estimated at Rs.3-1/2 crores. This monopoly grip has developed as a threat to our industrial development.

Com.Gupta added that all reports of inquiry committees had underlined the fact that in respect of modernisation, safety, conservation, etc., the employers have been shown complete neglect. They were more interested in employing sweated labour and in plundering the resources of our country.

Quoting figures of profits, he said that dividend paid between 1953 and 1957 in the case of one company amounted to the entire capital outlay and reserves. (Bengal Coal Company - Capital: 1.2 crores; Reserves: Rs.1.07 crores; Dividends paid in five years: 1.04 crores).

He quoted the Coal Mining Committee which observed: "To use a sporting metaphor, the coal trade in India has been run like a race in which profit always comes first, safety a poor second, sound methods an 'also ran' and national welfare a dead horse, entered perhaps, but never likely to start."

Com.Gupta also referred to the slaughter-mining, the complete disregard of safety regulations, the alarming increase in accidents, etc. The figure relating to serious accidents is roughly 3000 every year. Both the Mines Department and the Coal Mines Board have completely failed and both these bodies have been functioning under the shadow of the colliery owners.

The interests of the coal miners were not safeguarded properly by the Government: ~~on the other hand, the employers were given price increases repeatedly.~~

Dr.Raj Bahadur Gour, M.P., Secretary, AITUC, supported Com.Gupta's resolution. The Minister for Steel, Mines and Fuel, Sardar Swaran Singh, opposed ~~xxxxxxxxxxxxxx~~ and by majority, the Rajya Sabha rejected the resolution.

DEBATE ON WORKING OF HINDUSTAN MACHINE TOOLS

Grievances of the employees of Hindustan Machine Tools, Bangalore, were raised on the floor of Parliament on December 7, when the Lok Sabha debated a motion moved by Com.E.T.K.Tangamani, M.P., Secretary, AITUC.

Com.Tangamani demanded that Government should immediately look into the question of failure of the Joint Management Council in the establishment and the recent anti-union actions ~~anti-labour policies~~ of the management.

Shri Manubhai Shah, Minister for Industry, informed the House that the matter has been taken up by the Chief Labour Commissioner (Central).

Dated. 6-1-59

To,
The Labour officer,
Bhiwani.

Sub- Violation of code of Dicipline and non - Implementation of agreements by the Management of Hissar Textile Mills Hissar.

.....

Sir,

Reference our letter No. 434/58,464/58;66/58,111/58,127/58 182/58,188/58,211/58,236/58dated 24-3,31-58 2.5.,19-5,28-5, 4-8,18-8,2-9-,7-10,23-9,8-11 and 16-11-58 addressed to various authorities including labour Department and a copy endoresed to your office. In this conn ection I wish to draw your kind attention to wards the follo wing points :-

Violation of code of Discipl ine PartIII (Third) Section II

According to ag reemamet dated 17-1-58signed at Delhi, a fresh agreement was signed on 2-4-58- and five Union Leaders were given right to represent the workers ,cases while on duty.

On 19-5-58 Sh. T.S. Subarmani went to Mr. Shanti Saroop along with a worker to repre sent his case but he was rodly insulted and abused by the acting General Manager Sh. Shanti - Saroop , we sent a telegram and made a representation to the authorities.concerned.

On 3.8.58 Sh. Darshan singh , memeber working committee went to Sh. Sha nti saroop to request him for jeep lift to bring his ailing wife to civil hospital as advised by the Mills Doctor but he was also rudely insulted and abused . We passed a resolution in our working committee and in a general meeting on 3-8-58,in this connection copies were sent to Bharat Ram and Labour Ins pector ,Hissar.

On 15-8-58. manngement organised a meeting in mill premises in connection with independence day. In that meeting Sh. Shanti saroop called the union leaders "Lucha Laffanga' and abused then. We passed a protest resolution on 18-8-58

and sent a copy to your offi ce also.

On 1-9-58 our Ex- action General Mxxxxgxx Secretary Sh. Sat Narain went to sinig g master Sh,Shant saroop along xx w th a worker to represent h is case ,. Again the said master 's behaviour was very rude a nd he used abusive language. We sent a letter to the gene rl Manager on 2.9.58 and a copy endoresed to Labour Inspecto r Hissar and to your office.

After a few days w hen Sh. Darshan singh and Sh. Gobind Ram union representat ive went to represent the cases o of some workers , the manage ment refused to talk to them. ShT TaraChand and Darshan singh were again turned away in the month of November 1958 by Sh .Darshan singh Suervisour .

To put anend to this and find a way out , we requested the management for formation of a machinary accordi to grivance procedure but af ter a number of meeting and discussion s the matter stan ds deadlock because of the axxxxx authorities intransigent attitude.

On 29-12-58 Sh. T.S.Subarmaniam our Senior Vice President was again abu sed by sh. Shantixxxxxxx Raghwan . In this connection he sent a letter to the manageme on 30-12-58.

Inspite of our repeated requests and inter ventio through labour inspector no machinary is evolved by the xxxxxgx management to settle mioner disputes and give justice to the w workers, according to clause three of the code. There are dozen of cases which are pending since long . All the applicati of the workers are threwn i n to the waste paper basket . There is no machinary through which the workers can get reply even. The mill labour office r's behaviour with workers is not proper workers are refused l eave, warned on fxxxxxx flimsy grounds and such warnings ar e used against the workers at the time of promotion .

In the month of May workers were refused payment due leave even on giving proper notice and were refused payment of leavex days. After much x struggle and the intervention of the labour Inspector some of then got payment.

3. According to agreement dated 17-1-58 and appropriate machinary was to be evolved at an early date . But after three and a half months , the management was forced to form it on 2.4.58. a fresh agreement was signed on 2.4.58 but the representative of the workers were not allowed to function properly , they were abused and harassed many a times.

On other agreement was signed on 2.4.58. but its clause no four and five were implemented . The main culprit Sh. Bharat Kumur was not dismissed , but allowed to resigned and no investigation was made about the Gundas who were brought in the Colony. to attack Union leaders by some responsible persons.

on 26-6-58. an agreement wassigned by therepresentati of the mill and union in the present of Sh. Mehta labour Inspector , according to that agreement and personal discussion 120 workers were to be made permanentby the manage er in a month's time . The condition for making them permanent was that the workers should have completed one year 's service with clean record.

But up to 1.8.58only 32 workers were made permanent instead of 120 and in that list six workers were included who had not complet ed one year of servic. Our list of 103 workers was completely ignored . We raised a dispute for bodh the workers in the month of Oct, and after the intervention of labour Inspector the managem ent agreed to make 50 workers permanent by 1.11.58. and by 1-12-58.

Again in the list of the fifty the right claimant were ignored simply because their case were agitated by the union and the promised eighteen are not made permanent sofa

This will be interesting to note that we has been agitating this question since last years But instead of listening to us the manag ement always have even 3,4, months s service . This fact I brought to the notive of L . Bansi Dhar the Managing Agen t in the presence of Labour Inspecto , Hissar.

On 8.11-58 two applications against Sh. Ram saroop Mistry signed by Doubling and con- winding workers were given to Generl manager but no action has be en taken against him so far.

One Sh. Sat pa l mistry assauled a worker while he was on duty. Sh. Sat pal als o tried to get a document signed by the workerforcibly. But the said mistry is not properly punsihed

According to c la use two of the agreemrnt dated 26-6 58 the case of supressed wor kers were not resumed.

On 12-8-58 ne arly 25 workers Reeling departemrnt sent an application against Sh. Tribhawan Mistry , But no action is taken on that application in spite of our two reminders.

On 8.6.58 fo ur permanent doubling workers namely Sadhu Ram Inder dutt , Gora singh Suba singh of shift I were refused work and s nt back. , . They were not given the wages o of that day insite of our re peated requests they are not being p aid for that one day.

Due to tact less ness inefficiency and harasing attitude of Sh. Yaspal mistr y , dispute arose in machinarycall department. According to man age ent two air condition attendant with the help Bandhanis used to clean the ductsand deffeusers But according to worers the actual work was being don by the contractor's man and they wer e to help them.

On 28 .8. 58 when sh. Sarwan singh was doing his normal duty Sh. Yaspal w ent to him and ordered him that he should clean No 3 ducts He t old sh. Yas pal that there was no practice of distrubuting wor k among them. and we alwayshad done their work .

He was charge . sheeted the next day and was demoted to Badli.

On 16-10-58- when he went to attend his duty at 2-30 P.M. he was returned by Sh. Yas pal and orderd that he should come in the night shift.

On 1-11-5 8 he was not given workand in place of him Sh. Partap chand fitt er Bhandhniewas given work.

On 20.10-58- he saw Sh. Devinder Nath chief E ngineers

and placed before him the m isdoing of Sh. yaspalx . But ~~in~~ instead of taking sympathetic veiw sh. Devinder nath told him ~~him~~ that all Sh. yas pal was doin g every thing ~~him~~ under ~~tampxkax~~ his instructions and they should get theirself ready for some thing more and they told tha t they bring them to senses.

On 1.11.58.Union complained to the Manger in this ~~xxxx~~ connection . In the last week of November Sh. Mehta Labour Inspector , Hissar intervene d in this case and suggested that status quo should be maintai ned until the management suceeded in deviciing a maechnical proces s for its cle ning , which the ~~xxxxx~~ management told that they were trying I On behalf of the union agre d to this suggestion.

But on 1.11.58 Sh. Yas pal mistry instructed Sh. Sarawan singh in writing that he should clean the deffuesur No four and five on sunday. It was clear violation of the understanding dated 1.21.58 and provoc tion. Sh. Sarwan ~~xi~~ singh refused to accept this order.

on 3.12.58. he was again charge - sheeted.

Inthe mean time all the deffusers were got cleaned by the company through contractor's men.

~~xxxxxxxxx xxxxxxxxx~~ On 17-22-58 after one and a half month he was dismisse d from service.

on 3.11.58 sh . Gurdail singh was also charge - sheeted an enquiry was made and he was given no punsihment. on 18.12.58.sh . Nirijin lal and shrichand was also charge sheete . But no inquiry made so for . Since two or three months no pump attendant or air condition a ttendant has done the cleaning of ducts and deffeus ersMainly the trouble is strated from Mechanic al departement and the manag ement hve precipitated the crisis made provocation and violate d the code of discipline.

On 29.12.58 Sh. Ram nath Ram lal and gopi Ram were suspended on the charge that they ~~had~~ had ~~bo~~not done their normal dut eis. This is inte resting to note that inspite of their being worked on 26th a nd 27th December they were marked. refused to work on their pas ses. For 26-12-58 they were marked ~~x~~

present first but after some time in place of presence mark "Refused to work"was written . All the workers never have refused to work they have worked all the three days before the ir suspension and they are read y to worknow even.

But for reasons be st know to the management, they ha have created crisis intenti onally.

In the last I would like to make our position clear.regarding the letters d ated 25-12-58 , 27-12-58 and 3-1-59. The charges levelled against our union workers in all the three letters are false , baseless and incorrect . Through s such letters management are trying to hide their misdeeds and falsely throwing blames on t he union leaders , Our past record shows how peacefully we are working-We under standour duty towards the industry and industrial peace . But we are not in fa favour of establish ing peace at the cost of workers.

In veiw of the above mentioned facts I request that to get the pro er under standing of the situation and to get yo r self acquainted with the misdoings of the management. An enquiry may kindly be made , so that clear picture may come out.

Your faithfully.

General secretary.

THE PRESIDENT AND **MEMBERS** OF **THE TEXTILE ASSOCIATION** (*India*)

request your presence on the occasion of the Inauguration of the

17th ALL INDIA TEXTILE CONFERENCE

By

SHRI MANUBHAI SHAH

MINISTER FOR INDUSTRY, GOVT. OF INDIA,

on *1st January 1960 at 9-30 a. m.*

at the Victoria Jubilee Technical Institute Grounds,

Matunga, Bombay 19.

SHRI Y. B. CHAVAN,

CHIEF MINISTER, BOMBAY STATE

has kindly consented to preside.

R. S. V. P.
Hon. Secretary,
Bombay Branch,
The Textile Association (India),
'Santosh', 72-A, Shivaji Park,
BOMBAY 28.

INAUGURATION PROGRAMME

Welcome Song.

Welcome Speech by Shri N. V. Vora, President, Bombay Branch.

Reading of Messages by Shri G. C. Shah, Hon. Secretary, Bombay Branch.

Speech by Shri K. Sreenivasan, President, The Textile Association (India), requesting Shri Manubhai Shah, Minister for Industry, to inaugurate.

Inaugural Speech by Shri Manubhai Shah, Minister for Industry.

Conferment of Honorary Membership. Introduction of Shri G D. Birla by Shri J. J. Randeri, Hon. Gen. Secretary, The Textile Association (India).

Reply by Shri G. D. Birla.

Presentation of Diploma, etc. Introduction by Shri C. H. Shah, Jt. Hon. Gen. Secretary, The Textile Association (India).

Speech by Shri Y. B. Chavan, Chief Minister, Bombay State, President.

Vote of Thanks by Shri E. R. Subram, Chairman, The Textile Association (India).

Vande Mataram.

261 18.4-59.

टेक्सटाईल वर्कर्स यूनियन हिंगणघाट.

श्रद्धेय माननीय प्रधान मंत्रीजी

केंद्रीय शासन - भारतीय संघ राज्य दिल्ली

कँप - वर्धा.

की सेवामें

हिंगणघाट के रा. ब. बं. अ. मील के मजदूरोंद्वारा सविनय सादर

निवेदन

(१). उक्त मील हिंगणघाटकी पहली सूती मिल है जो पचासों वर्ष पूर्वसे खानगी मालकी में अबाधगतीसे चलती रही. इसमें एकहि पाली चलती है जिसमें हम करीब १२०० मजदूर काम करते थे. हम १२०० मजदूरों के परिवार हमपरहि निर्भर हैं मतलब हमारा सवाल जहाँ १२०० मजदूरों की मजदूरीका सवाल है वहाँ ५००० लोगोंके रोटीका मामला है.

(२). पिछले १½ या २ वर्ष के कालमें विदर्भकी अन्य सूती मिलों की तरह हमारे मील मालिक भी मील बंद करने की हरचंद कोशीशमें अग्रगण्या थे तब दूसरी तरफ उन्होंने ता. २७-३-५९ तक कई खाते और कई खाते चालु - बंद रखते हुवे अधूरे ढंगसे ये मील चलाई जिसके कारण हुई हम मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा आपसा सहृदय लोनायक स्वाभाविक रूपमें समझ सकता है.

(३). ता. २७-३-५९ को ये मील अपने पूरे समयतक चली. हर रोजीवाला छुट्टीके समय हरतरहकी सावधानीसे अपना अपना काम बंद कर छुट्टीकी सीटीके बाद आशंका रहित भावसे और कल फिर कामपर आनेकी आशासे अपने अपने घर लौटा. छुट्टी ३.४५ बजे होती है. यंत्र बंद थे ऐसी दशामें ३- घंटोके बाद मैनेजमेंट के कथनानुसार अचानक आग लगनेकी वारदात हुई जिसमें मालिकका कथन है कि रोहीन, थ्रासल, और कार्डींग ये तीन खाते क्षतिग्रस्त हुवे. परिणामत: नोटीस लगादी गई है जिसमें कहा गया है कि ६० प्रतिशत यंत्रोंमें खराबी होगई है फलस्वरूप उक्त मील अनिश्चीत समयके लिये बंद रहेगी. ईस नोटीस का भयानक स्वरूप और उसका भीषण आघात अधूरी मजूरीसे दुर्दशाग्रस्त हमलोगोंपर कितना बुरा असर कर सकता है इसका सही अनुमान भी आपसा सहृदय व्यक्ति सहजही कर सकता है.

(४). यहाँ हम उक्त तथाकथित अग्निकांडके संबंधमें कुछ खास तथ्य --

आपके जानकारीके हेतु प्रगट करते हैं.

(अ) आग की ऐसी दुर्घटना एँ जब जब हुई तब तब खतरे की सीटी तत्काल बजाई जाती थी लेकिन ता. २७-३-५९ के आग के समय न जाने क्योंपर खतरेकी सीटी कई नहीं बजाई गई.

(आ) ईस अग्नीकांडके समय मीलके मॅनेजर, इंजिनीयर, स्पीनींग खाते के मास्टर श्री. साटम, तथा एक स्थानीय वकील क्षतिग्रस्त खातों के निकट संपर्कमें चहलकदमी करते घूम रहे थे जिनकी - संदीग्ध उपस्थिति और हलचलें नितांत संशयास्पद हैं.

(इ) आगपेर काबु पाने के विषायमें जो तत्परता और तेजी बरती जानी चाहिये उसके बदले लापरवाही और हर जिम्मेदार ऑफीसर के उपस्थिति के वावजूद सुस्तीसे काम लिया गया. घडीखाते के कुछ मजदुर जो अंदर काम कर रहे थे वे आगबुझाने दौडपडे जिनकी आधी मजदुरी काट ली गई मानों आग बुझानें में सहायता पहुँचाना एक दंडीत करने योग्य अपराधहि था.

(ई) आगसें हुई क्षति जानबूझकर बढाचढाकर बताई गई है जहाँ क्षति का वास्तविक प्रमाण १० प्रतिशतसे भी कम है वहाँ ६० प्रतिशत की हानि कहना सरासर धोखाधडी है. ट्रेड लास और यांत्रिक हानि के नामपर बीमा कंपनीसे बडी रकमों का क्लेम वसूल करना तथा लंबे अर्सेतक मील बंद रखने का पाखंड सिध्द करना यही मानों ईस क्षतिको बढाचढाकर बतानेके सरे हेतु हों.

(उ) इस दुर्घटना के बाद क्षतिग्रस्त खातों की सफाई संबंधीत सब मजदुरों से नहीं बल्कि दुसरे खातों के कुछ लोगोंद्वारा वह भी बडी सुस्ती और मंद गतीसे की जारही है. थोडे सुधारके लिये जो सामान स्टोअरमें नहीं है उसको मंगाने की बात तो शायद सोची थी नही जा रही है.

(ऊ) अगर ठीकसे साफ सफाई की तत्परतासे काम किया गया तो २७-३-५९ तक जिसभांति मील चलती थी वैसी १ सप्ताहमें चालु हो सकती है ऐसा हमारा विनम्र दावा है. मालिक यदि आनाकानी करें तो ऐसी संधी हमें दी जावे हम अपना दावा सही सिध्द करनेको तय्यार हैं.

(५). ईस निवेदन के ४ थे पॅरामें हमने जो तथ्य नोट किये हैं उनके प्रमाण हम जाँच के समय प्रत्यक्ष भी उपस्थित कर सकेंगे और यही वजह

है कि हम ईस काकतालीय अग्नीकांड को स्वाभाविक नहीं बल्कि कुचेष्टापूर्ण समझाते हैं. यह कुचेष्टा इतनी गंभीर तथा औद्योगिक क्षेत्रमें असह्य सी है कि उसपर आपका लक्ष यथाशीघ्र केंद्रीत होना जरूरी है.

(६). जहाँतक राज्य सरकारोंका सवाल है वहाँतक मौजूदा कानूनोंकी रूहसे राज्य सरकार हमें तत्काल न तो कोई सहारा पहुँचा सकती है न मालिक जो हमें भूखे मारनेपर तुले हैं वे हि कुछ करनेवाले हैं तब हम आपके पास फरियाद लेकर पहुँचें यही हमारे लिये एकमात्र रास्ता है. वास्ते केंद्रीय शासनके कर्णधार के नाते आप सहृदयतासे हमारी फरियाद सुनें और उसपर अपेक्षित जांच की उपाय योजना करके हमें अनुग्रहित करें.

(७). बरार और नागपूरके हिस्सेमें जो सूतीकपडों की मीलें हैं उनमेंसे एक हिंगणघाट, १ नागपूर, १ अचलपूर तथा १ बदनेरा ऐसी ४ मिलें तो आजही बंद करदी गई हैं एक दो मिलें निकट भविष्यमें बंद होनेके रास्तेपर हैं. जिसका प्रधान हेतु औद्योगिक संकट सहमकरना है. बेकारी की सृष्टी करना है. जनताके जरूरत के चीजों का अभाव निर्माण करना है तथा हमारे विकास की गतिमें रोडे अटकाकर शासन तथा मजदूरों को परेशान करना है इसलिये हम आपसे विनम्रतया अपील करते हैं कि हमारी मील या अन्य अपना उद्योग चलानेके लिये अपात्र क्षेत्रोंकी -- औद्योगिक विकास तथा उसके नियोजन कानून (Industries (Development and Regulation) Act 1951) की १५ धाराके अनुसार आप तत्काल जांच करनेका आदेश जारी करें. तथा उक्त कानून की धारा१८ (अ) के अनुसार यथाशीघ्र ऐसी मिलें भारतीय शासन के तत्वावधानमें संचालित करने के लिये (अपात्र मालिकों के उद्योग) ५ वर्षों के लिये- आवश्यक उपाय-योजना करें.

प्रार्थना.

इस सिलसिलेमें हर उचित आवाहन पर हम मजदूर पूरे सहयोग का मन:पूर्वक आश्वासन देते हैं और हमें संकटसे बचाइये ऐसी आपसे सविनय प्रार्थना करते हैं.

विनीत.

हिंगणघाट.

ता. 18/4/59 हस्ताक्षर कर्ता हिंगणघाटके बं.म.मीलके मजदूर.

[signature]

बाबुराव नरवडे

राष्ट्रीय मिल वर्कर्स युनियन
अमळनेर, पू. खा.

(२६१)

साठे बिल्डिंग, राणी लक्ष्मी चौक 72

ता. २३-५-५८

श्री. एस. ए. डांगे, एम. पी.
जनरल सेक्रेटरी, मुंबई गिरणी कामगार युनियन,
मु. मुंबई येथे —

स. न. वि. वि. —

आमचे ता. १३ मे १९५८ चे पत्र आपणांस मिळाले आहेच. त्यानंतर मी आपणास समक्ष मुंबई येथे भेटलो आहे. येथील एकजुटीच्या युनियनतर्फे एक सभा आपण घ्यावी व त्यासाठी एक दिवस द्यावा अशी मी आपणास विनंति केली व ती आपण मान्य केली आहे. तरी आपणास कोणत्या दिवशी व वेळी येणे सोईचे होईल ते आम्हास ताबडतोब कळविण्यास विनंति आहे. म्हणजे त्याप्रमाणे आम्ही पुढील व्यवस्था करू. आपल्या सांगण्यावरूनच हे पत्र आठवणी दाखल पाठविले आहे. कळावे ही विनंति. ता. क.

आपला विश्वासू

वसन्त [illegible]

जनरल सेक्रेटरी,
राष्ट्रीय मिल वर्कर्स युनियन
अमळनेर, पू. खा.

A.I.T.U.C.

Phone No. 149

WORKERS UNITE

HISSAR TEXTILE MILLS WORKERS UNION

Regd. No. 40

(AFFILIATED TO A. I. T. U. C.)

NAGORI GATE,
HISSAR

Ref: No..................

Dated 14.5.59

To,

The Labour Commissioner Punjab

Ambala Cantt.

Sub – Violation of code of Disioplin e and agreement dated 11.2.59. and unfair Labour practice done by the management.

Sir ,

Most respectfully I beg t o draw your kind attention towards the following facts.

On 11.2.59 an agrreemt was signed by the representative s of the managemnt and the workers of Hi ssar Textile Mills Hissar But inspite of our repeated reques ted and best efforts the management failed to honour the following Clauses,.:-

1. As written in the preamble of the agreement the understanding was made that "disputes should be settled mutually. But inspite of my written requests the manage ment is not within willing to start discussion on our demandnotice dated 17.4.59 and on some clauses of the agreement dated 11-2-59 .

2. According to clause 4 of the agreement it was decided that the case of Sh. Sarwan singh w ill be sent for adjudication jointly It was sent accordingly on 19.3.59 . But before its publication the above mentioned cas e was referred to the Tribunal on the report of Shri Joginder sin gh Labour officer Bhiwani . Notices were issued to the parties an d we appeared before the Industrial Tribunal Punjab camp a t Delhi on 29th April 1959.

But to my great surprise the management raised objection on false ground only to gain t ime and get this case lingered on . I never have seen any act of i ndecency and unfair dealing like

Phone No. 149
WORKERS UNITE
HISSAR TEXTILE MILLS WORKERS UNION
Regd. No. 40
(AFFILIATED TO A. I. T. U. C.)
NAGORI GATE,
HISSAR

Ref: No.................. -2- Dated..

this.

3,. ~~Inspite of my request~~ Th e management is not providing cycle to the workers as agreed in the clause 12 of the agreement.

4, Inspite of my repeated reque st the managem nt is not willing to starting discussion on demands no15 for settlement.

5. According to the clause 14 of the agreem nt we had supplied the lis t of thirty badli wor kers to the management for making them permanent , but out of th at list only six workers have been made permanent and the ca se of the remaining 24 has been rejected on the one pretext or the other.

On 6. 5. 59 I sent a letter to the management in order to get some information in th is connection . But received no reply so far.

6. The management is not taki ng any steps in connection with demands No 18.

The attitude and behaviour of Mehta Labour officer of the Mill is some time insulting and aga inst the code of dis cipline . I am preparing a detailed note in th is connection.

7. The management is not recongnising our union inspite of the facts that there is no other u nion inthis mills and our union fulfil all the requirments nee ded for this purpose,.

In the end I request th at the managment of Hissar Textile Mills Hissar may very kindly b e persuaded for impleenmtationof the agreement and abiding by th e code of discipline and code of Conduct.

Thanking you,

Yours Faithfully.

Sd.

Phone No. 149

WORKERS UNITE

HISSAR TEXTILE MILLS WORKERS UNION

Regd. No. 40

(AFFILIATED TO A. I. T. U. C.)

NAGORI GATE,
HISSAR

Ref: No.....

Dated...2-6-59.....

To,
The Labour Commissioner,
Ambala cantt.

Sub- Violation of code of Disc ipline , Code of conduct and agreement dated 11-2-59.

Sir,

Most respectfully I beg to submit as unders-

1. That on 25.4.59 we wrote a letter to the management stating that Sh. P.D.Mehta mill labour offi cer has refused acceptance of letter No 201/59 dated 25/4/59 which was sent through Com Tara C hand Vice President of the union . But n o action had taken against Sh. Mehta by the management so far.

2. That on 27-4-59 we informed the management through letter No 205/59 dated 27-4-59 that Sh. Mehta labour officer has not issued gate passes to Sh. Raj Singh an d Ram Awadh representative s of the union according to agreement d ated 11-2-1959.

But instead of taking any action against him as giving us a satusfactory reply , the managment gave us an evasive reply which was highly unsatis factory. And after that our letter in this connection was not replied even.

3. That on 6.5.59 we again sen t a letter to the man gement copies to labour Inspector , Labour C ommissioner and Labour Minister but received no reply.

4. That on 11.5.59 I sent a le tter to Labour Inspector Bhiwani informing him that Mr. P.D. Me hta is not accepting application and letter from workers and union.

5. That on 15.5.59. Sh. Mehta again refused acceptance of a letter

Phone No. 149
WORKERS UNITE
HISSAR TEXTILE MILLS WORKERS UNION
Regd. No. 40
(AFFILIATED TO A. I. T. U. C.)
NAGORI GATE,
HISSAR

Ref: No..................   Dated..

addressed to General Manager from Com. T.S. Subermaniam our Serior Vice President . We infromed t he Managem nt through our letter ~~xxx~~ dated 20-5-89. but received no reply.

6. That on 26.5.59. we sent a detailed letter to managem nt copies endorsed to labour Inspector Bhiwani, Labour commis ioner Ambala and ~~Lalak~~ Bansi Dhar New Delhi in connection with Mr. Mehta's bad Behaviour etc etc but received no reply.

7. If any workerwhile off duty wants tosee his Mistry or any other superior in connection with urgent work he is to get gate pass from Sh. Mehta for the purpose . But unfortunately Mr. Mehta often not found in his office . And if s ome times luckily he happened to be in the office he does not give en try pass.

8. Mr. Mehta is always rude wi th the office bearers of the union and with the workers in general .

9. He is not accepting letters from workers and union officials. Conquently the workers had bee n forced to go to General Manager 's office for this purpose. which is situated at distance place. It will not be out of place to mention here that that since the formation of the union Mr. Meh ta is trying here his utmost toharass our activities and workers in gener l ,We had brought this fact in the notice of the managing agen ts of Delhi Cloth Mills and Sh. P.D. Mehta ,Labour Inspector Bhiwani but unfortunately this man is failed to develop proper sense.

Now circumstances h ave forced me to approach your honour kindly take immediate s teps in connectionwith this letter.

Yours faithfully

sd- General Secretary

x 12 NOV 1959

MEMBER OF
THE LOK SABHA

14/6, Gariahat Road.
Calcutta 19
3.7.59.

(261)

Dear Comrade Dange,

I am writing to congratulate you on the decision to held the Conference of the United Independent Textile Union and specially welcome is the news that you propose to raise there the question of the largescale retrenchment of women workers in the textile mills.

During the course of the last month I have been going round the tea plantations of Darjeeling with the help of the Chia Kaman Mazdoor Union and meeting the women workers. I had the oppotunity of meeting more than 300 tea garden workers in Peshok, Dheotria, Margaret, Hope, Goomti and Mirik (near borders of Nepal) area. Some of the women workers are excellent militants and have participated in many struggles. But inspite of the fact that Nepali women suffer from very few social restrictions, I found that except three or four the others were very shy and reluctant to speak about even their own sufferings and problems. It occured to me that their loyalty as Trade Union militants needed to be developed to enable them to become politically conscious organisers of the movement. For this, there was need to bring them into day to day movement and to take up specifically problems which affect their lived as women workers.

After that I went to Gua Iron Ore area to attend their Annual Conference. I wish you were there, because the open session was really something worth seeing. For the entire people of Barbil and Gua area, a Conference of this type was a new experience, although from our point of view, it was far from a well organised and prepared Conference. Here for the first time, I insisted on holding a Women Workers Session. Women had come from Manoharpur, Chiria and Gua and it was more of a meeting of representatives than a mass meeting. We have discussed some of [illegible], retrenchment, drinking water and housing. as well as certain socially oppressive customs which affect the lives of these tribal women. Some of the women are excellent material, but as yet are so shy and backward, and I feel they will remain so, unless they are organised into day to day activity on issues which affect them directly, besides of course the general demands of the Trade Union, in which they take a leading part.

In these areas, although women form a substantial number of workers, they do not get equal wages. In teagardens although women are acknowledged as the best pickers, they get Rs 1/5 as minimum wages while men get Rs 1/6. Ofcourse they have done the trick of keeping the average "thika" a little higher for men. Sometimes of course even this is not done.

In iron ore, I found the lowest wage for a reza kamin is 0-7-0 while coolies get between 0-9-0 and 0-11-0 per day. In Manoharpur gang rejas get about 0-10-9 while gang coolies get 0-13-0. In Gua contractor labour rejas get 1-1-0 while coolies get 1-3-0.

Another burning problem in iron ore and manganese belt is the

question of unemployment. Arising out of mechanisation and the quarrel that has ensued between the STC and the private mine owners, there has been largescale closures of mines as well as retrenchment. In view of the fact the mineowners carry out their mining operations overwhelmingly through contract labour, they are often escaping paying layoff and retrenchment benefits. Women form a large part of this unemployed labour force. In Barbil area there are about 10.000 workers men and women who are idle. In Tata's iron ore mines at Noamundi they have given retrenchment notices I believe to 5000 workers. In Gua, due to automation 500 workers (almost entire top-hill workers are now replaced by mechinised mining) are unemployed. Whenever automation takes place women are never taken back. Recently at Bhurkunda you must have seen how N.C.D.C. has retrenched ~~all~~ its women workers and refused to give them alternative jobs.

The question posed by the employers before the working class is: Either make cheap woman power available to us and if T.U. movement is strong, social labour laws like maternity benefit, creches, limited hours of work etc can be grudgingly extracted, but if equal wages are enforced and also social laws are to be implemented, then Women labour will be retrenched.

This is the challenge posed by the employers re the demand for Equal pay and protection of the motherhood of the working woman. Hence it is necessary to evolve an answer and pose a concrete slgan to prevent retrenchment of women labour. ~~In~~

My non-official bill on Equal Remuneration is under discussion in the Lok Sabha. We are organising a mass signature campaign in support of it. But in this Bill there is no safeguarding clause to protect women from retrenchment. I was proposing that there should be some sort of ban proposed in the Bill for a specified period after the Bill is passed, to be extended if necessary, when it will be incumbent upon employers to show cause why they want to retrench women workers and to get permission before retrenchment can take place. I find you have made the demand that a certain number of jobs in textile mills should be reserved for women workers. It is necessary to ~~have a correct~~ evolve a slogan to answer this offensive of the employers as a slogan of campaign.

From all this, I was thinking would it not be a good thing if we could call a Conference of Women Workers from the AITUC as well as from our women's organisation jointly? Here the problems which acutely face women workers such as retrenchment, equal pay, maternity benefit, creches, houses, could be discussed. These demands should get the support of all T.U and women's organisations

Also the question as how to activise women workers in day to day activity, the question of evolving for them a programme on issues which affects and interests them as working women besides the general Trade Union demands are important problems which have to be faced by us, if we want them to develop into advanced and politically conscious cadres and organisers. The question of forming Women's Sub-Committees of the T.U. or Mahila Samitis are being mooted and I would like to have your opinion on these matters. Please let me know about

these matters and if you can find time we can come and have a talk with you. I would like to have your advice in all these matters.

I do not know if I will be able to attend the National Council meeting as my mother has had an operation and is in hospital. Also the Estimates Committee is meeting just at that time. However I hope to be at the 17th Labour Conference at Madras, although the Government has not sent me any apapers.

With greetings to you and Tai. I hope she is well and Rosa's kids. I hope you are not overworking and are keeping as fit as possible under the circumstances,

Yours comradely,

Kesie

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन
KAPRA MAZDOOR EKTA UNION
Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi

U R G E N T

No.KMEU/GOVT/161/59. Dated:10th September,1959

The Hon'ble Shree Gulzari Lal Nanda,
Labour Minister, Government of India,
N E W D E L H I.

Dear Sir,

Sub: Open abetment of unfair labour practices by the Union Deputy Labour Minister.

We very much regret to have to bring the following instance of patently partisan behaviour and open inducement to employers to indulge in unfair labour practice on the part of your Deputy Labour Minister Shree Abid Ali Jaffarbhai. At the very outset we would like to make it clear that the information forming the basis of this representation has come to us from sources which normally it would be difficult to disbelieve. Even then if any part or parts of the same prove to be wrong, we would have no hesitation in correcting our understanding and making suitable amends to the Deputy Labour Minister for any mental injury which our allegation might cause him.

You, are perhaps, very well aware that the Ajudhia Textile Mills, Delhi, declared a closure effective from 11th June,1959. Prior to this the management had served a one-month notice on the workmen and the two Unions (affiliated respectively to the I.N.T.U.C. and the A.I.T.U.C.) announcing their decision to close down the mills on the alleged ground of un-economic working. Thereupon the majority of the workers represented by this Union challenged the bona fides of this decision of the management before the Government

Contd.....P.2

Conciliation Officer, Delhi. The Union alleged that intention behind this action of the management was to blackmail or intimidate the workers into the acceptance of their often repeated demand to agree to a cut or reduction in the existing wage rates, or at least to voluntarily forego the gains accruing to them under two separate awards of the Hon'ble Labour Appellate Tribunal of India given in favour of the workmen. These two awards, of which brief details follow, are currently the subject-matter of two separate appeals filed by the management before the Supreme Court of India. They are:

(i) Civil Appeal No.438 of 1956--(Ajudhia Textile Mills, Azadpur, Delhi, appellants; Vs.Their workmen-- in the matter of Reference No. 1(141)/53-E.I&L, dated 24-8-53 regarding retrenchment compensation to the workmen) from the award of the Hon'ble Labour Appellate Tribunal of India;

(ii) Civil Appeal No.425 of 1956 (Ajudhia Textile Mills, Azadpur; Vs. Their workmen, in the matter of Reference No.1(134)/54 E.I&L, dated 4-10-54 regarding restoration of cut of Rs.8/- p.m.imposed on the workmen) from the award of the Labour Appellate Tribunal of India in appeal No.III-280/281 of 1955.

In addition to the above-mentioned appeals pending in the Supreme Court the following disputes are also pending before the Industrial Tribunal Delhi;

(i) Reference No.F.10(14)/58-I&L, dated 3-3-58 (listed as I.D.No.70 of 1958, regarding introduction of a gratuity Scheme for the workmen in the entire Cotton Mills industry in Delhi):

(ii) Reference No.F.24(2)/59, I&L, dated 30-5-59 (listed as I.D.No.416 of 1959)regarding the fides of the closure notified on 11-5-59 and the claim for relief by workmen;

The Kapra Mazdoor Ekta Union is the principal party to the disputes pending in the Supreme Court, while in case of the later two references, pending before the Industria Tribunal, Delhi, it is the only party sponsoring the workers' case. The last mentioned reference was made by the Delhi

Contd.....P.3

Administration consequent upon the failure of Conciliation proceedings initiated on the representation of this Union.

As already stated, despite all this, the mills did close down on 11-6-59 throwing out of employment over 1,200 employees. The workers thereupon started agitation for securing the re-opening of the mills. Both the major Unions, namely, the I.N.T.U.C. affiliate Textile Mazdoor Sangh representing a minority of workers and the A.I.T.U.C. affiliate Kapra Mazdoor Ekta Union, representing the majority of workmen, sponsored and backed the agitation. Scores of mass deputations of workers led by the office-bearers of this Union waited on the Hon'ble Shree L.B.Shastri, Minister for Commerce in the Union Cabinet; M.M.Shah, Minister for Commerce & Industry Union Government, and Shree Abidali Jafferbhai, Deputy Minister for Labour, Government of India. The undersigned also got in touch with Shree M.M.Shah, Minister for Commerce & Industry on a number of occasions and requested him to take action under the Industries (Development & Regulation) Act to secure the re-opening and re-start of the Mills.

The Deputy Labour Minister has all along been keeping in touch with the developments in the dispute. But although he was good enough to meet representatives of this Union on a number of occasions, he was careful enough not to take them into confidence as to what was really happening behind the scenes. As against this the Deputy Labour Minister had very often been sending for and discussing the situation with certain I.N.T.U.C. representatives, notably Shree Sumer Chand and fully taking them into confidence as regards the course, or the trend, of negotiations that were being held between the Government and different parties who seem to have come into the picture at different times

Contd.....P.4

in connection with the taking over of the management of the mills. Now and then the Union also got some news about what was taking place, but the Deputy Minister made it a point never to let anything leak out to our representatives beyond assuring them that the Government is doing its duty in the matter. An enquiry was ordered into the affairs of the mills, and the I.N.TU.C. representatives were promptly informed of this. Attempt was made to keep us out of this enquiry. All the negotiations with the previous management or other parties interested in taking over the mills, were held behind our back while representatives of the I.N.T.U.C. were always made parties to such discussions and negotiations held at the Governmental or Secretarial level. In short every effort was made to relegate us to the background and project certain leaders of the local I.N.T.U.C. as the sole spokesmen on behalf of the labour. We watched all these underhand dealings silently and patiently out of our sincere desire that nothing should be done to hinder the re-opening of the mills no matter whom the Government liked to consult on behalf of the labour, so long as the advice tendered corresponded with the demands or wishes of the labour. It was humiliating enough for us when every day some I.N.T.U.C. worker on the other brought fresh news to the workers about what was happening at the 'higher levels' and how the I.N.T.U.C. representatives alone had the privilege to represent the workers while the most representative industrial Union of Textile workers, the Kapra Mazdoor Ekta Union, did not have the good fortune of being called even once for consultations.

The climax in this game of partisan politics came when certain leaders of the I.N.T.U.C., led by Shree Sumer

Contd.....P.5

Chand formed or rather nominated a so-called "Action Committee" of some mill-workers belonging to the I.N.T.U.C.— sponsored Union. It was announced by Shree Sumer Chand that this Committee will enjoy the sole privilege to speak on behalf of the workers in any negotiations with the Government or a provate party whoever took over the management of the mills— for restarting the same. At first we disregarded this noisy propaganda as a part of the usual canvassing done by Unions. But later it became clear that this bogus Committee had been brought into being at the behest of the higher-ups, particularly the Deputy Labour Minister. This 'Committee' had no backing of even the I.N.T.U.C. affiliate, Textile Mazdoor Sangh, which fact became clear afterwards, when the President of the later organisation repudiated it.

From the time Government of India in the Ministry of Commerce decided to hand over the management of the Mills to a private Managing Agency firm, M/S Karam Chand Thapar, this bogus Committee was directly brought into the negotiations which took place between the outgoing and incoming managements on the one hand and the Government on the other. The 'Committee' was brought in as the third party 'representing' the labour. Terms of a five—year agreement were drafted and settled among the three parties—Viz: the new management, M/S Karam Chand Thapar, the Government and the labour(as represented by the nominated 'Action Committee'). It is reliably understood that Shree Abidali assured the new management that the 'Committee' fully represented all the workers of the Ajudhia Mills and that management should deal with it as such. The Deputy Labour Minister went to the extent of directing the Conciliation Officer of Delhi Administration to register the so-called 'agreement' finalised between the new management and the 'Action Committee' with his (the Deputy Labour Ministers')

Contd.....P.6

blessings. This 'agreement' a copy of which is being enclosed herewith, binds the workers not to raise any dispute nor ask for any increase in wages or other allowances or service benefitsfor five years. The most astounding, feature of the 'agreement' is that it attempts to commit the workers to the withdrawal of pending cases before the Industrial Tribunal and also to foregoing of considerable cash benefits in the form of an increase in D.A. by Rs.8/- p.m. due to them under an award of the Labour Appellate Tribunal, an appeal from which, filed by the management, is currently pending before the Supreme Court. As has already been stated that the Kapra Mazdoor Ekta Union, being the most representative Union of the workers is the principal party to these disputes and no one else is legally or otherwise competent to compromise these matters without the express authority of this Union. It passes ones' comprehension how the Deputy Labour Minister of the Government of India could be a party to the commission of such a patently illegal and highly objectionable act as that of extorting an 'agreement' from workers through a thoroughly bogus agency. In fact, apart from the legal untenability of such an agreement on grounds of serious want of locus-standi of the so-called 'Action Committee' in the matter of compromising pending cases, the action of the parties or persons promoting such an agreement is tantamount to impersonation fraud or cheating.

Leaving aside the legal in validity or impropriety of the action of Shree Sumer Chand and his so-called action 'Committee', patronised by the Deputy Labour Minister, the basic issue that arises is whether and to what extent the afore-mentioned underhand and highly partisan activities of all the three are, conformity with the ethices of Trade Unionism as concertised by the Indian

Contd.....P.7

Labour Conference in the 'Code of Discipline'. It is to this aspect of the matter more than to any other that we wish to pointedly draw your attention. The Deputy Labour Minister knows only too well that the Kapra Mazdoor Ekta Union is very much in the picture, and that it is the biggest and most representative Union of workers employeed in the Cotton Textile Industry in the Union territory of Delhi, that it is the principal party to all the disputes pending before various courts, that it has considerable following in the Ajudhia Textile Mills and that it is powerfully backing the agitation launched by a large number of its members employeed in the Ajudhia Mills. How could he in the face of this stark reality chose not only to ignore this Union altogether, but to positively cause to be taken measures calculated to undermine the very basis of trade unionism and collective bargaining. Even a cursory study of events is sufficient to convince any reasonable person that the whole purpose at the root of these' behind the curtain' moves was to by-pass the Kapra Mazdoor Ekta Union, impair its prestige, wean the workers away from its influence by foisting upon them a an officially backed and patronised "Action Committee" on whom they should in future look for guidance and protection.

Fortunately the news of all these secret parleys leacked out to the workers, who to a man opposed the, idea of having such a damaging agreement foisted upon them through a bogus Committee'. That this 'Committee' did not represent any one but a few personal admirers and favourites of Shree Sumer Chand, leader of one of the factions of the local I.N.T.U.C. Will be clear from the fact that even the local Branch of the I.N.T.U.C. Union repudiated the 'agreement' as having been entered into by unauthorised persons. They have demanded that the management should settle with duly

Contd.....P.8

constituted Unions and not with any mushroom group or groups of a handful of workers.

As you will kindly appreciate, the conduct of the Deputy Labour Minister in this unhappy episode has been one fully tainted with pertisan feelings and prejudices towards an important affiliate of the A.I.T.U.C. It is totally at variance with the declared policy of the Government to encourage unionisation of workers, and in violent conflict with the spirit of the Code of Discipline. We request that the matter be enquired into thoroughly and serious apprehensions of the workers with regard to the policies and practices of the Government allayed.

Yours faithfully,

(B.D. JOSHI)
GENERAL SECRETARY

KUMAR

Copy forwarded for information to Shree Jawahar Lal Nehruji, Prime Minister of India, New Delhi.

Encl: 1

12 SEP 1959

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन
KAPRA MAZDOOR EKTA UNION

Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi

U R G E N T

No.KMEU/AITUC/182/59. Dated: 12th September,1959.

Dear Com.Srivastva,

Enclosed kindly find copy of a representation which our Union has made to the Union Labour Minister, Shree Gulzari Lal Nanda, complaining against the highly partisan conduct of the Deputy Labour Minister Shree Abidali Jaffarbhai. As you will see the allegations contained in the communication raise issues of far reaching consequence to the functioning of AITUC Unions in Delhi. As such the matter should, in my humble opinion, be taken up by the AITUC with the Government.

I request that you will kindly bring it to the personal notice of Com.Dange for his opinion and advice.

Yours Comradely,

(B.D.JOSHI)
GENERAL SECRETARY

KUMAR

Shree K.G.Srivastva,
Secretary,
All India Trade Union Congress,
4- Ashok Road, New Delhi.

P.S. I wonder whether it would be appropriate at this stage to give this publicity through T.U.R. and also whether it could be made subject-matter of interpellations in the Parliament.

Copy with a copy of the enclosure forward to:-

Shree A.C.Nanda, Secretary, Delhi State Committee of All India Trade Union Congress.

25 SEP 1959

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन
KAPRA MAZDOOR EKTA UNION

Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi

U R G E N T

No.KMEU/GOVT/195/59. Dated: 23rd September, 1959.

The Hon'ble Shree Gulzari Lal Nanda,
Union Minister for Labour & Employment,
Government of India,
New Delhi.

Dear Sir,

Sub: Abetment of unfair labour practice and violation of Code of Discipline by the Deputy Labour Minister.

In continuation of our representation No.KMEU/GOVT/121/59 dated 10th September, 1959, on the above subject, I am desired to bring to your urgent and serious notice that the Labour Ministry, under orders of the Deputy Labour Minister, Shree Abidali Jaffarbhai, has, far from crying a halt to their highly objectionable illegal and patently disruptive policies adopted by them in the matter of Ajudhia Mills dispute, since redoubled their efforts to coerce the workers into accepting the leadership of small group of discredited I.N.T.U.C.-men. We had in our previous communication fully narrated the circumstances in which the Deputy Labour Minister has been personally interfering in the trade union life of the Ajudhia Mill workers and utilising all his personal as well as Governmental influence and resources to compel the employers to negotiate with a group of I.N.T.U.C.-men and altogether ignore the biggest and the most representative industrial Union of Textile Mill workers- viz The Kapra Mazdoor Ekta Union. Since we addressed the aforementioned communication to you, serious developments have taken place fully exposing the discreditable and grossly partisan role of the Labour Ministry under the guidance of the Deputy Labour Minister.

Contd.....P.2

Notwithstanding secret official advice or directives to the contrary, the new management of the Ajudhia Mills, M/S Thapar Bros, found it, impossible to ignore this organization simply, because they discovered (again contrary to the 'information' given to them by officials of the Labour Ministry) that the Kapra Mazdoor Ekta Union represented a substantial majority of the Ajudhia Mill workers. They also were perhaps advised by their legal advisers that they would be placing themselves on the wrong side of the industrial law if they compromised with a third party the various industrial disputes pending in the Supreme Court or before the Industrial Tribunal, to which the Ekta Union is the principal party. The Management also discovered that they had been deceived into entering into, certain 'understandings' and 'verbal compromises with only one of the factions of the local I.N.T.U.C. affiliate Textile Mazdoor Sangh i.e. the faction directly led by Choudhri Brahm Prakash ignoring the other and more important faction consisting of the President of the Textile Mazdoor Sangh, and some and other important leaders. The management, therefore, hastened to retrieve their non-too-happy position by inviting representatives of the Kapra Mazdoor Ekta Union and also of other group of the I.N.T.U.C., lead by Shree M.L.Mittal, for negotiations connected with the reopening of the Mills. Representatives of the two Union — The Ekta Union and the Textile Mazdoor Sangh — had a 6 hour long meeting with the management in the office of the Government Conciliation Officer, Shree S.P.Joshi on the Thursday the 17th September. On the insistence of the management negotiations proceeded on the basis of a draft-agreement understood to have been secretly prepared in consultation with the Deputy Labour Minister in the presence of Mr. Summer Chand of the I.N.T.U.C. Representatives of the two Union proposed a number of amendments to the said draft. It might be mentioned here that the Union had

Contd.....P.3

somehow obtained a copy of this draft even before that and had even enclosed one with our letter No.KMEU/GOVT/181/59 dated 10-9-59, addressed to you. Besides proposing a number of minor amendments and additions, the two unions demanded that arrears of D.A. @ Rs.4/- p.m. be paid to each and every employee as a condition precedent to their agreeing to compromise Civil Appeal No. 425 of 1956 (Ajudhia Textile Mills) pending before the Supreme Court of India. The Unions also wanted some lay-off compensation for the period the mill has remained closed after 11th June, 1959, in addition to every worker being given his earned leave with wages, etc. As all these demands involved an expenditure of 2-3 lakhs of rupees Mr. Sehgal, the representative of the Company, wanted 2 days' time to consider the proposals and put them up to his principals. He however, agreed to some minor adjustments like payment of E.S.I.C. contribution and to some verbal modifications in the draft. It was thereafter agreed that the parties would meet on saturday the 19th instant, as Mr. Sehgal was expected to go out of Delhi on 18-9-59.

When I.N.T.U.C. gentlemen lead by Sh.Sumer Chand came to know of the negotiations in the Conciliation Officer, they are understood to have met Mr. Abidali or some other Officersof the Labour Ministry and apprise them of the situation. Naturally these so-called leaders were afraid that they would get discredited if the Ekta Union in collaboration with the Mazdoor Sangh were able to secure better terms for the workers than the ones embodied in the draft agreed to by them and the Labour Ministry. Sensing danger to their very existence they prevailed upon the Deputy Labour Minister or his secretaries to issue a confidential and urgent communication to the Management almost warning them of adverse consequences if they did not forthwith conclude a settlement jointly with the bogus

Contd.....P.4

'Action Committee' nominated by Mr. Sumer Chand & Co., of I.N.T.U.C. and the I.N.T.U.C. affiliated Union. These preposterons instructions are contained in a confidential letter No. LR-(iv)-7(21)/59 dated 17-9-59, purporting to have been issued under order of the Deputy Labour Minister , and signed by Mr. Teja Singh Sahni, Deputy Secretary, Ministry of Labour.. Although the management had already commenced negotiations with the representatives of the Ekta Union and the majority group of the I.N.T.U.C. Union, it was compelled under such threats to break off those negotiations. Instead the Conciliation Officer of the Delhi Aministration was orally directed by the Ministry to forthwith summon the management and the bogus 'action Committee' and the Summer Chand Group of the INTUC and register an agreement in terms ofthe draft secretly approved by Mr. Abidali, etc. The Conciliation Officer, Mr. S.P.Joshi, complied with these instructions and got the agreement signed by all the three parties in his office in strict secrecy on Friday the 18th September. The President of the I.N.T.U.C affiliate Textile Mazdoor Sangh who himself had not been taken into confidence in the matter, was hastily summoned to the Conciliation Office and prevailed upon to put his signatures to the so-called 'agreement' evidently without being apprised of the contents of the "same".

When the news about some 'settlement' having been arrived at behind the back of the Ekta Union reached the workers they were full of apprehensions and resentment. There was lot of agitation for the contents of the 'agreement' being made known to the general mass of workers. Compelled by the pressure of of workers INTUC leader Sumer Chand had to come to the mills gate and announce terms of the 'agreement'. Being aware of the fact that he and his group of INTUC-men did not enjoy the confidence of the workers and had no locus standi whatever to enter into any settlement on behalf of the workers, Mr. Sumer Chand grossly distorted the terms of the 'agrement' and tried

Contd......P.5

to present them in a form which might be palatable to the workers. In doing so however he overshot the mark and falsely assured the workers that the management had 'agreed' to pay to all the workers arrears of D.A. (due to workers under an award of the L.A.T.) @ of Rs.4/-p.m. with retrospective effect from 1956. This was done to entice the workers into agreeing to withdraw all the references pending before the Supreme Court and the Industrial Tribunal at the instance of the Ekta Union. A large section of the workers however, did not believe it and wanted the 'agreement' to be read out to them verbatim. This unnerved the INTUC leaders who had to go away without satisfying the workers.

It was at this stage that another most astounding thing, casting grave reflection on the honesty, impartiality and intergrity of the Government Labour Machinery took place. Representatives of the Kapra Mazdoor Ekta Union and some INTUC workers approached the Conciliation Officer and wanted that they should be apprised of the contents of the 'agreement' promoted by him between the I.N.T.U.C. leader and the management. The Conciliation Officer declined to comply with the request. In vain did we try to convince him that if the mill was to be re-opened and run peacefully it was imperative that the workers should be fully and faithfully apprised of the terms of the agreement. Evidently he was under instructions from 'above' to keep the terms of the agreement a secret even from the vast majority of workers whom the Kapra Mazdoor Ekta Union represents. Failing to persuade the Conciliation Officer to discharge his lawful duty towards the workers, the Union had to place the whole matter before the general mass of workers, who with one voice refused to accept any agreement reached behind their back and behind the back of their accredited representatives. At this stage another startling fact came to light. The President of the I.N.T.U.C affiliate, Shree Karan Singh

Contd.....P.6

announced that his signatures had been obtained on the 'agreement' under false pretexts. Another important worker of the I.N.T.U.C. Shree Kali Charan , who in his capacity as a member of the Works Committee of the Mills was expected to sign the agreement, announced that since the 'agreement' had been entered into without taking the workers into confidence, he was not prepared to be a party to it. At this stage the management also announced that as all the persons expected to sign the 'agreement' had not done so, the same could not be given effect to. The management also told Union representatives that the actual terms of the agreement were not the same as announced by the I.N.T.U.C. leader Sumer Chand. The situation thus became totally confused.

The Union had in this situation to call upon the workers to exert necessary pressure upon the Government Conciliation Officer either to clear the whole mystery of the secret 'agreement' or to promote a fresh and equitable settlement between the management and representative Unions of the workers. Consequently hundreds of workers reached the Government Labour Office on Monday the 21st instant and waited upon the Conciliation Officer and asked him to acquaint them with the terms of the 'agreement' entered into on their behalf by I.N.T.U.C. leaders of the Sumer Chand group. The Conciliation Officer turned down their request without assigning any reason therefore. This filled the workers with resentment and they squatted before the room of the Director of Labour & Industries. They peacefully dispersed after the latter officer assured them that no agreement which did not have the sanction or approval of their representative Union will be registered by him, and agreed to convene a joint meeting of the management and accredited representatives of the two Unions the next day— i.e. on 22nd September, 1959

Contd.....P.7

The next day over a thousand workers assembled in the office of the Director of Labour & Industries and squatted before his office from 10 a.m. to 3 p.m. Inside the office a joint meeting of the representatives of the Unions and the management in the presence of the Director of Labour & Industries and the two Conciliation officers of Delhi Administration took place from 11-30 a.m. to 2-30 p.m. The managements' representative, Shree Sehgal made it plain in this meeting that he had entered into the 'agreement' with M/S Sumer Chand & Co., as he was assured by 'higher-ups' that the latter fully represented the workmen. He also charged the Labour adminstration and the INTUC with having played foul with the management. On our persistent demand both Mr. Sehgal and the President of the INTUC affiliate Textile Mazdoor Sangh agreed that the 'agreement' entered into secretly on 18/9/59, should be made known to representatives of the Kapra Mazdoor Ekta Union and certain other leaders of the local INTUC who had been kept out of it. But despite all this, both the Sumer Chand group of the I.N.T.U.C and the Conciliation Officer remained adamant on their throughly illegal, unreasonable and anti-working class stand that the 'agreement' should not be made public. Ultimately the Officiating Director of Labour & Industries decided that the agreement should be treated as null & void and a fresh agreement be negotiated between the lawful representatives of the representative Unions and the management. Terms for a fresh agreement were proposed from the side of both the Ekta Union and of the other section of I N T U C lead by Mr. M.L.Mittal. The management was given time by the Labour Director to study the proposals and give a reply urgently. The meeting was adjourned to the next day. The proposals are now said to be ~~reviewing~~ receiving the consideration of the Managing Agents.

Contd.....P.8

However, thanks to the partisan and disruptionist tactics of the Labour Administration, the workers had been so much harassed and tossed about from pillar to the pole, that they refused to disperse and vacate the office building, till they were told something definite or at least till a decision was arrived at with ~~xxxx~~ regard to the payment of their earned wages for the months of April— June, 1959, withheld by the previous management. The self-appointed leaders of the I.N.T.U.C. union had no guts to speak to the workers. Our Union leaders had at last to plead with the workers and succeeded in securing their peaceful withdrawal from the Office premises.

The above and rather lengthy recital of facts establishes beyond any doubt that:-

(i) That a secret understanding had been promoted under the guidance of the Deputy Labour Minister between the Management of the Mills and one of the groups of the local I.N.T.U.C. (lead by Mr. Sumer Chand) with regard to the terms and conditions of service to be imposed on the workmen ~~to~~ of Ajudhia Textile Mills on the restart of the mills by the new Managing Agents;

(ii) That according to this understanding a number of benefits and rights of the workers were to be surrendered under an agreement drafted in consultation with the Sumer Chand group of the I.N.T.U.C. and the Labour Ministry;

(iii) This secret 'agreement' was to be formalised and legalized by presenting the same before the Conciliation Officer, Delhi who was informally ordered from above to register it under the Industrial Disputes Act as having been duly entered into between the I.N.T.U.C. Union & the management. Contd.....P.9.

(iv) The INTUC Union as represented by Shree Sumer Chand would alone be allowed the privilege of representing the entire body of workmen of Ajudhia Mills and the Kapra Mazdoor Ekta Union would be kept out out of the negotiations and settlement by hook or by crook;

(v) The Government would guarantee that any 'agreement' 'settlement' or arrangement entered into between a particulsr (local) I.N.T.U.C. group and the management is accepted as final and binding on all the workmen and the Government will not entertain any demand or dispute from any other Union howsoever representative in character;

(vi) The 'agreement' to be so registered would be kept a closely guarded secret from the general mass of workers and the Kapra Mazdoor Ekta Union till such time as the INTUC group of Mr. Sumer Chand is able by holding out false promises and by misrepresenting terms of the agreement, to lure the workers into putting their seal of approval to the unrevealed contents of the 'agreement' and into actually restarting the mills;

(vii) When the management faced with the hard realities of the situation found it impossible to ignore the Ekta Union and had to start negotiating with it, the Labour Ministry in pursuance of the earlier secret understanding and in response to an S O S from M/S Sumer Chand & Co. issued a directive to the management to go ahead according to the settled plan and conclude an agreement with the I.N.T.U.C alone—— This directive is contained in the Labour Ministrys' letter No. LR-(iv)-7(21)/59, dated

Contd.....P.10

17-9-59, addressed to the Managing Agents of the Mills (M/S Thapar Bros.).

It would thus be seen that the Labour Ministry under the guidance of the Deputy Minister for Labour has been grossly misusing its influence and resources for the purpose of foisting on the workers a discredited group of I.N.T.U.C. leaders. It has in addition conspired against the most representative workers' organisation with a view to impairing its prestige and standing in the eyes of the workers— because it happens to be an affiliate of the AITUC. The aforementioned policies and actions of the Ministry a and the Deputy Labour Minister amount to a grosaly unfair and illegal labour practice and constitute a grave violation of the Code of Discipline.

The continuance of such policies and practices by the party in power constitute a serious threat to the growth of democratic trade Union movement of the co country and, unless checked effectively, would be tantamount to a total negation of the provisions of the Indian Constitution with regard to the right of association and organisation. A dispassionate study of the circumstances of this case is sufficient to convince any one that the Labour machinery of the Central Government is being illegally and unconstitutionally utilized for grossly partisan ends. We again request you to institute an enquiry into these very grave charges.

A deputation of the representatives of the Union would in this connection like to wait upon you to discuss the matter. It is requested that you will

Contd.....P.11

कपड़ा मजदूर एकता यूनियन

be pleased to spare some of your valuable time for the purpose.

Yours faithfully,

(B.D.JOSHI)
GENERAL SECRETARY

KUMAR

Copy forwarded for information to Shree Jawahar Lal Nehru, Prime Minister of India.

Copy with a copy of the previous letter forwarded to Com. S.A. Dange, General Secretary, All India Trade Union Congress, 4-Ashok Road, New Delhi.

(Copy of previous letter already sent with a letter no. KMEU/AITUC/182/59 dated 10-9-59.)

25 SEP 1959

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन
KAPRA MAZDOOR EKTA UNION

Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi

No.KMEU/GOVT/196/59 Dated: 24th September, 1959.

The Director of Labour & Industries,
1-Rajpur Road,
D E L H I.

Dear Sir,

Sub: Direct encouragement to unfair labour practices.

I am desired to address the following protest note to you with regard to certain highly objectionable and illegal steps taken by the Conciliation Officer in lending his good offices to further certain patently partisan ends in the matter of settlement the current dispute between the workmen of the Ajudhia Mills and its new management.

In this connection it may be mentioned that a certain group of the local I.N.T.U.C.men have without any authority nominated a so-called "Action Committee". This 'Action Committee has no representative capacity in any sense of the term in as much as the vast majority of workers of the Mills, including over 600 members of this Union have had no hand in 'electing' any such body. It is a bogus body brought into being with the sole intention to displace or dislodge the Ekta Union from its present position of the most representative organisation of not only the Ajudhia Mills workers but of the entire labour force employed in the Cotton Textile Industry in the Union territory of Delhi. For sometime past attempts have been going on to extend 'official' recognition to this 'bogus' Committee and to promote a 'settlement' with the workers through it. We had already warned both the management and the Government of the consequences of illegal imposition of such a body on the workmen, especially when strong and representative Unions of workers are very much in existence—Vide endorse-

Contd.....P.2

ment on our letter No.KMEU/AM/175/59 dated 10-9-59 addressed to the management of the Ajudhia Mills.

We regret to say that despite our written and oral warnings and notwithstanding unmistakable indications given to him by hundreds of workers, the Conciliation Officer summoned the Management and some members of the aforementioned bogus Committee along with a section of the INTUC lead by Mr. Sumer Chand, to his office on 18-9-59 and got the parties to sign an'agreement' the many of the terms of which had been seriously objected to by representatives of our Union as well as by an important section of the I.N.T.U.C. affiliate Textile Mazdoor Sangh in the Conciliation meeting held in his office the previous day — i.e. on the 17th September, 1959, from 2 P.M. to 7.30 P.M. On the latter date the management had taken due note of our objections and amendments to the draft agreement proposed by them— which draft agreement was itself a product of a secret understanding earlier reached between Mr. Sumer Chand and some members of the bogus action committee at the instance of persons in higher quarters. At the end of our joint meeting with the management on 17-9-59 it had been agreed that the representative of the Management Mr. Sehgal, will consider and if necessary consult his principals on certain counter-proposals made by the representatives of the two Unions and would be in a position to give a definite reply on Saturday the 19th instant or Monday the 21st instant. Among the more important issues over which strong difference of opinion persisted were:

(i) The Unions' proposal that the management should agree to pay D.A. arrears at an agreed rate (ranging between Rs.4/-p.m. to Rs.6/- p.m.) to all the workmen irrespective of whether or not they were in mill employment at the point of time L A T award regarding enhancement of

Contd.....P.3

quantum of D.A. by Rs. 8/- p.m. came into operation; This was a condition precedent to the withdrawal of the case (Civil Appeal No.425 of 1956) pending in the Supreme Court;

(ii) The workers' representatives wanted that some compensation, may be on an ad-hoc basis, should be paid to the workers for the lay-off period commencing from 11th June, 1959;

(iii) The Union representatives also insisted that the workers should be treated as on duty during the period of their enforced idleness commencing from 11-6-59, for purpose of leave with wages admissible to them under the Factories Act;

(iv) The Union representatives wanted that for future the existing rate of D.A. should be stepped up by Rs.6/- instead of Rs.4/- p.m. offered by the Company; etc, etc.

On the other hand the management had indicated their readiness to consider favourably certain other proposals, involving verbal changes or payment of small amount like E.S.I.C. contribution in respect of the period after 11-6-59.

Instead of continuing the proceedings, as decided on 17-9-59, the Conciliation Officer thought it fit to assist in finalizing the rejected draft agreement between a few members of the bogus "Action Committee" and a section of INTUC workers, in strict secrecy on 18-9-59. It was a big surprise for the workers as well as for our Union to be told on the evening of 18-9-59 that an 'agreement' had been signed between the above parties in the presence of the Conciliation Officer. Evidently this was done with careful and deliberate planning, and we were kept entirely in the dark about these illegal Conciliation proceedings.

Contd.....P.4

Nor were the workers taken into confidence by the self-appointed leaders of the Sumer Chand group of the I.N.T.U.C.

Naturally a wave of distrust, suspicion and resentment swept through the large majority of workers who had been virtually 'besieging' your office since 21-9-59, to find out what are the contents of the agreement. Our Union representatives have also repeatedly approached you and the Conciliation Officer with a view to find out what are the terms and conditions of service agreed to on behalf of the workers. Even an influential section of the local INTUC affiliate, Textile Mazdoor Sangh have been demanding that the contents of the so-called 'agreement' should be made known to the workers. But it is a matter of great surprise and regret that the Conciliation Officer has all along refused to divulge the the contents of the 'agreement'. It is highly objectionable and patently illegal for the Co to keep the 'agreement' secret even from the workers whose service conditions are to be governed by it. Evidently this is something very much fishy about it all. We understand from reliable sources that under the terms of the 'agreement' a number of financial benefits and rights of the workers have been surrendered by the self-appointed leaders. The plan was to hold out false promise to the workers that all the terms and conditions put forth by them through the Ekta Union and through Mr. Mittal of the INTUC have been conceded to under the 'agreement'. The plan further was that the management would obtain workers' signatures on a form signifying the workers' assert to the 'agreement'.

This plan, however, misfired the moment the workers' came to know that the 'agreement' had been arrived at behind the back of the Ekta Union and even the

Contd.....P.5

brazen lies of Mr. Sumer Chand & Co about the 'substantial benefits' workers were going to get under the 'agreement' failed to steal their allegiance to the Ekta Union.

The aforementioned 'conspiratorial' and highly improper and illegal means adopted to foist on the workers the leadership of members of a certain group within the ruling party, and to deceive them into accepting the terms of an 'agreement' which till to-day — almost a week after it had been signed — have been kept a closely guarded secret from them, constitute a grave violation of Trade Union Law, practice and of basic principles of democratic trade unionism. In no less degree does it constitute a flagrant breach of the declared labour policies of the Government as concretised in the decisions of the 16th Indian Labour Conference.

We had to intervene in the squatting campaign started by over a thousand workers before your office on 22-9-59 against the attempts to impose an agreement on them without asertaining their wishes directly or through their accredited representatives. We did so on the clear undertaking given by your goodself that the 'agreement' is now no more than a scrap of paper. We also want to place on record the fact that both the President as well as the Joint Secretary of the INTUC affiliate Textile Mazdoor Sangh (M/S Karan Singh and Kali Charan besides their leader Mr. Mittal) have clearly stated before you and the management in the tripartite meeting on 22-9-59 that they have repudiated the 'agreement' as having been entered into by unauthorised persons. It was also alleged by Shree Karan Singh, President of the said Sangh that his signatures on the document were obtained by materially misrepresenting facts.

Contd.....P.6

कपड़ा मजदूर एकता यूनियन

We now understand that attempts to revive or resurrect the thoroughly discredited 'action committee' are still going on and an attempt is likely to be made again to have an 'agreement' registered behind our back. In this convection we wish to remind you ~~xxx~~ of your the definite commitment that any fresh agreement would be arrived at only with the participation of duly registered and functioning trade Unions of workers. We are awaiting a call from your office for further negotiations.

We hold regular authorization from over 500 workers to represent them in every matter.

In the circumstance we can only hope and request that you will see to it that the administrative machinery and the Trade Union or industrial law is not utilized to subserve the ends of any particular party or group of persons as has unfortunately been done during the past few weeks.

Yours faithfully,

(B.D.JOSHI)
GENERAL SECRETARY

KUMAR

Copies forwarded to:-

1. The Chief Commissioner, Delhi.
2. Shree G.N.Aman, Chairman, Labour Advisory Board.
3. Shree G.L.Nanda, Union Labour Minister, New Delhi.
4. Shree R.L.Mehta, I.A.S., Central Evaluation & Implementation Ministry of Labour, Government of India, New Delhi.
5. The General Secretary, All India Trade Union Congress, 4-Ashok Road, New Delhi.
6. The Provincial Secretary, Delhi Committee of A.I.T.U.C. Gaushala Gate, Kishenganj, Delhi.

GENERAL SECRETARY

28 SEP 1959

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन
KAPRA MAZDOOR EKTA UNION

Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi

(261)

FOR PUBLICATION — TRADE UNION RECORD & NEW AGE

AJUDHIA MILLS REOPEN

Abidali INTUC conspiracy failed

(1) An agreement between the representatives of the A.I.T.U.C affiliate Kapra Mazdoor Ekta Union and representatives of the Textile Mazdoor Sangh (I.N.T.U.C. affiliate) and representatives of the Ajudhia Textile Mills (M/S Karam Chand Thapar & Bros) in the presence of the Director of Labour & Industries and two Conciliation Officers of the Delhi Administration was signed on 25-9-59 after an 8½ hour long Conciliation proceedings.

(2) Over a thousand workers of the Mills (which has been under closure since 11.6.59) squatted peacefully before the Head Office of the Company; Thapar House at Queens' Way for 9 hours from 4 p.m. on 25-9-59 to 1.30 a.m. on 26-9-59 during which period the proceedings lasted.

(3) Representatives of Textile Mazdoor Sangh participated defying the ban of the local I.N.T.U.C. not to conclude a fresh settlement in supersession of the one that had been arrived at as a result of in-camera conciliation proceedings held on 18-9-59 under directions of the Union Labour Ministry, with the participation of representatives of Brahm Prakash group of local I.N.T.U.C. Branch (masquerading as an "Action Committee") and representatives of the management.

(4) The contents of this agreement, which was signed behind the back of the Ekta Union and the general mass of workers, were kept a closely guarded secret. But even the most luring, though totally false, promises held out by I.N.T.U.C. leaders with regard to the 'agreement' and the utmost pressure

Contd......P.2

exercised by the local Congress leaders and Shree Abidali Jaffarbhai, failed to entice the workers away in to restarting the Mills. The workers insisted that the contents of the agreement should be fully read out to them before they could make up their mind whether or not to honour it. The overwhelming majority of them also demanded that the Ekta Unions' endorsement thereon should be obtained before they are asked to consider it.

(5) Over a thousand workers virtually laid seige to the Labour Directorate of the Delhi Administration on the following dates —viz 21st and 22nd and compelled the Labour Director and Conciliation Machinery to call representatives of the Ekta Union for negotiations. They also demanded that the contents of the secret agreement should be divulged to them or representatives of the Ekta Union. The Conciliation Officer did not comply with this patently just demand of the workers but was at last compelled to yield to the pressure of the organised strength of the workers at the end of a 7 hour mass squatting campaign at the doors of his office, declaring that the agreement promoted by him between the representatives of the I.N.T.U.C. and the management on 18-9-59 would stand cancelled as having been concluded without authority and that a fresh agreement would be promoted between representatives of the Ekta Union and the official faction of the I.N.T.U.C. affiliate Textile Mazdoor Sangh.

(6) The management bitterly complained of having been misled and defrauded by the Labour Ministry in assuring them that any agreement arrived at between them and the I.N.T.U.C.

Contd.....P.3

sponsored "Action Committee" would be duly registered under the I.D.Act and that the Government would see to it that no demand, agitation or dispute raised by the A.I.T.U.C. affiliate Kapra Mazdoor Ekta Union would be countenanced by the Delhi Administration. They expressed surprise how the Labour Ministry could hold out such a promise and how it could direct them (Vide Ministrye' confidential letter No.LR-(iv)-7(21)/59, dated 17-9-59) to enter into an agreement with the local I.N.T.U.C. when it was not in a position to deliver the goods on behalf of the workers, overwhelming majority of whom unquestionably owed allegiance to the Ekta Union.

(7) Forced by the unbreakable unity of the workers organised under the Red Flag of the Kapra Mazdoor Ekta Union the management had also to declare through a notice put up on the mills gate that unless and until representatives of the Ekta Union also put their stamps of approval on the 'Agreement' arrived at on the 18th instant with representatives of the local I.N.T.U.C., they would treat the said agreement as null and void.

Consequently the Conciliation Machinery had to hold fresh Conciliation proceedings with the participation of Ekta Union representatives on 22-9-59 and on subsequent date.

(8) The agreement arrived at on 25/26-9-59 was notified by the workers at 1 p.m. at night, when it was read before them by the General Secretary of the Ekta Union, Com. B.D.Joshi, before appending his signatures to it. He was loudly cheered by the workers who gave their approval to the terms of the agreement by raising slogans and clapping of hands. Following are the main terms of the agreement:-

Contd.....P.4

(i) The new management (M/S Karam Chand Tahapar) appointed by the Central Government under Industries (Development and Regulation Act) would restart the Mills w.e. from Monday the 28th instant.

(ii) All employees in service on the date of closure would be taken in service. Services of the employees terminated by the previous management on 10-6-59 as a consequence of closure of the mills would be treated as continuous;

(iii) The new management would pay the workers their earned wages for the months of April, May and June, withheld by the previous management;

(iv) The rate of D.A. prevailing at the time of the closure of the mills would be stepped up by Rs.5/- p.m. w.e. from the date of restart and arrears of D.A. @ Rs.4/- p.m. would be paid to every employee w.e. from May, 1954 —for six years. (The amount involved is over Rs.2.50 lakhs.)
This is full and final settlement of the claim of the workers for increased D.A. due to them under an award of the L.A.T. given in 1956 — since pending before the Supreme Court on the pervious management's appeal;

(v) The new management would also make payment of Rs.25,000/- to the workers in full and final settlement of their claim for retrenchment compensation relating to the period October 1953 to April 1954 when the mills had remained closed, also awarded to them by the L.A.T. but the payment of which had been withheld due to the previous management having preferred an appeal to the Supreme Court of India.

Contd.....P.5

(VI) (10) The new management would also, as a special case, give leave with wages to every employee on the usual basis (one day for every 20 days' work) irrespective of of his total attendance during the calender year 1959. (Under Factories Act a worker has to put in 240 days' attendance to become entitled to leave with wages. In this case no worker could show 240 days' attendance due to the mills having remained closed for 4 months) (This involves payment of about Rs.42,000/-)

(VII) (11) The new management has also undertaken to pay the contribution of both the employer as well as of the employee towards the E.S.I.C. for the period the mills remained closed i.e. from 11-6-59 to 28-9-59, in order to safeguard that the employees continue to enjoy all benefits under the E.S.I.C. which they otherwise could not enjoy for a period of 9 months. (This involves payment of over Rs.8,000/-).

(VIII) (12) The management has undertaken to review the position vis-a-vis the workers' demand that rights of permanency should be conferred on a large number of employees kept on temporary or 'spare' list by the previous management.

(IX) (13) In view of the above agreement and in view of the fact that M/S Kuram Chand Thapar have taken over the Mills with the intention of renovating, modernising and expanding this old unit of the industry, the workers have agreed not to make any further demand involving fresh financial burden on the Company till the working of the mills results in profits. Without prejudice to this condition the agreement would run for a period

Contd.....P.6

of five years.

(14) The extent to which the I.N.T.U.C. had betrayed the workers could be realized from the fact that the 'agreement' concluded by them on 18-9-59 behind the back of the workers and the Ekta Union, excluded terms Nos: (iv) (v) and (vi) (regarding arrears of D.A. for 6 years, benefit of leave with wages and of E.S.I.C. contributions and retrenchment compensation). Moreover it did not contain any provision regarding permanancy of employment and specifically gave the management the right not to re-employ certain categories of workmen. The amount so given up comes to over 3.50 lakhs of rupees.

(15) But for the Ekta Unions' vigorous defence of the rights of the workers and the massive agitation launched by it against the diabolical conspiracy hatched by the Delhi Congress, I.N.T.U.C. and the Union Labour Ministry (under the directions of Mr. Abidali) against the unity of the workers and against the very existence of the Ekta Union in Ajudhia Mills, the workers would have been sold into virtual slavery for 5 long years. With the signing of the agreement the local I.N.T.U.C. and its reactionary leadership in the persons of Ch.Brahm Parkash and Brij Mohan Sharama, stands fully exposed isolated and thoroughly discredited. The Ekta Union for whose elimination this great conspiracy was hatched has emerged stronger from the ordial, gaining tremendously in prestige and winning ever so much affection and respect of the workers.

****

(B.D.JOSHI)
GENERAL SECRETARY

KUMAR

टेक्सटाइल लेबर यूनियन, ब्यावर (राज०) 8/10/59

पूर्व सं [illegible] सेक्रेटरी A.I.T.U.C. देहली.

आदरणीय साथी

हमारे यहाँ जो एडवर्ड मिल को चालू कराने सम्बन्धी तीन २ दिन का टोकन आन्दोलन चल रहा था वह अभी ता: ५-१०-५९ को समाप्त कर दिया है क्योंकि ता: ५ को एडवर्ड मिल पूरा चल गया है।

ता: ६-१०-५९ को एडवर्ड मिल के मामले में के. वे. सोमानी कमेटी आई थी उसमें हमारे बयान हो चुके हैं। हमने उस मिल के लिये रिसीवर बिठाने, बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर से भी [illegible] और मिल को कर्जा देने के लिये कहा है।

मिलों में इन्टक को बढ़ावा दिया
खुलेरूप से मालिक द्वारा दिये
जा रहे हैं। हर बात में पक्षपात
चल रहा है। एक वर्ष से ऊपर श्रमिकों
की तीन महीने की तनखा चढ़ी हुई है
और चौथा महीना चढ़ रहा है।
और मजबूर हैं। हड़तालियों
को बिठा रखा [illegible] [illegible]

आपका साथी

(signature)

1959

पोस्ट कार्ड

POSTAGE
5 N.P. INDIA ५ न.पै.

केवल पता

261

सेक्रेटरी
अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन
कांग्रेस
4 अशोक रोड
नई दिल्ली

EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(MINISTRY OF LABOUR & EMPLOYMENT)
2A/3, Asaf Ali Road, New Delhi.

No. 28-2/15/5 9 (M) Dated the 6th November, 1959

From

Major D.R.Sharma,
Assistant Medical Commissioner,

To

The General Secretary,
Kapra Mazdoor Ekta Union,
Gaushala Gate,
Mill Area, Kishenganj,
Delhi.

Dear Sir,

Please refer to your letter No. KMEU/GOVT/244/59, dated the 23rd October 1959 addressed to the Regional Director of the Corporation, New Delhi regarding the issue of medical certificates to insured persons recommending fit for light work only. In this connection I am to inform you that there is no provision in the E.S.I. Act or rules and regulations made thereunder, for making such recommendations. Further no official instructions were ever issued to the Insurance Medical Officers working in the State Insurance dispensaries to issue certificates making recommendations for light duties. Theremay have been a few cases where such recommendations may have been erroneously made by certain Insurance Medical Officers. In the circumstances, a worker is either fit or unfit to resume his normal duties and where he is fit for only light work he continues to remain on medical certification needing abstention from work on medical grounds.

As regards a specific instance cited by you of an employee, who lost his three fingers during the course of employment in the mill, resulting in partial permanent disablement it is agreed that he may not be able to carry out to job which he was doing prior to the accident. Such cases are issued a certificate of fitness, if further medical attendance and treatment is not likely to benefit the worker in any way and the injury has stablised needing reference to a Medical Board for assessment of the percentage of loss of earning capacity. The certificate of fitness is issued to enable a worker to take up any employment as temporary disablement would cease pending assessment of permanent disablement. Further it may also be mentioned that a worker who is compensated for employment injury resulting permanent cannot be issued with a certificate recommending light work to his employer, who is not under any legal obligation to provide work to such an insured person, who is in receipt of partial permanent disablement benefit.

Yours faithfully,

Sd/- (D.R.Sharma)
Asstt.Medical Commissione

Copy to the Regional Director, E.S.I.Corporation, B-9, Pusa Road, Delhi. 5.

TRUE COPY

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन
KAPRA MAZDOOR EKTA UNION
Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi

No.KMEU/GOVT/244/59 Dated: 23rd October,1959.

The Regional Director,
Employees State Ins.Corp.,
B-9, Pusa Road,
N E W D E L H I.

Dear Sir,

Insured persons who, as a result of illness or injury were under the treatment of E.S.I. Dispensary used to be given certificates of fitness on recovery and in case of disablement or in view of the continuity of the effects of disease were given certificates recommending to the Mill-Management to assign them some light work. This practice continued for some time but strangely enough it ha been discontinued recently and the Dispensaries are only issuing certificates declaring the I.P."fit for work" even in these cases where he is prima-facie rendered totall unfit to undertake his normal duties in the Mills. The discontinuance of issuing recommendation to the Mill authorities to assign light work in view of the nature and effect of injury has affected adversely the interests of the employees for whose benefit the legislation was enacted. The question whether an employee is fit to discharge normal duties, as he was discharging prior to the illness or injury, is definitely the function of the Medical Officer who is expected to give his opinion. In case the effect of injury or illness is a continuing effect, which renders the employee incapable of discharging his normal functions, you will appreciate that a certificate is necessary specifying the degree of his capacity to discharge his duties in comparison to his capacity which existed prior to injury, accident, illness. In the absence of such certificate by the Doctor, it will be difficult for the Management and the Union both to judge

Contd.....P.2

and decide the extent of his capacity to discharge his normal functions and the job on which he is to be put in.

We would like to impress upon you that Social Legislations are enacted with a particular purpose by its framers that is the benefit to the society and attainment of the purpose they are enacted for. If the interpretation or the method of implementation of the purpose it has been enacted for is in a way prejudical to the very persons for whose benefit it has been enacted, it will defeat the very sancitity of the prupose of the Act and defeat its object.

We would like to bring to your notice that there is a typical case in which an employee lost his three finger during the course of employment in the Mill. The Mill authorities are prepared to give him light work, if he is able to produce a certificate or recommendation from the Medical Authorities of E.S.I.C, specifying the typoe of work— Heavy, light or medium— which the I.P. is able to handle in the opinion of the Mdecial Officer. In the basence of such a recommendation, they are not prepared to give him any other work but the one he was attending to prior to his involvement in the accident. Now the nature of the injury (which is one of partial permanent disablement) is prima facie such that he cannot handle his previous job. This means that he must go cut of job unless the E.S.I.C. comes to his resuce by giving correct opinion about his capacity to work <u>vis-a-vis</u> job.

The employee concerned approached the Doctor for such a certificate but he was refused without any reason.

We would request you to restore the old practice which continued for a pretty long time and to interpret the provisions of the Act keeping in view the sancitity of the legislation

कपड़ा मजदूर एकता यूनियन

and the purpose of its enactment with a view to suit the needs of the society and help in adopting social legislation to the dynamic society.

Yours faithfully,

Sd/- Narain Parsad
for
General Secretary.

KUMAR

TRUE COPY

28 NOV 1959

कपड़ा मजदूर एकता यूनियन

(संबंधित ए. आई. टी. यू. सी.)

गौशाला गेट, किशनगंज

सेक्रेटरी ब्रांच/जनरल सेक्रेटरी

दिल्ली 25-XI-59 १९५

प्रिय साथी,

प्रस्ताव डी.सी.एम. ब्रांच कमेटी

कपड़ा मजदूर एकता यूनियन की देहली क्लोथ मिल शाखा की कार्य समिति की यह बैठक देहली क्लोथ-मिल में अंधाधुन्ध रफ्तार से बढ़ते हुए खतरनाक-दुर्घटनाओं (Accident) पर जबरदस्त चिन्ता प्रकट करती है। पिछले 36 घंटों में चार बहादुर मजदूर साथी भयानक दुर्घटनाओं के शिकार हो चुके हैं। पहली दुर्घटना में जो ता॰ 23-11-59 को सवेरे घटी बिजली घर के तीन साथी सर्व श्री करनैल सिंह, लुजीराम, राम स्वरूप, बिजली की मोटर से निकली हुई तेज आग की लपटों से बुरी तरह घायल हुए। दूसरी भयानक दुर्घटना में जो आज ता॰ 25-11-59 को प्रातः घटी, इंजन खाता के दूसरे बहादुर साथी सरदार कुन्दन सिंह कोयला शिफ्ट करने वाली चैन के शिकार बने इस दुखद दुर्घटना के कारण उनका दांया हाथ कोयला कन्वेयर बेल्ट में फंस कर जड़ से उखड़ गया।

यह चारों साथी अब इर्विन अस्पताल में दाखिल हैं और इनकी दशा चिन्ताजनक है। इन साथियों का इलाज भी अभी माकूल तरीके से नहीं हो रहा है। जिसके लिये हम कर्मचारी राज्य बीमा योजना अधिकारियों से मांग करते हैं कि सरमायादारी लूट खसोट के इन बेगुनाह शिकारों का ठीक ठीक इलाज किया जाय।

यह बैठक इस परिणाम पर पहुंची है कि—

कपड़ा मजदूर एकता यूनियन

(संबंधित ए. आई. टी. यू. सी.)

गौशाला गेट, किशनगंज

२

सेक्रेटरी ब्रांच / जनरल सेक्रेटरी

दिल्ली १९५

प्रिय साथी, मिल में यह बढ़ती हुई दुर्घटनायें मिल मैनेजमेंट के बढ़ते हुए दमन और निरंकुश शोषण का सीधा परिणाम है। जनरल मैनेजर श्री पाठक ने मिल में मजदूरों को आतंकित और भयभीत करने और उन से सख्ती कर-काम लेने की जो नीति अपनाई है इस से मजदूरों की मानसिक तथा शारीरिक परेशानी बढ़ जाने से और दूसरी ओर सस्ते और नकारा सामग्री इस्तेमाल करने से व अफसरों की लापरवाही से यह दुर्घटनायें बढ़ रही हैं।

यह बैठक मांग करती है कि सरकार का फैक्ट्री इन्सपेक्टरेट विभाग इन दुर्घटनाओं की निष्पक्ष जांच करे जिसमें मजदूर नुमाइन्दे भी शामिल हों, साथ २ कम्पनी को भी मजबूर करें कि वह मजदूरों के खून से होली खेलने वाली अपनी नीति को छोड़े और इस नीति से पीड़ित इन [illegible] साथियों को पूरा २ मुआवजा दें।

261

MUMBAI GIRANI KAMGAR UNION

Ref. No. 944/69. Dalvi Building,
Parel, Bombay 12,
November 21, 1969.

FOR FAVOUR OF PUBLICATION:

BOMBAY STATE TEXTILE WORKERS' CONFERENCE

The Mumbai Girani Kamgar Union has decided to organise a Conference of the textile workers in the State, to consider the urgent problems facing the textile workers.

Since over two years past the mill-owners of the country have launched a big offensive against the workers in the industry. In the name of reorganising the industry to meet the so-called 'crisis', they have been throwing out thousands of workers and stepping up workload on the remaining.

Introduction of automatic machinery, wherever possible allotting '4 sides' to a 'sider' in the Ring Department in place of the two that he attends today and 4 looms to a weaver in the weaving shed in place of the customary two - are their immediate objectives. In the 'lesser' departments the high-speed machinery has already forced its way in several units. Now the employers mean concentrating their attack on the main departments viz. Spinning and Weaving. In this they are helped by the role of the INTUC-led unions, which are the 'representative unions' in the textile centres under the BIR Act. These unions, while feigning opposition to rationalisation and consequent unemployment and increase in workload, refuse to organise the workers to resist the attack or join in the action initiated by other unions to defend the interests of the workers. The result is that no united action is possible, and workers have to fall back against the organised offensive. In several centres, the INTUC-led unions have openly entered into agreements with the mill-owners, and helped them to impose wage-cuts or rationalisation on the workers.

Over 40,000 workers have been axed in Bombay City alone during the three years past, as a result of the offensive or the closures. Especially the temporary workers have been axed in large numbers. Those on work do not get full employment.

.....2

The employers are trampling underfoot the Delhi and Nainital Tripartite Agreements concerning rationalisation and closures. The Governments, who are a party to the agreement, instead of intervening on the side of workers to uphold the agreements, are adopting the passive role of an on-looker.

The inaction of the Government is encouraging the mill-owners to continue their attack with impunity.

The Central Textile Wage Board which has been deliberating over the wage-increases to be given to the workers for over two and a half years past, is yet to bring out its Report. While the Government quarters have been discreetly silent concerning the findings of the Board, disturbing reports are being given out by the INTUC leaders.

A grave situation is thus created in the textile industry, when the trade unions are increasingly finding themselves pitted not only against the employers, but also against Government policies.

The Mumbai Girani Kamgar Union - the newly formed united union of the Bombay textile workers has taken the initiative, and convened the Conference. Delegates representing over half the total number of workers in the industry will assemble at Bombay on 28th and 29th inst. to deliberate on the situation, and find a way to defend the interests of the workers.

The Conference will be inaugurated by Shri R.D. Bhandare, M.L.A, Vice-President of the Mumbai Girani Kamgar Union and presided over by Shri S.M. Joshi, M.L.A., President of the Union.

Fraternal Delegates have been invited from textile centres outside Bombay State.

The Editor,
Trade Union Record
4, Ashok Rd. New Delhi.

Dear Sir,

Please publish the above news item in the columns of your esteemed paper and oblige.

Thanking you,

Yours faithfully,

for GENERAL SECRETARY.

28 NOV 1959

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन
KAPRA MAZDOOR EKTA UNION

Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi

No.KMEU/DCM/316/59 Dated: 27th November, 1959.

The Chief Inspector of Factories,
1- Rajpur Road,
D E L H I.

Dear Sir,

Sub: Alarming increase in the number of accidents in the Delhi Cloth Mills

We invite your kind attention to our letter No.KMEU/DCM/306/59, dated 25th November, 1959 addressed to the Managing Agents, Delhi Cloth & General Mills, and a copy endorsed to you. In this connection I am desired to forward for your information and necessary action copy of a resolution unanimously adopted by the D.C.M.Branch Committee of the Union and subsequently approved by the overwhelming majority of the workers of the Delhi Cloth Mills in 3 open and largely attended meetings held outside the Delhi Cloth Mills gate. We need hardly say that the occurrence of 4 such major accidents in quick sucession within a period of 24 hours, has created intense unrest, resentment and agitation among the workers. Although it is fully realised that accidents are a necessary concommitant of modern industrial life, yet everywhere continual attempts must and are actually made to eliminate them. This naturally necessitates a careful investigation of the cuases underlying every case of accident. Such investigation becomes all the more necessary when the incidence of accidents assumes manifestly alarming proportions as in the instant case.

We have reason to believe that this spate of accidents owes its origin to the ruthless drive to extract more output from reduced complement of workers with callous disregard to the life and health of the

workers. It is understood, for example that in the Power Plant Section of the mills, which has been the scene of the aforementioned 4 accidents, the number of electric motors has gone up 4 times during the past few years, whereas the number of motor attendants and other auxiliary staff has gone down by almost 33%. New useless electric switches have been provided in recent months without examining their inherent defect which has been responsible for a number of minor accidents during the past few months. Despite the occurrence of these accidents the management took no steps to replace them or to have their main defect removed. On the other hand the officers concerned compelled the workers to put in even more strenuous work on these motors. The serious accident involving the 3 workers on the 23-11-59, was the direct outcome of this policy of the management of "putting a screw" on workers and making them handle electrical fittings considered to be seriously defective from the point of view of safety. It is also common talk that the management is resorting to methods calculated to terrorise the workers by continuous threats of "disciplinary action" and has thereby created an atmosphere of nervousness in the mills with serious adverse repercussions on the morale of the workers. This nervousness is also to some extent responsible for the abnormal increase in the number of accidents. We also have it from a number of workers that a number of minor accidents is taking place almost every day, but that the management is concealing them from your directorate and also from workers. For obvious reasons, we would request your directorate to investigate all these complaints carefully and see to it that the management is compelled to adopt adequate safety measures to avoid suffering to workers and loss of previous human life.

Contd.....P.3

कपड़ा मजदूर एकता यूनियन

We need hardly point out to you that the recent spate of accidents has made the workers even more nervous and unless you are able to reassure them with firm action of your determination to ensure the safety of their lives and limbs while on work in the mills, the position may deteriorate further disastrous consequences to the industry.

We assure you of our wholehearted cooperation in this very important task.

Yours Faithfully,

(B.D.JOSHI)
GENERAL SECRETARY

KUMAR

Copy, with a copy of the enclosure forwarded (for information only) to:-

(1) The Hon'ble Minister for Labour & Employment, Government of India, New Delhi.

(2) The Chief Commissioner, Delhi.

(3) Shree Gopi Nath Aman, Chairman, Labour Advisory Board, Alipore Road, Delhi.

(4) The General Secretary, All India Trade Union Congress, 4- Ashok Road, New Delhi.

(5) The Secretary, Delhi State Branch of the All India Trade Union Congress, Double Phatak Road, Kishenganj, Delhi.

Mkumar
GENERAL SECRETARY

प्रतिलिपि

खिसियाई बिल्ली, खम्भा नोचे ।

क्या मज़दूर एकता विरोधी गुन्डा गर्दी पर उतरेंगे ?

मज़दूर साथियो !

पिछले चन्द दिनों में, खास तौर पर जब से मिल मिल के अन्दर दुर्घटनाओं का तांता बंधा है, देहली क्लाथ मिल के मज़दूरों ने एकता यूनियन के नेतृत्व में मिल मालिकों के दमन और शोषण के खिलाफ़ ज़ोरदार आवाज़ उठाई है । मज़दूरों के इस बढ़ते हुए विरोध से मैनेजमेन्ट का एक हिस्सा और उनके पिटठू घबड़ा उठे हैं ~~कि-एकता यूनियन~~ पता चला है अब वे इतने बौखला उठे हैं कि-एकता यूनियन के कार्यकर्ताओं से झगड़ा करने और हिंसात्मक तरीकों या गुन्डा गर्दी मचा कर मज़दूरों को भयभीत करके एकता यूनियन से काटना चाहते है । इस प्रकार की एक साज़िश का पता हमें आज सुबह चला है । इस तरह की साज़िशों के विरुद्ध कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन की कार्य कारिणी ने नीचे लिखा प्रस्ताव पास किया है :-

" कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन की कार्य कारिणी क्लॉथ मिल के तमाम मज़दूर साथियों को मिल मैनेजमेंट और दूसरे मज़दूर दुश्मनों की इस साज़िश से आगाह करना चाहती है कि मिल गेट के आस पास गुन्डा गर्दी मचा कर और एकता यूनियन के कार्य कर्ताओं पर हिन्सात्मक हमले करके मज़दूरों को भयभीत किया जाये और उन के संगठन को तोड़ा जाये । साज़िश करने वालों ने यह प्रोग्राम बनाया कि सोमवार की सुबह को एकता यूनियन के उस बोर्ड को जलाया जाये जिस पर रोज़ हज़ारों मज़दूरों की मांगों और शिकायतों के बारे में आवज़ उठाई जाती है । कार्य कारिणी मज़दूरों से अपील करती है कि मालिकों की इन नापाक साज़िशों से ख़बरदार रहें और संगठित हो कर इन का मुक़ाबला करें ।

आप का साथी

मन्त्री

देहली क्लॉथ मिल ब्रांच

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन

देहली

ता०:- २६-११-५६ ई०

======

प्रतिलिपि

देहली क्लौथ मिल या इंसानों का बूचड़ खाना ?

सर श्रीराम गौर करें:-

. आज सभ्यता की सीढ़ी पर मनुष्य और समाज ऊंचा उठता चला जा रहा है ऐसा विचार किया जाता है।

.. इंसान को छोड़िये हकूमतें ~~सब~~ हैवानों या पशुओं पर बेरहमी को रोकने का इंतजाम कर रही हैं।

... लेकिन देश सेवा की आढ़ में तिजोरियां भरने वाले सरमायेदार कारखानों में काम करने वाले मज़दूरों को इन पशुओं के बराबर भी दर्जा देने को त्यार नहीं।

.... देश की राजधानी दिल्ली के सबसे बड़े उद्योगपति 'सर' श्रीराम के दिल्ली क्लौथ मिल में मुनाफ़ों की बलवेदी पर घड़ा घड़ इंसान कुरबान किये जा रहे हैं।

..... मुनाफ़ों की होड़ में एक मज़दूर से चार का काम लेकर खर्च बचाने के लिए नई मशीनों में मार से बचने (यानी 'सैफ़टी')का इंतज़ाम न करके मशीनों की चाल हद दर्जे तक बढ़ा कर चार्जशीट और नौकरी से निकालने के नोटिसों से निरंकुश दमन करके मज़दूरको आठ घंटे तक पानी पीने या लघुशंका तक के लिए छूट न देकर उन पर हर तरह का नाजयज़ दबाव डालकर क्लौथ मिल मैनेजमेंट मज़दूरों का निमर्म शोषण कर रहा है।

...... २४ घंटों में २३-११-५६ और २४-११-५६ की सुबह के बीच चार इन्सान मालिकों के इस नरमेघ यज्ञ में आहुती का काम कर चुके हैं मिल के बिजली विभाग के सर्व श्री करण सिंह बुधी राम और राम सहाय बिजली की मोटरों से निकलती हुई धधकती ज्वाला से कोयला बनकर इर्विन हस्पताल पहुंच चुके हैं। कोयले की कन्वेअर बैल्ट पर काम करते करते स० कुन्दन सिंह का सारा दायां हाथ जड़ से उखड़ कर बैल्ट में रह गया। यह बहादुर देश भक्त मज़दूर भी इर्विन हस्पताल में जीवन और मौत के बीच लटक रहा है।

...... हररोज़ एक न एक दुर्घटना मुहं फाड़े मज़दूर को निगलने को त्यार है।

.... सरकार का फैक्टरी विभाग न जाने कहां सो रहा है। क्या वह नही जागेगा जबतक मज़दूर के सब्र का प्याला छलकने न लगे।

बी० डी० जोशी

महा मंत्री- कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन

गौशाला गेट- डबल फाटक रोड, किशन गंज

-देहली

-1 DEC 1959

Delhi Cloth Mills Delhi

L/436

261

26th Nov., 1959.

The Chairman,
Evaluation and Implementation Committee,
Delhi Administration,
D e l h i.

Dear Sir,

We have, by now, brought to your notice, in writing, a series of breaches of the Code of Discipline committed, in the past, by the Kapra Mazdoor Ekta Union in our Mills and have, all the time, been requesting appropriate action by you to desist the Union from its illegal and harmful activities.

We are not, however, aware of any tangible steps having been taken to remedy matters with the result that the situation has been deteriorating day by day, constraining us to think that, unfortunately, the gravity of the situation created in our Mills by the Union is not being appreciated.

In the past, the Ekta Union Executives have already been responsible for several acts which would have resulted in serious consequences, but for the proper and prompt handling of the situations by the management. The Union Executives are out again to renew the same type of acts which are fraught with dire consequences.

The Union has long since eschewed the basic and fundamental approach of peaceful means and has now started provoking and inciting the workers against our individual officers. By its way of conducting itself, the Union has made it amply clear that it observes the Code of Discipline more in its violation than in its adherence, while, on the other hand, the letters of the Union containing pious platitudes bespeak of its "double talk" tactics.

The speeches that the leaders of the Union have been delivering and the contents of their Notices which have been appearing on their Board at the Workers' Gate of our Mills show that the Union is more interested in furthering the political interests of the Communist Party than in maintaining industrial peace in the Mills.

The violent behaviour of the Union has, of late, gained a serious momentum and the Union Executives have started violently accusing and vilfying our individual officers on the score of and by exploiting some accidents that have recently taken place in our Factory, which might lead to chaotic developments unless

.....2.

suitable and prompt action is taken in this regard.

In proof of above we are herewith enclosing copies of the texts of the speeches delivered at the Workers' Gate of our Factory on 24th (Annexure 'A') and 26th November 1959 (Annexure 'B') by prominent Executives of the Kapra Mazdoor Ekta Union and that of the notice on the Board of the Union dated 25.11.1959 (Annexure 'C'). The contents of the above speak for themselves and need no comments.

We may further state that if the Executives of the Union are not prevented from delivering such highly provocative and inflamable speeches against our individual officers an explosive situation leading to serious breach of industrial peace might arise.

We would, therefore, request you to please give the above matter your immediate and serious attention and take suitable and necessary steps.

Thanking you,

Yours faithfully,

GENERAL MANAGER.

Encl: 3:

Copy to:-

L/o 437
26/11/59

The General Secretary,
All India Trade Union Congress,
4, Ashok Road,
New Delhi

Annexure - A

गेट मीटिंग एकता यूनियन - २४-११-५६

आज २४-११-५६ रात के १०-३० बजे पर ऊपर गेट पर एकता यूनियन की मीटिंग हुई। मीटिंग में ३००-३५० के करीब कारीगर शामिल हुए। मीटिंग ११-१५ पर समाप्त हुई।

मुन्शी नारायण प्रसाद ने तकरीर करते हुए कहा साथियो! आज हम बहुत ही दुख के साथ मीटिंग ले रहे हैं। कल की दुर्घटना का आप को पता लग गया होगा। बिजली विभाग के तीन साथियों को बहुत बुरी तरह से चोट आई। मशीन चालू करते समय भभका उठने से वह साथी बुरी तरह जल गए। आज शाम को हमारे प्रधान मंत्री और दूसरे कार्य कर्ता जब हस्पताल में उन्हें देखने गए तो उनकी चिन्ताजनक हालत देख कर बहुत दुःख हुआ। आज सुबह एक और दुर्घटना हुई। इन्जन खाता का एक साथी कुन्दन सिंह का दायाँ बाजू कोयला मशीन की बैल्ट में आ कर कट गया। ख्याल पैदा होता है कि यह दुर्घटनाएं क्यों हो रही हैं। इस का जवाब एक ही कारण है। इस का कारण है वर्क लोड। कारीगर के सिर पर अफसर सवार रहते हैं, जल्दी मचाते हैं; चार्जशीट और सस्पैन्शन की धमकी देते हैं। ६ मजदूरों की जगह एक मजदूर से काम लेते हैं। मजदूर बेचारा घबराहट में एक्सीडेंट का शिकार हो जाता है। आज इन दुर्घटनाओं का मामला लेकर हमारे प्रधान मन्त्री यहां आए हैं। आज यूनियन की एक मीटिंग भी हुई थी जिस में एक जबरदस्त प्रस्ताव पास किया गया। वह भी आप को पढ़ कर सुनाया जाएगा।

श्री बी० डी० जोशी ने कहा :- साथियो! आज हम शाम को इरविन हस्पताल में गए। कल के तीन साथियों की हालत देख कर कलेजा दहल गया। तीनों साथी कोयले की तरह काले हो रहे थे। एक का मुंह सूजा हुआ था। आंखों का पता न लगता था। आग से जले हुए शरीर सूज रहे थे। वह कराह रहे थे और कहते थे हमें दवाई भी कम पहुंचा रहे हैं। हस्पताल वालों का इलाज भी तसल्लीबख्श नहीं। अगर कोई आफीसर होता तो हजारों डाक्टर आ जाते। सैंकड़ों इंजेक्शन लगाते। परन्तु यह मजदूर लोग जिन्होंने लाला जी और पाठक जी की तिजोरियां भरने के लिए अपनी जान को खतरा में डाला उन्हें कोई पूछने वाला नहीं। पाठक कितना जालिम है कि जब बिजली खाते के कारीगर अपने तीन साथियों के साथ जाने को तैयार हुए तो उन्हें रोक दिया गया। इन पिछले चौबीस घंटों में चार आदमी हस्पताल में पड़े मौत से लड़ रहे हैं। नहीं कहा जा सकता वह हमारे बीच आएंगे भी या नहीं। बहादुर साथी कुन्दन सिंह की हालत देख कर कलेजा मुंह को आने लगा। कल बिचारा अपने घर में हंसता खेलता था आज मौत से लड़ रहा है। नए बायलर में कोयला ले जाने के लिए जो मशीन लगी है उस में उस का हाथ कटा

---२

है ।४ आने की बचत के लिए लाला लोगों ने मज़दूर की जान से खेलना स्वीकार कर रखा है । कम कीमत के बेकार पुर्जे लगा रहे हैं । रद्दी मैटीरियल ही एक्सीडेंट का कारण है । लाला श्री राम के बाप ने श्री राम के लिए कुछ लाख रुपया छोड़ा । श्री राम ने भरत राम के लिए लाखों के करोड़ों बनाये और भरत राम करोड़ों के अरबों बना रहा है । दूसरी तरफ़ फत्तू कारीगर ने बीजू के लिए २०० रुपया कर्जा छोड़ा बीजू ने अपने लड़के के लिए ६०० कर्जा छोड़ा और अब वह ८०० छोड़ेगा । सरमायदार की तजोरी भरती जा रही है और मज़दूर का कर्जा बढ़ता जा रहा है । मंहगाई केस में हमने कागज़ात मंगवा कर पेश कराए । पता चला है कि मज़दूरों ने पिछले साल से पांच गुणा कर्जा ले रखा है । डाक्टर कपूर जिस का मिल में कोई काम नहीं उस की कोठियां बन गईं । पाठक जी को कमिशन मिल गई । लाला जी के पौं बारा हो गए और मज़दूर हाथ पैर तुड़वा कर हस्पताल में पड़ गये । आज की समाजवाद सरकार भी सरमायादार का साथ दे रही है । सरमायेदार के कहने के अनुसार कानून बनाती है । ए० बी० एम० का एक केस है । जहां एक कारीगर की चार उंगलियां कट गईं । डाक्टर ने उसे फिट कर दिया और लाला लोगों ने उस का पत्ता साफ़ कर दिया । हमें सरकार ने जवाब दिया कि इसका काम नहीं किया जा सकता । मालिक की मर्जी है रखे या न रखे । आज जैसे हम ने नारे लगाने शुरू किये "सरमायेदारी का नाश हो " इसी तरह सरमायेदारों ने भी झंडे पर लिख लिया है कि मज़दूरों से काम पूरा लो । उन्हें कम तनख्वाह दो । लाला जी ने दमन के लिए ही पाठक जी को यहां बुलाया है । पाठक जी ने बीड़ा उठाया है कि ४०० मज़दूरों से इतनी ही प्रोडक्शन कराएगा । उसे पता था कि एकता यूनियन के होते उस की पेश न जाएगी । इसी लिए वह एकता के कार्यकर्ताओं को निकालने की कोशिश करते रहते हैं । आप ने कंस की कहानी सुनी होगी कि कंस ने अपने बचाओ के लिए बच्चों को मरवाया । इसी तरह अपनी बचत के लिए वह एकता यूनियन को ख़त्म करना चाहते हैं । यही हालत आप सब की होने वाली है । श्री मिल उजड़ने वाली है । यहां के कारीगरों को बुखार चढ़ रहा है । ऐसा ही अपना दमन चक्र है वह आप को पीस देगा । आज मीटिंग में जो प्रस्ताव पास हुआ वह मैं पढ़ कर सुनाता हूं । " एकता यूनियन २३-११ और २४-११ की दुर्घटना पर शोक प्रकट करती है । कारपोरेशन से यह मांग करती है कि घायल साथियों का ठीक इलाज करें । यूनियन फैक्टरी इंस्पैक्टर विभाग से भी मांग करती है कि एक्सीडेंट के कारण की जांच कराएं । हमारे विचार से तीन मुख्य कारण हो सकते हैं ।

१) वर्क लोड । ६ कारीगरों का काम एक मज़दूर से लिया जाता है । मज़दूर काम की ज़्यादती से घबरा कर एक्सीडेंट कर बैठता है ।

२) सस्ता और बेकार मैटीरियल लगा रखा है ।

३) अफ़सरों का डंडा हर समय कारीगरों की पीठ पर रहता है । चार्जशीट और सस्पेंशन की धमकी से मज़दूर का दिमागी संतुलन बिगड़ जाता है । आप यदि प्रस्ताव को ठीक समझते हैं तो हाथ उठा दें । (हाथ उठाए गए)

तो दोस्तो इस दमन चक्कर को अब ख़त्म करना है । यह प्रस्ताव हम सरकार को भेजेंगे और मांग पूरी कराते हुए इन घायलों के लिए मुआवज़ा मंज़ूर करायेंगे । अगर सीधी तरह काम न बना तो जलसा जलूस करने होंगे । इसके लिए आप को तैयार रहना चाहिए । इन्कलाब ज़िन्दाबाद - कटौती कम करो - घायलों को मुआवज़ा दो इत्यादि ।

Annexure - B

ता० २६-११-५६ को ६-३० बजे सुबह से ७-३० बजे तक कनीर गेट पर खाता यूनियन की ओर से करीबन २००, २५० कारीगरों के सामने मुन्शी नारायण प्रसाद, बलदेव सिंह और बी० डी० जोशी ने भाषण किया जो कि निम्नलिखित है ।

१) मुन्शी नारायण प्रसाद- ने कहा साथियो " आप के सामने जो इन दो तीन दिनों के अन्दर जो दुर्घटनाएं हुई हैं वह सब पाठक शाही के फलीभूत ही घट हुई हैं । जब से पाठक शाही का शासन हुआ है तब से मजदूरों के ऊपर कामबाढ़ बहुत अधिक होने के कारण यही ~~है कि मजदूरों की मिल में दिन-प्रति~~ उनकी शारीरिक व मानसिक शक्ति बिल्कुल घट जाती रही है । जिस का नतीजा यही है कि मजदूरों की मिल में दिन प्रतिदिन दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं । ता० २५-११-५६ को साथी कुन्दन सिंह कंघा खाते की बाहू कट गई है जो कि हस्पताल में पड़ा है । और एक साथी की उंगली से कटी हैं वह भी इस समय हर्टिन हस्पताल में पड़े हुए हैं । इन साथियों को जब हम हस्पताल में देखने के लिए गये तो हम लोग उन साथियों को नहीं पहचान सके हमारे साथी बी० डी० जोशी साहब ने एक साथी को बड़ी मुश्किल से पहचाना उन की शक्ल बिल्कुल ही आग से जल कर काली पड़ गई है जो कि आदमी उन को देख कर घबरा जाता है । फिर मैं ज्यादा न कहता हुआ भगवान से प्रार्थना करता हूं कि भगवान उन को जल्दी ही आराम दे ।

बलदेव सिंह ने भी इन सारी दुर्घटनाओं के बारे में संक्षेप में बताया और एक साथी चौधरी मल चार्जिंग खाते की मृत्यु के बारे में बतलाया कि साथी चौधरी मल की ड्यूटी रात की थी वह दिन में कुछ घरेलू काम के कारण आराम न कर सका । जब वह [illegible] तो करीबन शाम को ७ बजे ही सो गया । जब उसकी आंखें खुलीं तो उस वक्त १० बज कर १० मिनट हो चुके थे तो उसको याद आई से ड्यूटी की पाठक की शक्ल और उसके गेट चपरासियों की शक्ल नजर आई जो कि उन के डर की वजह से घर से भागता हुआ मिल गेट से अन्दर पहुंचा । गेट नं० २२ पर पहुंचने पर उस को उल्टी हुई और वह बहुत ही घबरा गया । इस को मैं ज्यादा न कहता हुआ यह आप को बतलाता कि वह रात को २-३० बजे जमना जी पहुंच गया । यह पाठक शाही ने इतना घबराट पैदा किया हुआ है । अब आप के सामने बी० डी० जोशी जी इन सब साथियों की हुई दुर्घटनाओं के बारे में एक प्रस्ताव आप के सामने रखेंगे । सब साथी उसमें अपनी राय देकर जायें ।

बी० डी० जोशी ने कहा साथियो बड़े दुःख की बात है कि मिल में इतनी पहले कभी इतनी दुर्घटनाएं नहीं हुईं जितनी कि एक साल के अन्दर पाठक साहब के आने के बाद हुई हैं । हमारी यूनियन की तरफ से इन दुर्घटनाओं के बारे में एक बैठक हुई जिसमें हमने एक प्रस्ताव पास किया है कि मैं आप लोगों के सामने रखूंगा । बी० डी० जोशी ने प्रस्ताव पढ़ कर सुनाया कि साथियो काम बाढ़ और इस निकम्मी मशीनरी के खिलाफ हम भारत सरकार को लिखा पढ़ी करेंगे और इन साथियों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करते हैं कि वह साथी ठीक हो कर अपने काम पर आ जायें और कम्पनी उन को पूरा पूरा मुआवजा दे और हम सब संगठित हो इस काम बाढ़ के और पाठक के शोषण का मुकाबला करेंगे । हम कम्पनी को लिखेंगे कि वह इस सिस्टम के हादसों रोकने की कोशिश करे वरना हम गेट मीटिंग व जलूसों के द्वारा सरकार को बतलायेंगे कि हम पर इतने जुल्म हो रहे हैं । इस के बाद लोगों से हाथ उठवाये और नारे लगा कर भाषण समाप्त किया ----नारे नीचे लिखे हुए लगाये ।
इन्कलाब ज़िन्दाबाद, सरमायेदारी का नाश हो, पाठक शाही शोषण का दमन हो ।
दुर्घटना हुए साथियों को मुआवज़ा दो ।

Annexure - C

नकल बोर्ड एकता यूनियन ता० २५-११-५६

क्या मज़दूर की जान की कोई कीमत नहीं । साथियो ! पिछले दो दिनों में भारी यानी बहुत बड़े हादसे हुए हैं जिससे तमाम ही मज़दूरों में भारी और दुख और गुस्सा है । मिल में लाला जी के दफ़्तर से लाखों लख अफ़सरों और दफ़्तरों की शान और शौकत पर करोड़ों रुपया लगाना फ़ुज़ूल बरबाद हो रहा है । अफ़सरों की फ़ौज में ज़्यादातर मुफ़्त ख़ोर और नालायक हैं । जिन का काम सिर्फ़ मज़दूरों को तंग करना है । टैम्परेरी कारीगरों को पास बंद करने की धमकी देकर काम बाढ़ करवाना है । इसी धींगा धींगी में कई साथी जान से हाथ धो बैठे हैं । हादसे के बाद सरकारी हस्पताल के रगड़े खा कर भी कोई बच निकले तो फिर वे रहम मिल वाले काम नहीं देते । कानून, मालिक और सख़्त सरकार के धक्के खाते खाते पूंजीवादी समाज में ज़मीन आसमान के दरम्यान अपने बच्चों को छोड़ कर मज़दूर दम तोड़ देता है । सिर्फ़ यह कीमत है मज़दूरों की इन लुटेरों के राज में । मज़दूर की कल अपनी मज़दूर एकता यूनियन डी० सी० एम० ब्रांच की मीटिंग में मंदरजा ज़ैल प्रस्ताव पास हुआ जो जल्दी ही भारत सरकार के पास भेज दिया जायेगा ।

डी० सी० एम० ब्रांच की यह मीटिंग मिल में अन्धा धुन्ध बढ़ रहे एक्सीडैंटों पर बहुत अफ़सोस और गुस्सा ज़ाहिर करती है । पिछले ३६ घंटों में चार बहादुर मज़दूर साथी ख़तरनाक हादसों के शिकार हो चुके हैं । पहले हादसे में जो मौरख़ा २३-११-५६ की सुबह को हुआ ३ साथी श्री करतार सिंह, बिशी राम और राम सहाय बिजली की मोटर में कल मौरख़ा २४-११-५६ को एक दूसरे बहादुर जवान सरदार कुन्दन सिंह कोला चढ़ाने वाली मशीन की चैन का शिकार बने । इस अफ़सोस नाक हादसे की वजह से उन का दाहिना हाथ कोयला कन्वेयर बेल्ट में फंस कर जड़ से उखड़ गया । बेरहम अफ़सरों ने खाते के दरवाज़े बंद कर दिये किसी को देखने भी नहीं दिया । यह चारों साथी अब इर्विन हस्पताल में हैं और इन की हालत नाज़ुक है । इन का इलाज भी ठीक नहीं हो रहा है । इसके लिए ई० एस० आई० अधिकारियों से मांग करती है कि पूंजीवाद के इन बेगुनाह शिकारों का इलाज ठीक ठीक किया जाये । यह मीटिंग इस नतीजे पर पहुंची है कि मिल में यह बढ़ते हुए हादसे कम्पनी के बढ़ते हुए जुल्मों और बेहद छटनी का नतीजा है । जनरल मैनेजर मिस्टर पाठक ने मिल में मज़दूरों को डरा कर के भय भीत करने और उन ग़ैर ज़िम्मेदाराना काम लेने की जो नीति अख़्तियार की इस से मज़दूरों की दिमाग़ी और जिस्मानी परेशानी बढ़ जाती है और दूसरी तरफ़ सस्ता और नाकारा सामान के इस्तेमाल और अफ़सरों की लापरवाही से यह हादसे बढ़ रहे हैं । यह मीटिंग मांग करती है कि सरकार का फ़ैक्टरी इंस्पेक्टर का महकमा इन हादसों की खुद इंक्वायरी करे और कम्पनी को मजबूर करे कि वह मज़दूरों के खून से होली खेलने वाली अपनी पालिसी को छोड़े और इन चार साथियों को पूरा पूरा मुआवज़ा अदा करे । कल शाम को मज़दूर साथी हस्पताल में इन साथियों को देखने गये । यूनियन की तरफ़ से जनरल सैक्रेटरी साथी वी० डी० जोशी और दूसरे ओहदे दार भी गये । उन की हालत को देख कर हर आदमी की आंखों में आंसू आ जाते हैं ।

------

1 DEC 1959

PHONE : 24011 (4 LINES)
GRAMS : "YARN"

DELHI CLOTH MILLS

PROPRIETORS : THE DELHI CLOTH AND GENERAL MILLS CO., LTD.

BARA HINDU RAO
POST BOX NO. 1039
DELHI.

261

Ref. No. 210435

Date 26-11-59

The General Secretary,
Kapra Mazdoor Ekta Union,
Goushala Gate, Kishanganj Mill Area,
DELHI.

Dear Sir,

We are in receipt of your letter No.KMEU/DCM/306/59, dated the 25th Nov., 1959 regarding accident cases of 23rd and 24th instant in the Delhi Cloth Mills. Without giving our opinion as to the cause of the accidents to Sarvshri Karam Singh, Burji Ram, Ram Sahai and Kundan Singh, we would like to say that the cases were promptly attended to by the Management and the Acting General Manager who was on the spot alongwith the Chief Engineer had taken the cases to the Irwin Hospital after administering the first aid in the Mills. The Factory Inspector had also examined the site and all factors connected with the accident. He has also been to the Irwin Hospital to make - necessary enquiries.

The tone and motives attributed by you to the Management in your above mentioned letter are highly improper, unwarranted and uncalled for.

We have in this instance to point out to you that your office bearers have tried to exploit the unfortunate happenings of the accidents by blaming the Management for the accidents, hurling in most offensive language wildest accusations against the Management and highly placed officers, preaching hatred and inciting workers to create trouble. We are, for your reference, sending copies of the Gate Meetings held by your executives and trying to create alarm in

..2

PHONE : 24011 (4 LINES)
GRAMS : "YARN"

DELHI CLOTH MILLS

PROPRIETORS : THE DELHI CLOTH AND GENERAL MILLS CO., LTD.

BARA HINDU RAO
POST BOX NO. 1039
DELHI.

Ref. No. ..... Date .....

the in-coming and out-going workers outside the Gate. Perhaps you do not realise that all your past practice of preaching hatred and violence to the workers in and out has miserably failed and if at all it has created a cold indifference in the minds of the workers towards these wrong methods which you employed to agitate workers. As a responsible office bearer of the Union we expected you to give up these methods and not to take to these old and antique methods to bring pressure on the Management for supporting your actions.

Management has already denied most emphatically more than once the wild accusations you have been making and fruitlessly repeating them in your letters with the object of sending copies to Government authorities with a view to prejudice them against the Management. In this connection, we have to draw your attention to the latest incident when on 25th morning the news of the natural death of a worker in one of the Lines was brought to the mills workers in the Mills and falsely circulated with the object of closing down the Mill, stating that Shri Kundan Singh who happened to be a resident in the same line was dead in the hospital. This is not the first time when such attempts have been made by your executives and office bearers and the situation is saved only because a large majority of workers have understood your methods who refused to be misguided with such false alarms.

It is highly regrettable that you persist in taking all methods designed to disturb the industrial peace in this area. We would once again request you to coolly think over the consequences of what you have been persistently doing and refrain from practising it in future.

..3..

PHONE : 24011 (4 LINES)
GRAMS : "YARN"

DELHI CLOTH MILLS

PROPRIETORS : THE DELHI CLOTH AND GENERAL MILLS CO., LTD.

BARA HINDU RAO
POST BOX NO. 1039
DELHI.

Ref. No. .....

Date .....

Let us hope that better sense will prevail with you and with your executives and you would not exploit incidents to raise false alarms.

It is needless for us to deny the false and fantastic reasons given by you as causes for the accidents, namely, economy drive, poor quality of material and increase of workload. We feel sure that if you would yourself read your own letter once again you would feel ashamed of having written such things. More fantastic still is the charge that several accidents have been hidden from the workers. We can only repeat that such statements are again motivated by sheer malice and with the object of discrediting the Management in the eyes of the persons to whom you have sent copies of your letter. But we doubt whether anyone of those persons would fall into your trap.

Yours faithfully,

GENERAL MANAGER.

Encl: 5:

29/45
30/11/59

copy to :-

The General Secretary,
All India Trade Union Congress,
4. Ashok Road,
New Delhi.

श्रीमान जी

सेवा में निवेदन है कि ता० २३-११-५६ को समय २-३५ से ३ बजे दिन तक बकीर गेट के बाहिर बमौजूदगी १००-१५० कारीगर गेट मीटिंग हुई। बलदेव सिंह ने कहा कि आज करीबन १० बजे दिन जब हम अपने एकता यूनियन के दफ्तर में थे तो ख़बर मिली कि मिल की चार दीवारी के अन्दर ३ कारीगरों का एक्सीडेंट हो गया है। एम्बूलेंस में सिर्फ एक ही कारीगर हस्पताल में भेजा है और दूसरे कारीगरों को नज़दीक तक नहीं आने दिया। कम से कम इन तीन कारीगरों के साथ ६ कारीगर साथ में जाने चाहिएं थे जो कि इनकी हर तरह से हिफाज़त करते और सही रिपोर्ट कारीगर भाइयों को देते। क्यों कि मिल मालिक कारीगर को ही ग़लत साबित किया करता है। हमें ऐसे हादसों की रोक थाम और सही इंक्वायरी के वास्ते कदम उठाना चाहिए ताकि कारीगरों के बाल बच्चों को जायज़ मुआवज़ा मिल सके जिस से वह बाकृन्दा अपनी ज़िन्दगी बसर कर सकें।

बी० डी० जोशी ने कहा कि मुझे जब यह ख़बर मिली तो दिल को बहुत ही दुःख हुआ। आप भाइयों के सामने अफ़सोस ज़ाहिर करता हूं। कुछ दिन हुए स्वतन्त्र भारत मिल में एक कारीगर की दो उंगलियां कट गई थी। हाथ ठीक हो जाने के बाद कारीगर ने डाक्टर साहब से कहा कि मुझे लाइट वर्क के वास्ते फिट लिख देवें। डाक्टर साहब ने साफ़ इंकार कर दिया कि मैं नहीं लिख सकता। मैं तो फिट ही लिख सकता हूं। लाइट वर्क मिल मालिक के हाथ है। जब यह कारीगर वापिस मिल में फिटनैस लेकर आया तो मिल अफ़सरान ने वही काम दिया जो कि उसकी ताकत से बाहर था। अब वह केस हमारे पास है। हम उस की लिखा पढ़ी सरकार से कर रहे हैं। आप भाइयों को चाहिए कि ऐसे हादसों की सही इंक्वायरी होनी चाहिए। ताकि कारीगर को जायज़ मुआवज़ा मिल सके। जिस तरह गन्ने के रस निकालने वाला उस रस की कीमत निकाल लेता है और छिलकों को फेंक देता है वो ही हाल मिल मालिक कारीगर का करता है। यानि मिल मालिक मज़दूर की कमाई से अपने बाल बच्चों के वास्ते लाखों रूपया जमा कर जाता है और मज़दूर अपने बच्चों को कर्ज़दार बना कर मर जाता है। सरकार को चाहिए कि इस प्रकार के हादसों का कारीगर को जायज़ मुआवज़ा दिया जावे ताकि उस के बाल बच्चे दर दर की भीख न मांगें। हम ~~स्कर~~ सरकार और मिल मालिकान से मांग करते हैं कि सही इंक्वायरी कराकर के यदि अफ़सर की ग़लती है तो अफ़सर को सज़ा मिलनी चाहिए और अगर कारीगर की ग़लती है तो उस की रोक थाम करनी चाहिए। यही हमारी मांग है। सब भाइयों को मिल कर कदम उठाना चाहिए जिससे कि सब का भला हो।

इन्कलाब ज़िन्दाबाद, सरमायदारी का नाश हो, मज़दूर एक हो जाओ के नारों से गेट मीटिंग समाप्त हुई।

गेट मीटिंग एकता यूनियन

गुज़ारिश है कि मौरख़ा २४-११-५६ को वक्त २-३५ से लेकर २-५५ मिनट तक वकीर गेट के बाहर मौजूदगी ७०-८० कारीगर गेट मीटिंग हुई । मुन्शी नारायण प्रशाद ने कहा साथियों :- कल हम ने तीन साथियों के हादसा के मुतल्क बताया था । आज उससे ख़तरनाक हादसा पावर हाऊस पर जो नई मशीन कोयला चढ़ाने वाली लगी है उस मशीन के अन्दर साथी कुन्दन सिंह का हाथ आ गया । उसने हाथ ज़ोर से पीछे को खेंचा तो बाज़ू कन्धे से जुदा हो गया । अगर वह अपना हाथ पीछे न खेंचता तो सारा जिस्म टुकड़े टुकड़े हो जाता । हम अफ़सोस ज़ाहिर करते हैं और मिल मालिकान से अपील करते हैं कि जब मिल मालिक नई मशीन लगाता है तो उस का कारीगर को दरूस्त चलाने का तरीका सिखलाना भी लाज़मी है । हम बीमा वालों से तो ख़तोकिताबत कर ही रहे हैं । लेकिन मिल मालिकों को भी ऐसे हादसों का जायज़ मुआवज़ा देना चाहिए । बल्देव सिंह ने कहा साथियों :- मेरे ख़्याल में हादसों की वजह ज़्यादा काम और वर्कशीट देकर ख़ौफ़-ज़दह करना है । जब कारीगर की ऐफ़ीशियंसी कम आती है तो कारीगर से ज़वाब तलब किया जाता है । वह डर के मारे ज़्यादा काम करता है । थक जाता है जिस की वजह से ज़्यादा हादसे होते हैं । खाता कमेटी को चाहिए कि ऐसे हादसों को रोकने के वास्ते बन्दोबस्त करें । सुना है कि जब साथी कुन्दन सिंह का हाथ कटा तो बाज़ू उस मशीन मे था, धड़ उस का नीचे पड़ा तड़प रहा था । मिल का कोई भी कारीगर वहां नहीं पहुंचा । यह हाल आप भाइयों का है । अगर आप भाई यूनियन की इमदाद करोगे तो हम आप भाइयों की इमदाद अच्छी तरह कर सकते हैं । यूनियन की इमदाद करो जिससे सब का भला हो ।

"दुनियां भर के मज़दूरो एक हो जाओ- एकता यूनियन ज़िन्दाबाद, सरमायदारी का नाश हो " के नारों से गेट मीटिंग ख़त्म हुई ।

गेट मीटिंग एकता यूनियन २४-११-५६

आज २४-११-५६ रात के १०-३० बजे पर लेबर गेट पर एकता यूनियन की मीटिंग हुई। मीटिंग में ३००-३५० के करीब कारीगर शामिल हुए। मीटिंग ११-१५ पर समाप्त हुई।

मुन्शी नारायण प्रसाद ने तकरीर करते हुए कहा साथियो! आज हम बहुत ही दु:ख के साथ मीटिंग ले रहे हैं। कल की दुर्घटना का आप को पता चल गया होगा। बिजली विभाग के तीन साथियों को बहुत बुरी तरह से चोट आई। मशीन चालू करते समय ममका लगने से वह साथी बुरी तरह जल गए। आज शाम को हमारे प्रधान मंत्री और दूसरे कार्य कर्ता जब हस्पताल में उन्हें देखने गये तो उनकी चिन्ताजनक हालत देख कर बहुत दु:ख हुआ। आज सुबह एक और दुर्घटना हुई। इन्जन खाता का एक साथी कुन्दन सिंह का दाहना बाजू कोयला मशीन की बेल्ट में आ कर कट गया। स्वाल पैदा होता है कि यह दुर्घटनाएं क्यों हो रही हैं। इस का केवल एक ही कारण है। इस का कारण है वर्क लोड। कारीगर के सिर पर आफ़ीसर सवार रहते हैं, जल्दी मचाते हैं, चार्जशीट और सस्पेंशन की धमकी देते हैं। ६ मज़दूरों की जगह एक मज़दूर से काम लेते हैं। मज़दूर बेचारा घबराहट में ऐक्सीडेंट का शिकार हो जाता है। आज इन दुर्घटनाओं का मामला लेकर हमारे प्रधान मंत्री यहां आए हैं। आज यूनियन की एक मीटिंग भी हुई थी जिस में एक ज़बरदस्त प्रस्ताव पास किया गया। वह भी आप को पढ़ कर सुनाया जाएगा।

श्री बी० डी० जोशी ने कहा- साथियो! आज हम शाम को इर्विन हस्पताल में गए। कल के तीन साथियों की हालत देख कर कलेजा दहल गया। तीनों साथी कोयले की तरह काले हो रहे थे। एक का मुंह सूजा हुआ था। आंखों का पता न लगता था। उन के आग से जले हुए शरीर भुन रहे थे। वह कराह रहे थे और कहते थे हमें दवाई दो हम फुकें जा रहे हैं। हस्पताल वालों का इलाज भी तसल्लीबख़्श नहीं। अगर कोई आफ़ीसर होता तो हज़ारों डाक्टर आ जाते। सैंकड़ों इंजैक्शन लगते। परन्तु यह मज़दूर लोग जिन्होंने लाला जी और पाठक जी की तिजोरियां भरने के लिए अपनी जान को ख़तरे में डाला उन्हें कोई पूछने वाला नहीं। पाठक कितना ज़ालिम है कि जब बिजली खाते के कारीगर अपने तीन साथियों के साथ जाने को तैयार हुए तो उन्हें रोक दिया गया। इन चालीस मनहूस घंटों में चार आदमी हस्पताल में पड़े मौत से खेल रहे हैं। नहीं कहा जा सकता वह हमारे बीच आएंगे भी या नहीं। बहादुर साथी कुन्दन सिंह की हालत देख कर कलेजा मुंह को आने लगा। कल बिचारा अपने घर में हंसता खेलता था आज मौत से लड़ रहा है। नए बायलर में कोयला ले जाने के लिए जो मशीन बनी है उस में उस का हाथ कटा है। चार आना की बचत के लिए लाला लोगों ने मज़दूर की जान से खेलना स्वीकार कर रखा है। कम कीमत के बेकार पुर्ज़े लगा रखे हैं। रद्दी मैटीरियल ही एक्सीडेंट का कारण है। लाला श्री राम के बाप ने भीखराम के लिए कुछ लाख रूपया छोड़ा। श्री राम ने भरत राम के लिए लाखों के करोड़ों बनाये और भरत राम करोड़ों के

अरबों बना रहा है । दूसरी तरफ़ फ़तू कारीगर ने बीजू के लिए २०० रुपया कर्ज़ा छोड़ा । बीजू ने अपने लड़के के लिए ६०० कर्ज़ा छोड़ा और अब वह ८०० छोड़ेगा । सरमायदार की तजोरी भरती जा रही है और मज़दूर का कर्ज़ा बढ़ता जा रहा है । महंगाई केस में हम ने कागज़ात मंगवा कर पेश कराए । पता चला है कि मज़दूरों ने पिछले साल से पांच गुणा कर्ज़ा ले रखा है । डाक्टर कपूर जिस का मिल में कोई काम नहीं उस की कोठियां बन गई । पाठक जी को कमिशन मिल गई । लाला जी के पौ बारा हो गए और मज़दूर हाथ पैर तुड़वा कर हस्पताल में पड़ गये । आज की समाजवाद सरकार भी सरमायादार का साथ दे रही है । सरमायदार के कहने के अनुसार कानून बनाती है । एस० बी० मिल का एक केस है । जहां एक कारीगर की चार उन्गलियां कट गई । डाक्टर ने उसे फ़िट कर दिया और लाला लोगों ने उस का पता साफ़ कर दिया । हमें सरकार ने जवाब दिया कि हलका काम नहीं दिया जा सकता । मालिक की मर्ज़ी है रखे या न रखे । आज जैसे हम ने नारे लगाने शुरू किये हैं "सरमायदारी का नाश हो "। इसी तरह सरमायेदारी ने भी मण्डे पर लिख लिया है कि मज़दूरों का खून चूसो । उन्हें कम तनख़ाह दो । लाला जी ने दमन के लिए ही पाठक जी को यहां बुलाया है । पाठक जी ने बीड़ा उठाया है कि ४०००मज़दूरों से इतनी ही मरोडक्शन कराएगा । उसे पता था कि एकता यूनियन के होते उस की पेश न जाएगी । इसी लिए वह एकता के कार्य कर्ताओं को निकालने की कोशिश करते रहते हैं । आप ने कंस की कहानी सुनी होगी कि कंस ने अपने बचाओ के लिए बच्चों को मरवाया । इसी तरह अपने बचने के लिए वह एकता यूनियन को ख़त्म करना चाहते हैं । यही हालत आप सब की होने वाली है । बी मिल उखड़ने वाली है । वहां के कारीगरों को बुख़ार चढ़ रहा है । ऐसे ही अपने दमन चक्र से वह आप को पीस देगा । आज मीटिंग में जो प्रस्ताव पास हुआ वह मैं पढ़ कर सुनाता हूं ।

" एकता यूनियन २३-११ और २४-११ की दुर्घटना पर शोक प्रकट करती है । कारपोरेशन से वह मांग करती है कि घायल साथियों का ठीक इलाज करें । यूनियन फ़ैक्टरी इंस्पैक्टर विभाग से भी मांग करती है कि एक्सीडैंट के कारण की जांच कराएं । हमारे विचार से तीन मुख्य कारण हो सकते हैं ।

१) वर्क लोड । ६ कारीगरों का काम एक मज़दूर से लिया जाता है । मज़दूर काम की ज़्यादती से घबरा कर एक्सीडैंट कर बैठता है ।

२) सस्ता और बेकार मैटीरियल लगा रहा है ।

३) आफ़ीसरों का डंडा हर समय कारीगरों की पीठ पर रहता है । चार्ज शीट और ससपैंशन की धमकी से मज़दूर का दिमाग़ी संतुलन बिगड़ जाता है । आप यदि प्रस्ताव को ठीक समझते है तो हाथ उठा दें ।" (हाथ उठाए गये)

तो दोस्तो इस दमन चक्कर को अब ख़तम करना है । यह प्रस्ताव हम सरकार को भेजेंगे और मांग पूरी कराते हुए इन घायलों के लिए मुआवज़ा मंज़ूर कराएंगे । अगर सीधी तरह काम न बना तो जलूस जलूस करने होंगे । इसके लिए आप को तैयार रहना चाहिए । इन्क़लाब ज़िन्दाबाद - वर्कलोड कम करो - घायलों को मुआवज़ा दो ।

नकल बोर्ड एकता यूनियन तारीख २५-११-५६

क्या मज़दूर की जान की कोई कीमत नहीं । साथियो ! पिछले दो दिनों में भारी यानी बहुत बड़े हादसे हुए हैं जिससे तमाम ही मज़दूरों में भारी और दुःख और गुस्सा है । मिल में लाला जी के दफ़्तर से खातों तक अफ़सरों और दफ़्तरों की शान और शौकत पर करोड़ों रुपया सालाना फ़ज़ूल बरबाद हो रहा है । अफ़सरों की फ़ौज में ज़्यादा तर मुफ़्त ख़ोर नाहिल है । जिन का काम सिर्फ़ मज़दूरों को तंग करना है । टेम्परेरी कारीगरों को पास बंद करने की धमकी देकर काम बाढ़ करवाना है । इसी धींगा धींगी में कई साथी जान से हाथ धो बैठे हैं । हादसे के बाद सरकारी हस्पताल के धक्के खा कर भी कोई बच निकले तो फिर वे रहम मिल वाले काम नहीं देते । कानून, मालिक और सरकार के थपेड़े खाते खाते पूँजी वादी समाज में ज़मीन आसमान के दरम्यान अपने बच्चों को छोड़ कर मज़दूर दम तोड़ देता है । सिर्फ़ यह कीमत है मज़दूरों की उन लुटेरों के राज में । मज़दूर की कल कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन डी० सी० एम० ब्रांच की मीटिंग में मंदरजा ज़ैल प्रस्ताव पास हुआ जो जल्दी ही भारत सरकार के पास भेज दिया जायेगा ।

डी० सी० एम० ब्रांच की यह मीटिंग मिल में अन्धा धुन्ध बढ़ रहे एक्सीडेंटों पर बहुत अफ़सोस और गुस्सा ज़ाहिर करती है । पिछले ३६ घंटों में चार बहादुर मज़दूर साथी ख़तर नाक हादसों के शिकार हो चुके हैं । पहले हादसे में जो मोरख़ा २३-११-५६ की सुबह को हुआ ३ साथी श्री करतार सिंह, ब्रिजी राम और राम सहाय बिजली की मोटर में कल मोरख़ा २४-११-५६ को एक दूसरे बहादुर जवान सरदार कुन्दन सिंह कोला बढ़ाने वाली मशीन की चैन का शिकार बने । इस अफ़सोस नाक हादसे की वजह से उन का दाहिना हाथ कोयला कनवेआर बेल्ट में फँस कर जड़ से उखड़ गया । बेरहम अफ़सरों ने खाते के दरवाज़े बंद कर दिये किसी को देखने भी नहीं दिया । यह चारों साथी अब इर्विन हस्पताल में हैं और इन की हालत नाज़ुक है । इन का इलाज भी ठीक नहीं हो रहा है । इसके लिए ई० एस० आई अधिकारियों से मांग करते हैं कि पूँजीवाद के इन बेगुनाह शिकारों का इलाज ठीक ठीक किया जाये । यह मीटिंग इस नतीजे पर पहुंची है कि मिल में यह बढ़ते हुए हादसे कम्पनी के बढ़ते हुए जुल्मों और बेहद छटनी का नतीजा है । जनरल मैनेजर मिस्टर पाठक ने मिल में मज़दूरों को डरा कर के भय भीत करने और उन ग़ैर ज़िम्मेदाराना काम लेने की जो नीति अख़्त्यार की इससे मज़दूरों की दिमाग़ी और जिसमानी परेशानी बढ़ जाने से और दूसरी तरफ़ सस्ता और नाकारा सामान के इस्तेमाल और अफ़सरों की लापरवाही से यह हादसे बढ़ रहे हैं । यह मीटिंग मांग करती है कि सरकार का फ़ैक्टरी इंसपेक्टर का महकमा इन हादसों की खुद इंक्वायरी करे और कम्पनी को मजबूर करे कि वह मज़दूरों के खून से होली खेलने वाली अपनी पालिसी को छोड़ और इन चार साथियों को पूरा पूरा मुआवज़ा ~~जल्द~~ अदा करे । कल शाम को मज़दूर साथी हस्पताल में इन साथियों को देखने गये । यूनियन की तरफ़ से जनरल सैक्रेटरी साथी बी० डी० जोशी और दूसरे ओहदे दार भी गये । उन की हालत को देख कर हर आदमी की आंखों में आंसू आ जाते हैं ।

ता० २६-११-५६ को ६-३० बजे सुबह से ७-३० बजे तक बकीर गेट पर एकता यूनियन की ओर से करीब २००-२५० कारीगरों के सामने मुन्शी नारायण प्रसाद, बलदेव सिंह और बी० डी० जोशी ने भाषण किया जो कि निम्नलिखित है ।

१- मुन्शी नारायण प्रसाद ने कहा साथियो आप के सामने इन दो तीन दिनों के अन्दर जो दुर्घटनाएं हुई हैं वो सब पाठक शाही से भयभीत हो कर हुई हैं । जब से पाठक शाही का शासन हुआ है तब से मज़दूरों के ऊपर काम बाढ़ बहुत अधिक होने के कारण उन की शारीरिक और मानसिक शक्ति बिलकुल ही जाती रही है । जिस का कारण यही है कि मिल में दिन प्रतिदिन दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं । ता० २३-११-५६ को बिजली खाते के तीन साथियों की जो दुर्घटना हुई है और तारीख २४-११-५६ को साथी कुन्दन सिंह/[illegible] खाते का बाजू कट गई है जो कि हस्पताल में पड़ा है और यह साथी जो बिजली से जले हैं वह भी इस समय इर्विन हस्पताल में पड़े हुए हैं । इन साथियों को जब हम हस्पताल में देखने के लिए गए तो हम लोग उन साथियों को नहीं पहचान सके । हमारे साथी बी० डी० जोशी साहब ने एक साथी को बड़ा मुश्किल से पहचाना । उन की शक्ल बिजली की आग से जल कर काली पड़ गई है जो कि आदमी उन को देख कर घबड़ा जाता है । फिर मैं ज्यादा न कहता हुआ भगवान से प्रार्थना करता हूं कि भगवान उन को जल्दी ही आराम दे ।

२- बलदेव सिंह ने भी इन चारों दुर्घटनाओं के बारे में संक्षिप्त रूप में बताया और एक साथी जौहरी मल वाइंडिंग खाते की मृत्यु के बारे में बतलाया कि साथी जौहरी मल की ड्यूटी रात की थी । वह दिन में कुछ घरेलू काम के कारण आराम न कर सका । जब वह फुर्सत पाया तो करीब शाम को ७ बजे सो गया । जब उसकी आंखें खुली तो उस वक्त १०-१० हो चुके थे । उसको चार पाई से उठते ही पाठक की शक्ल और उसके गेट चपरासियों की शक्ल नज़र आई जो कि उन के डर की वजह से घर से भागता हुआ बकीर गेट के अन्दर पहुंचा गेट नं० २२ तक पहुंचने पर उस को उल्टी हुई और वह बहुत ही घबरा गया । इस को मैं ज्यादा न कहता हुआ यह आप को बताता था कि वह रात को ढाई बजे जाना जो पहुंच गया । इस पाठक शाही ने इतना घबराहट पैदा किया हुआ है । अब आप के सामने बी० डी० जोशी जी इन सब साथियों की हुई दुर्घटना के बारे में एक प्रस्ताव आप के सामने रखेंगे । सब साथी अपनी राय देकर जावें ।

३- बी० डी० जोशी ने कहा साथियो बड़े दुख की बात है कि मिल में इससे पहले कभी इतनी दुर्घटनाएं नहीं हुईं । जितनी के एक साल के अन्दर पाठक साहब के सामने आने के बाद हुई हैं । हमारी यूनियन की तरफ़ से इन दुर्घटनाओं के बारे में एक बैठक हुई जिस में हम ने यह प्रस्ताव पास किया है जो कि मैं आप लोगों के सामने रखूंगा । बी० डी० जोशी ने प्रस्ताव पढ़ कर सुनाया । साथियो ! काम बाढ़ और इन निकम्मी मशीनरी के ख़िलाफ़ हम भारत सरकार को लिखा पढ़ी करेंगे और उन साथियों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करते हैं । कि वह साथी ठीक हो कर अपने काम पर आ जावें और कम्पनी उन को पूरा पूरा मुआवज़ा दे । और हम सब संगठित हो इस काम बाढ़ के और पाठक के शोषण का मुकाबला करेंगे । हम कम्पनी को लिखेंगे कि वह इस किस्म के हादसों को रोकने की कोशिश करे वरना हम गेट मीटिंग व जलूसों के द्वारा सरकार को बतलायेंगे कि हम पर इतने जुल्म हो रहे हैं । इस के बाद लोगों से हाथ उठवाये और नारे लगा कर भाषण समाप्त किया नारे नीचे लिखे हुए लगाये
इन्कलाब ज़िन्दाबाद, सरमायेदारी का नाश हो, पाठक शाही शोषण का दमन हो,
दुर्घटना हुए साथियों को मुआवज़ा दो ।

Telegrams : "CLOTH" 1 DEC 1959 Telephone : 98

HISSAR TEXTILE MILLS, HISSAR

Proprietors :
Delhi Cloth & General Mills Co. Ltd. Delhi.

HISSAR,

No. ________ *Dated* 28 NOV 1959 195.

(261)

The General Secretary,
Hissar Textile Mills Workers Union,
Nagori Gate,
Hissar.

Dear Sir,

We are in receipt of your letter No. 96/847/59, dated 28.11.59.

Your above mentioned letter is a mere intentional distortion of facts and is meant to mislead others. We have not lifted the restriction of signing the Visitors Book, which is maintained at the Main Gate for this purpose. If you or any other office bearer of your Union enters our Main Gate without recording your or their signatures along with the object of your visit, you will do so at your own risk and responsibility for any legal action, which we may take in this matter.

Thanking you,

Yours faithfully,
Bharat Saran
GENERAL MANAGER.

H/4R-6/9670

c.c. (1) The Deputy Commissioner, Hissar.
(2) The Superintendent of Police, Hissar.
(3) The Labour Commissioner, Punjab, Ambala Cantt.
(4) The Labour Officer, Bhiwani.
(5) The All India Trade Union Congress, 4, Ashoka Road, New Delhi.
(6) Shri Satish Loomba, General Secretary, All India Trade Union Congress, G.T.Road, Jullundur.
(7) Lala Bharat Ram, D.C.M. Delhi.

IR/K.
28/11.

Phone No. 149 28 NOV 1959 WORKERS UNITE.

Hissar Textile Mills Workers Union,

Regd. No. 40 (Affiliated to A. I. T. U. C.) NAGORI GATE, HISSAR.

Ref: No. 846/59. (261) Dated 26-11-1959.

श्रीमान जनरल मैनेजर साहिब,
हिसार टैक्सटाइल मिल, हिसार।

विषय:— कालौनी के मैन गेट पर पाबन्दी।

प्रिय महोदय,

निवेदन यह है कि पिछले कुछ दिनों से मैनेजमेंट ने मैन गेट पर गैर जरूरी तौर पर कुछ पाबन्दियां लगादी हैं। यूनियन के जनरल सैक्रेट्री श्री रिछपाल सिंह, उपप्रधान श्री ताराचन्द और वर्किंग कमेटी के मेंबर श्री होशियार सिंह को कालौनी के मैन गेट पर रोक दिया गया और लम्बी बातचीत के बाद आपने कहा कि यह वहां पर रखे गए रजिस्टर में हस्ताक्षर करके अन्दर आ सकते हैं। आपकी यह कार्रवाई कोड आफ डिसप्लिन के विरुद्ध है और ट्रेड यूनियन हकूक पर बाधा है।

2. मैन गेट पर वर्करों के महमानों को रोक दिया जाता है और भारी पूछताछ के बाद एक रजिस्टर में हस्ताक्षर करवा कर अन्दर आने दिया जाता है। वर्करों में इस बात से बहुत ही असंतोष है।

3. कालौनी से जब वर्कर रिक्शा में बैठ कर शहर जाते हैं या शहर से आते हैं तो उन्हें मैन गेट पर उतार दिया जाता है और रिक्शा की तलाशी ली जाती है। इससे वर्करों को, उनकी स्त्रियों व बच्चों को बहुत ही परेशानी होती है।

इस लिए आपसे प्रार्थना है कि आप बाकायदा हस्ताक्षर कराने वाले तरीके को खत्म करें और कालौनी में वर्करों के महमानों के आने पर इस प्रकार रोक न लगाएं। आशा है आप इस पत्र पर हमदर्दी पूर्वक ठंडे दिल से सोच विचार करेंगे और यह पाबन्दी खत्म करेंगे।

भवदीय:—
T. S. Subramanian
For President

c.c.
1. S.P. Hissar
2. D.C. Hissar
3. L. Officer Bhiwani
4. L.C. Ambala
5. L. Bharat Ram Ji
6. P.T.U.C. Jullundur
7. A.I.T.U.C. N. Delhi

27 NOV 1959

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन

KAPRA MAZDOOR EKTA UNION

(AFFILIATED TO AITUC)

Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi.

Ref. No. .... (KMEU) /GOVT/315/59 Dated . 26th Nov, 1959.

(261)

The Secretary,
Ministry of Labour & Employment,
N E W D E L H I.

Dear Sir,

I have the honour to draw your attention to our letter No.KMEU/GOVT/289/59, dated 10th November, 1959 and request you to favour us with a reply at your earliest convenience and oblige.

Yours faithfully,

(B.D.JOSHI)
GENERAL SECRETARY

KUMAR

Copy to :-
The Secretary, All India Trade Union Congress, 4-Ashok Road, New Delhi in respect of our letter No.KMEU/AITUC/290/59, dated 11th November, 1959.

26 NOV 1959

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन
KAPRA MAZDOOR EKTA UNION
Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi

(261)

No.KMEU/DCM/306/59 Dated: 25th November, 1959.

The Managing Agents,
Delhi Cloth & General Mills Co., Ltd.,
Bara Hindu Rao,
D E L H I.

Dear Sir,

Sub: Alarming increase in the number of serious or major accidents in the Delhi Cloth Mills.

As you must be aware there have been no less than 4 major accidents in the Delhi Cloth Mills during the last 36 hours. In the first one of these three workmen, namely, sarvshree Karan Singh, Burji Ram and Ram Sahay sustained serious burns over the face and other parts of the body due to fire coming out of a huge electric motor. The three workmen are now undergoing treatment in the Irwin Hospital. The condition of at least one of them is giving cause to anxiety. In the 2nd case another operative, Shree Kundan Singh by name, had his entire right arm pulled out of the body by some sort of a conveyor-Belt newly installed in the Engine Department of the mills. Besides these 4 major accidents occurring in quick sucession our information is that a large number of accidents of minor nature have taken place in the mills during recent weeks, but the management have carefully concealed them from the workers.

While the immediate cause for the alarming increase in the number of accidents in recent months remains to be carefully investigated with the assistance of experts, the basic cause therefor is not far to seek. We have it on good authority that the management has steadily and surreptitiously been increasing the workload on workers with the result that in some of the deaprtments, notably in the Engineering and Power

Contd.......P.2

Plant Sections, the operatives are currently being forced to undertake almost double their normal work. In their so-called "economy drive" the management is purchasing cheap and defective stores. Add to this the terrorising tactics adopted by the management in recent months in order to subdue or cow down the workers into object submission to any and every unreasonable order of the management under the threat of 'disciplinary action'. Exploitation of the workers is thus being carried to the extreme with callous ~~xxxxxxxx~~ disregard to their health, safety or lives. In the name of 'reducing costs' a mad drive has been ~~x~~ launched to increase the workloads, to intensify operations, to tire the worker out physically and mentally by squeezing out every ounce of his energy or work capacity. The resultant resentment, mental and physical exhaustion, cultural and psychological starvation occasioned by workers' inability to participate in normal social and other activity ~~outside~~ the mills, etc., etc., has drastically unnerved the workers.

Add to this the ruthless suppression and repression let lose in side the plant in the so-called drive for efficiency and discipline. All this has unnerved the workers and their mental balance and poise is slipping from their grip.

We take this opportunity to remind you of our innumerable letter of protest sent against the policy of repression and exploitation adopted by the management during the last 1 year. These fatal policies have already started yielding their dreaded results. It is time the management paused for a moment and reviewed their policies in the light of these hard facts. Such methods can never benefit anyone in the long run.

While appealing for such a rethinking and re-appraisal, the Union also demands that an impartial enquiry, consisting of the Factory Inspector, a representative each of the management and of the workers, should be held into the causes of these near-fatal

Contd.....P.3

कपड़ा मजदूर एकता यूनियन

accidents and that the victims in each case should be fully compensated for the terrible suffering inflicted upon them for t the benefit of the management.

Yours Faithfully,

Sd/- (B.D.JOSHI)
GENERAL SECRETARY

KUMAR

Copies forwarded to:-

(i) The Chief Inspector of Factories, 1- Rajpur Road, Delhi.

(ii) The Director of Labour & Industries, 1- Rajpur Road, Delhi.

(iii) The Chief Commissioner, Delhi.

(iv) The Hon'ble Shree G.L.Nanda, Union Minister of Labour, Government of India, New Delhi.

(v) ✓ The General Secretary, All India Trade Union Congress, 4- Ashok Road, New Delhi.

(vi) Shree G.N.Aman, Chairman, Labour Advisory Board, Alipore Rd, Delhi.

(vii) The Provincial Secretary, Provincial Trade Union Congress, Gaushala Gate, Kishenganj, Delhi.

General Secretary

18 NOV 1959

Telegrams "NEWTEXTILE"
Cables "न्यूटैक्सटाइल"

Telephone : 53161

SWATANTRA BHARAT MILLS

Proprietors.
Delhi Cloth & General Mills Co. Ltd.,
DELHI

Najafgarh Road,
NEW DELHI-15

Our Ref. IND/ E-41/ 12302

Express.

17th Nov. 1959.

The Secretary,
All India Trade Union Congress,
4, Ashoka Road,
New Delhi.2.

Dear Sir,

With reference to your letter to our Managing Agent, L. Bharat Ramji, I hereby confirm that I will be glad to show round our Mills to the representatives of the Indonesian Trade Union Delegation on Thursday, the 19th instant at 3-30 P.M.

I hope you will find this in order.

Yours faithfully,

MANAGER.

K.

भारतीय डाक व तार विभाग

(261)

श्रेणी-क्रम 0 | सांकेतिक समय 50 | सं० 1848 | ग.

प्राप्त हुआ HSR (तारघर) से C 123 द्वारा

भेजा गया घं० मि० पर (तारघर) को द्वारा

तारघर-मुद्रा

मूल तारघर Hissar | दिनांक 25 | घंटा 10 | मिनट 20 | कार्य-विभागीय सूचनाएं | शब्द 37

प्रापक AITUCONG New Delhi

प्राप्ति समय 20 घं० 17 मि०

Unreasonable and illegal restrictions imposed on entrance of union general secretary and other functionaries in workers colony by hissar Textile mills management great unrest kindly intervene

Rachpalsingh

MGIPPAh.—922—9.11.56—2,12,400 Bks. [T.-185/52]

Phone No. 149 18 NOV 1959 WORKERS UNITE.

Hissar Textile Mills Workers Union,

Regd. No. 40 (Affiliated to A. I. T. U. C.) NAGORI GATE, HISSAR.

Ref: No. 823/59 Dated 15-11-59

261

To,
The General Manager,
Hissar Textile Mills Hissar.

Sub. Violation of the code of Discipline.
.T.S.

Dear Sir,

Reference your letter dated 11-11-59 adressed to Sh. Shayam Lal Deputy Commissioner (Labour) Punjab and a copy of the same sent to us.

In this connection I am to request that a copy of the full text of speeches alleged to have been delivered by Sh. Tek Chand on the dates mentioned in your letter may kindly be supplied in original language. As far as my information goes Sh. Tek Chand spoke for half an Hour on that date, and almost has said so many things in totally different contexts. This will be in the interest of the peace if we study full text of the speeches.

More over the management is tape recording our speeches since long and you can supply us full text of the speeches delivered in Hindi.

It will not be out of place to mention here that the management had objected to one speech of Sh. Tek Chand some six months back also. But inspite of our repeated requests we had not been supplied full text of that speech, consequently the matter was dropped.

I hope the verified full text of the speeches will be supplied us at an early date.

Yours faithfully,
Rachh Pal Giri
General Secretary

~~1. Labour Inspector Hissar.~~
2. Shree Satish Loomba All India Trade Union Congress G.T.Road Jullundur city.
3. The Secretary, Evaluation & Implementation Division Ministry of Labour New Delhi.

4. Shree B.L. Wadhera Factory Manager Atlas Cycle Industries Sone pat.

5. The ~~xxxxx~~Managing Agents D. C.M. New Delhi.

6. The Secretry A.I.T.U.C. Ne w Dehli.

7. Shree Shayam Lal Deputy Labour com missiner Ambala cantt.

8. The Labour officer. Bhiwani.

9. S.P. Hissar

10. D.C. Hissar

Rachhpal Singh

Phone No. 149

WORKERS UNITE.

Hissar Textile Mills Workers Union,

Regd. No. 40 (Affiliated to A. I. T. U. C.) NAGORI GATE, HISSAR.

Ref: No. 833/59 Dated 16-11-1959

श्रीमान जनरल मैनेजर साहिब,
हिसार टैक्सटाइल मिल्ज़, हिसार।

प्रिय महोदय,

सेवा में निवेदन यह है कि दि॰ 15-11-59 को दोपहर के समय श्री टेकचन्द के साथ कुछ वर्कर शहर से मिल में आ रहे थे, तो बाहर के गेट पर हैड जमादार श्री मोहन सिंह ने इन्हें रोका, गालियां दी और दुर्व्यवहार किया। हमने इस बात की पूरी जांच की है जिससे पता चला है कि श्री मोहन सिंह ने झगड़े में पहल की। इनके बारे में हमने पहले भी शिकायतें की हुई हैं कि यह झगड़ा किया करते हैं।

लगभग दो बजे वाच एण्ड वार्ड आफिसर श्री नारंग साहिब ने लेबर गेट के बाहर यूनियन के Office Secy. श्री काशीराम कौशिक को बुला कर कहा कि "हम टेकचन्द को ठिकाने लगा सकते हैं और मुझे नौकरी की भी परवाह नहीं है। हम खुद अगर हाथ न लगाएं तो भी इसके पीछे आदमी लगा सकते हैं।" उन्होंने पिस्तौल के लाइसेंस की भी धमकी दी। साथ ही उन्होंने यह भी धमकी दी कि "मैं अपने जोर से कोशिश करके यूनियन के पदाधिकारियों को लड़ा सकते हैं और पिटवा सकते हैं।" बिना किसी इख्तियार के एक अफसर का इस प्रकार एक झगड़े में इस प्रकार धमकी देना अच्छी बात नहीं है।

एक सुरक्षा आफिसर का इस प्रकार गेट पर धमकी देना Agreement, कोड आफ डिसिप्लिन और ग्रीवांस प्रोसिजर के विरुद्ध है। आशा है कि आप इस घटना की खुली इन्क्वायरी करेंगे। शहर व कालोनी में जबरदस्त अफवाह है कि यूनियन के वर्करों पर हमले होंगे। यदि ऐसा हुआ तो हम समय से पहले आपको चेतावनी देते हैं कि आप ऐसी घटनाओं को रोकें। यूनियन औद्योगिक शान्ति चाहती है यदि कोई दुर्घटना घटी तो उसकी तमाम ज़िम्मेवारी आप पर होगी।

भवदीय:—

K. Kaushik

for जनरल सैक्रेट्री।

HISSAR TEXTILE MILLS
WORKERS UNION, HISSAR.

C.C.
1. S.P. Hissar
2. D.C. Hissar
3. L. Bharat Ram ~~Delhi~~
4. L. Officer Bhiwani
5. L. Commissioner Ambala
6. P.T.U.C. Jullundur City
7. A.I.T.U.C. N. Delhi

261

November 14, 1959

Shri Bharat Ram,
Director,
Delhi Cloth & General Mills Co. Ltd.,
Curzon Road,
New Delhi.

Dear Sir,

A two-man delegation from the Indonesian trade unions, now in our country on a Study Tour under UNESCO auspices, would like to visit the Swatantra Bharat Mills during their stay in Delhi.

We would therefore request you to inform us if their visit to the Mills could be arranged, either on the 18th or 19th November.

The delegates are Messrs. Achadijat and S.Harsono from the All-Indonesian Trade Union Centre (SOBSI). During their visit to the Mills, they would be accompanied by Shri Satish Chatterjee of this office.

Thanking you in anticipation of an early reply,

Yours faithfully,

(K.G.Sriwastava)
Secretary

Memorandum of settlement under Rule 58 (3)

Employers: The Ajudhia Textile Mills Ltd.,
P.O.Ajudhia Mills, Delhi,
represented by: Sh.N.L.Sehgal.

Workmen of Ajudhia Textile Mills ltd.,
P.O.Ajudhia Mills, Delhi,
represented by: 1.

2.

Whereas the Central Govt. has been please to take over the Management of Ajudhia Tectile Mills Ltd. Delhi, in exercise of their power under Sec.18(a) of the Industrial (Development and Regulations) Act 1951, and whereas the Govt. of India has appointed M/S Karam Chand Thapar & Bros.Private Ltd. as the Managing Agents of Ajudhia Textile Mills Ltd. Delhi to begin with for a period of five years from the date of notificationin the official gazette, and whereas it is now intended to start the factory to provide employment to the Industiral Labour, and whereas an agreement has been reached between the Management and workmen with regard to their employment with the new Management, it is therefore now considered necessary by the parties that the terms of the agreement should be reduced in writing, as given below, so so that the agreement is legally regularised:

1. That the workers agree to work on the same wage structure and work-loads which were in force on the eve of the closure of Ajudhia Textile Mills i.e. 11th June 1959.

2. That the workers further agree not to claim any increase of whatever kind, in their wages till such time and the mills get into profits after meeting the legal prior charges, nor will they raise any demand which will result in any Industrial Dispute.

3. The workers further agree to forego their claim for compensation for the period of closure. With the view to comply with this undertaking, the party will file a compromise in the reference pending before the Industrial Tribunal at Delhi regarding compensation for the period of closure.

4. The new Management has agreed that in the event of the Supreme Court's judgment going in favour of the workers in connection with the case of dear-food allowance, the Management will only the amount that may become due as payable to workers as arrears. The workers, however, agree that the Management will give credit for the amount to each individual concerned in accordance with the books of the Company and terms of payment against the said credit the workers agree to have after one year of the date of credit in convenient instalments to be decieded between the parties.

5. The agreement is to remain in force for period of five years for which M/S Karam Chand Thapar & Bors.Pvt Ltd., have been appointed as the Managing Agents for the Mills.

Representative of Ajudhia
Textile Mills Ltd. Delhi

1.

2.

13 NOV 1959

कपड़ा मजदूर एकता यूनियन
KAPRA MAZDOOR EKTA UNION

(AFFILIATED TO AITUC)

Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi.

Ref. No. ..... (KMEU)/AITUC/290/59 *Dated* 11th Nov., 1959

261

The Secretary,
All India Trade Union Congress,
4- Ashok Road,
N E W D E L H I.

Dear Comrade,

Please find enclosed herewith a letter (copy) addressed to the Secretary, Ministry of Labour & Employment and a copy of our earlier correspondence with E.S.I.Corporation.

We would request you to take up the matter with the Ministry of Labour and Employment and further please raise the issue in the Central Board of the E.S.I.C. through our nominee on the said Board. You will no doubt agree that the matter is of the utmost importance to the employees, and unless suitable amendments are carried out in the Act and the rules and regulations framed thereunder, the interests of workers will suffer grave jeopardy.

Yours Comradely,

(B.D.JOSHI)
GENERAL SECRETARY

KUMAR

कपड़ा मज़दूर एकता यूनियन
KAPRA MAZDOOR EKTA UNION

Goushala Gate, Kishenganj Mill Area, Delhi

No.KMEU/GOVT/289/59 Dated: 10th November, 1959.

The Secretary,
Ministry of Labour & Employment,
N E W D E L H I.

Dear Sir,

The Insured Persons who as a result of illness or injury had to be it medically treated by Employees State Insurance Dispensary, used to be given certificates of fitness on recovery, and in case of disablement or in view of the continuing effects of disease were given certificates, recommending to the Mill Management to assign them some light work. This practice continued for sometime, but strangely enough it has been discontinued recently without assigning any reason or intimation to the Union. These I.Ps or their Dispensaries now are issuing only certificates declaring the I.P. "fit for work" even in those cases where he is prima-facie rendered unfit to undertake his normal duties in the Mills.

This discontinuance of issuing recommendation to the Mill authorties to assign light work in view of the nature and effect of injury has affected adversely the interests of the employees for whose benefit the legislation was enacted. The question whether an employee is fit to discharge the normal duties which he was discharging prior to the infliction of injury, is definitely the function of the Medical Officer whose opinion shall decide the nature and quantum of work to be assigned. Consequent upon the discontinuance of the practice referred to above, the mill-managements have started expressing their inability to provide partially incapacitated or otherwise ha handicapped I.Ps any work other than the one on which they were engaged previously.

Contd.....P.2

We made several representations to the Regional Director, E.S.I.C. to restore the discontinued practice of issuing such certificates, but their reply has always been evasive. They point out that there is no provision in the Act or the Rules or regulations under which they could make such a recommendations and that the employer concerned is free to provide light work to the affected I.P. or to terminate his services in case he is found to be unable to perform his previous duties. It is further pointed out in letter No.28-2/15/59(M) dated 6th November,1959 (copy enclosed) from E.S.I.C. Assistant Medical Commissioner that " It may also be mentioned that a worker who is compensated for employment injury resulting in permanent disablement can't be issued with a certificate recommending light work to his employer, who is not under any legal obligation to provide work to such an insured p e rson". We would like to inform you of a case in which an employee lost his three fingers during the course of employment in the mill. The mill-authorities are prepared to give him light work if he is able to produce a certificate from the Medical authorities of E.S.I.C., specifying the type of work heavy or light or medium which the I.P. is able to handle in the opinion of Medical officer. This means that the employee should suffer deprivation of his means of livelihood unless E.S.I.C. gives his opinion about his capacity to work vis-a-vis job. The insured person approached the Medical Officer but his request was turned down for the issue of such a certificate.

The prevalent practice in not issuing such certificates shall react adversely to the interests of the I.P. who are capable of doing work of other nature than the one assigned to them prior to the infliction of injury.

Contd.....P.3

The very object in view of the framers of the Act i.e. to afford social security to the ill or disabled employee is this nullified if the employee loss his job in return for a small fraction of his previous earnings. in the form of disablement compensation.

We would like to inform you that there is no provision in E.S.I. Act its rules or regulations made thereunder, barring the issue of such certificates. However, we would request you to take urgent steps to unambiguously lay down in the Rules or regulations that it would be incumbent on the employer to provide work to a partially disabled employees ~~to provide work~~ if in the opinion of the Medical Officer of E.S.I.C. the said employee is capable of undertaking a suitable light work. In case the contention of Assistant Medical Commissioner of E.S.I.C. is accepted then no worker who has suffered partial permanent disablement can hope to remain employed even in case ~~where~~ the management is prepared to take back the I.P. on a certificate by the Medical Officer of Dispensary. The interpretation put upon the law by the Medical Commissioner of the ~~Corporation~~ Corporation would be tantamount to direct negation of the very purpose the Act was enacted for and highly prejudicial to the employees for whose benefit the act has been ~~enacted~~ brought into being.

We would request you to take immediate steps for redressing the geniune grievance of the employees ~~mfxk~~ by effecting the desired additions or modification in the Employees State Insurance Act, its rules and regulations.

A copy of the correspondence on the subject is enclosed herewith for your ready reference.

Yours faithfully,

(B.D.JOSHI)
GENERAL SECRETARY

KUMAR

Copy forward to :-

The Hon'ble Shree G.L.Nanda,
Union Minister of Labour & Employment, Govt.of India, N.Delhi.

3 DEC 1959

रजिस्टर नं. २६७

मिल मजदूर युनियन इन्दौर (रजिस्टर्ड)

१६७ नयापुरा नं. १,
इन्दौर (म. प्र.)

क्रमांक .... श्री .... दिनांक १९५

(261)

श्रीमान

सेवा मे

विषय :- प्रकाशनार्थ

निवेदन है कि आज दिनांक २९-११-५९ को ब्राम्हण सभा जेलरोड मे मिल मजदूर यूनियन द्वारा एक विशाल सम्मेलन मजदूरो का साथी शिवनारायण श्रीवास्तव की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमे प्रस्ताव किये गये तथा जिनकी प्रतिलिपियां साथ संलग्न है

इन विषयो पर यूनियन कई वैधानिक कार्यवाही कर चुकी है लेकिन खेद है कि शासन ने इस ओर कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया है इसलिये मजबूरन मजदूरो को अपने हितो की रक्षा के लिये आन्दोलन का रास्ता अपनाना पड रहा है।

अतएव मजदूरो द्वारा यह तय किया गया है कि शासन तथा मालिको पर दबाव डालने के लिये फिलहाल १०१ घंटे की भूख हडताल की योजना बनाई गई है। तथा ४ दिसम्बर को इसे कार्यान्वित किया जायेगा स्थान की घोषणा बाद मे की जाएगी यदि शासन ने इस पर भी ध्यान नहीं दिया तो बाध्य होकर सख्त कदम उठाने पर मजबूर होना पडेगा।

रजिस्टर नं. २६७

मिल मजदूर युनियन इन्दौर (रजिस्टर्ड)

१६७ नयापुरा नं. १,
इन्दौर (म. प्र.)

क्रमांक ..... श्री ..... दिनांक १९५

प्रस्ताव

वेज बोर्ड

यह सम्मेलन इस बात पर खेद व्यक्त करता है कि केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त टैक्स टाइल वेज बोर्ड को दो वर्ष से अधिक समय हो गया है फिर भी अभी तक उसकी रिपोर्ट प्रकाशित नहीं की गयी है। यह सम्मेलन मांग करता है कि वेज बोर्ड का फैसला शीघ्र ही घोषित किया जाये व उसे इन्दौर में भी फौरन लागू किया जाये।

रजिस्टर नं. २६७

मिल मजदूर युनियन इन्दौर (रजिस्टर्ड)

१६७ नयापुरा नं. १,
इन्दौर (म. प्र.)

क्रमांक ....   दिनांक १९५

प्र स्ता व

<u>१९५८ का बोनस</u>

इन्दौर मिल मजदूर यूनियन द्वारा आयोजित यह मजदूर सम्मेलन इस बात पर गहरी चिंता व्यक्त करता है कि १९५९ का वर्ष समाप्त होने आया है व फिर भी सन १९५८ का बोनस मजदूरो को अभी तक नहीं मिला है। हम यह मानते है कि अपर्याप्त वेतन की पूर्ति के लिये बोनस मजदूरो का हक है और इसीलिये मजदूरो मे ५८ का बोनस नहीं मिलने पर काफी बेचैनी है।

यह अफसोस की बात है कि मान्यता प्राप्त यूनियन मजदूर संघ ने सन १९५८ के बोनस बाबद कोई भी कार्यवाही नहीं की है तथा क्योकि कानून से कोई कानूनी कार्यवाही करने का अधिकार सिर्फ उन्हींको है इसीलिये मजदूरो के लिये कोई वैधानिक मार्ग बोनस प्राप्त करने का भी रहता नहीं है दुख की बात है कि इस परिस्थिति मे शासन भी अभी तक चुप है तथा मजदूरो की कोई मदद नहीं कर रहा है ऐसी परिस्थिति मे मजदूरो का असंतोष उग्र हो गया है।

अतएव हम शासन से मांग करते है किमजदूरो को बोनस की न्यायिक मांग दिलाने के लिये फौरन कदम उठाएं।

रजिस्टर नं. २६७

मिल मजदूर युनियन इन्दौर (रजिस्टर्ड)

१६७ नयापुरा नं. १,
इन्दौर (म. प्र.)

क्रमांक ..... श्री ..... दिनांक १९५

प्रस्ताव

छंटनी - काम - बाढ

इन्दौर की मिलों मे बहोत तेजी से छटनी का हमला शुरू कर दिया गया है जिससे मजदूरों मे इस हमले से बड़ी बेचैनी व - रोष पैदा हो रहा है पूरी योजना क्या है वह मजदूरों को बतलाया भी नहीं जाता है और योजना मनमाने व पक्षापात पूर्ण ढंग से अमल मे लाई जा रही है। आशंका यह है कि इससे करीबन १००० मजदूर बेकार कर दिये जायेंगे। तथा उनका काम बाकी बचे हुए मजदूरों पर डाला जायगा जबकि आज की हालत ये मजदूर अधिक कार्यभार सहन करने मे कतई असमर्थ है। मिल मजदूर यूनियन द्वारा आयोजित यह सम्मेलन यह इस छटनी काम बाढ के हमले की तीव्र निन्दा करता है इन्दौर की मिलों की स्थिति अगर सुधारना है तो मिलों मे फैली भाई भतीजे वाद व दुर्व्यवस्था को दूर करना जरूरी है। और छटनी काम बाढ लादना बल्कि दुर्व्यवस्था कायम रहते हुए मनमानी छटनी से हालत और भी खराब हो जायगी। सुधारने की बात तो दूर रही।

सम्मेलन शासन से मांग करता है कि मनमाने ढंग से की जा रही छटनी से वह फौरन हस्तक्षेप करे व देहली त्रैदलिय सम्मेलन के फैसले के अनुसार ऐसी सुव्यवस्था करे कि :-

रजिस्टर नं. २६७

मिल मजदूर युनियन इन्दौर (रजिस्टर्ड)

१६७ नयापुरा नं. १,
इन्दौर (म. प्र.)

।२।

क्रमांक _____ दिनांक _____ १९५

सरकार पहिले जांच कर ले कि क्या छटनी काम बाढ जो किया जा रहा है वह राष्ट्र तथा उद्योग के लिये जरूरी है।

क्या मजदूर शारिरिक रूप से बढे हुए काम बाढ का बोझा ग्रहण करने की हालत मे हैं। और क्या मशीन माल व कारखाने मे उसके अनुरूप किये सुधार गये है।

कार्य प्रणाली के परिवर्तन:-

छटनी की सम्पूर्ण स्कीम के मजदूरो कोपहिले से ही अवगत किया जाये तथा बाद मे ही स्कीम अमल मे लायी जाए इससे होने वाली बचत मे से मजदूरो को उचित पगार कटोत्रा प्राप्त हो तथा परिणाम स्वरूप कपडे के भाव भी कम हो न कि मुनाफो की छूट मे ही वृद्धि होने दी जाए।

यूनियन मजदूरो को आव्हान करता है कि आजकल की जा रही मनमानी छटनी तथा काम बाढ का एकताबद्ध डटकर मुकाबला करो।

7 DEC 1959

पत्रांक १८/४/५९

तिथि २-१२-५९

29-12-59

(261)

मंत्री,

अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस
४ अशोक रोड, नयी दिल्ली।

प्रिय साथी,

आप को सूचित कर रहा हूं कि फुलवारी शरीफ सूती मिल मजदूर यूनियन को सम्बन्धता प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन को प्राप्त हो गया।

अभिनन्दन के साथ
आप का [illegible]
[illegible]
[illegible] सचिव

नोट – परन्तु ट्रेड यूनियन रेकार्ड नहीं प्राप्त हो रहा है। कभी मिलता भी है तो समय पर नहीं। इसके दिल्ली के साथी लोग हिन्दी में ट्रेड यूनियन सम्बन्धित कोई पत्र निकालते हैं। कृपया उस पत्र का पता भेजेंगे।

Pl. check up & say the TUR is sent regularly after clearing all dues. He complains [illegible]. Post office [illegible] the address of Mazdoor [illegible].

[illegible] 11/xii

TEXTILE MAZDOOR EKTA UNION (Regd.)

5 DEC 1959

PUTLIGHAR,
AMRITSAR

Ref. No. ______ 261 Dated 3.12. 1959.

My dear Com. Srivastva,

Please refer to your letter dated 1.12.59.

From your above mentioned letter I find that you have not understood our position. You write "Meanwhile I would suggest that all the problems connected with the working of E.P.F. Act can be raised in the tripartite Advisory Committee on state level ...."

I have to inform you that no advisory Committee at State level has been set up in Punjab and this is our demand & this demand has been rejected by the Govt. Please carefully read my letter and you will find this.

Secondly I have to request you to take up the matter with Ministry of Labour apart from what you have done ie you have forwarded a copy of my letter to AITUC representative on the Central Board of Trustees whose meeting may not be held for quite some time.

With greetings

Yours fraternally

Parduman Sgh G. Secty

14 DEC 1959

PHONE : 24011 (4 LINES)
GRAMS : "YARN"

DELHI CLOTH MILLS

PROPRIETORS : THE DELHI CLOTH AND GENERAL MILLS CO., LTD.

BARA HINDU RAO
POST BOX NO. 1618
DELHI

(261)

Ref. No. LO/485

Date 3rd Dec. 1959

416

The Chairman,
Evaluation & Implementation Committee,
Delhi Administration,
Delhi.

Dear Sir,

We are herewith enclosing copy of a cyclostyled hand-bill distributed by the Office bearers of the Kapra Mazdoor Ekta Union at the Workers' Gate of our factory. Through the above handbill the workers of our mill have been further incited by the union against the management on the basis of an altogether imaginary, baseless and fabricated matter.

We are also enclosing copy of a notice displayed on the Notice Board of the Kapra Mazdoor Ekta Union at the Factory Gate in the name of Sri B.D.Joshi, the General Secretary of the Union. It is needless to offer any comment on the tone and contents of the above notice.

We are bringing the above facts to your notice for such action as you may deem proper.

Thanking you,

Yours faithfully,

[signature]

General Manager.

Encls. as above.

Copy to The Secretary, All India Trade Union Congress, 4 Ashoka Road, New Delhi.

18 DEC 1959

A.I.T.U.C

Phone No. 149

WORKERS UNITE

HISSAR TEXTILE MILLS WORKERS UNION

Regd. No. 40

(AFFILIATED TO A. I. T. U. C.)

NAGORI GATE,
HISSAR

Ref: No. 821/59

Dated 5-12.59

261

To,

The Labour Commissioner,

Ambala cantt.

Sub- Violation of Code of Dicispline , Enquiry procedure , Grievance Procedure and Agreement by the Management Of Hissar Textile Mills Hissar.

Sir,

Since the formation of the union the workers of Hissar Textile Mills Hissar are experiencing great hard ship and harassment. So far as the Union is concerned we have always tried our level best to create a peace ful atmosphe re [illegible] and to increase production . But unfortunately the attitude of the management has often been most unhelp ful. We have alrendy pointed out some of the illegalities and acts of unfair labour practice in our complaints dated 6-1-59, 12-1-59, 16-4-59, 14-5-59 and 2. 6-59 addressed to the Labour commissioner Ambala Cantt, and letter dated 30-8-59 Addressed to the General Manager Hissar Textile Mills Hissar.

We have also sent in another complaint in connection with the recognitio n of our union in the month of April 1959.

On 11.2.59 an Agre ment was signed by both the parties. In that agre ment it is clearl y stated that the " Code of Dicisipline" was not properly observed . Now both the parties solemnly agree that the cod e of Dicsipline will be observed in it letter and spirit." But eve nts after 11-2-59. clearly prove that it was again not observed by the Management. In this

Phone No. 149

WORKERS UNITE

HISSAR TEXTILE MILLS WORKERS UNION

Regd. No. 40

(AFFILIATED TO A. I. T. U. C.)

NAGORI GATE,
HISSAR

Ref: No.....

Dated.....

connection I wish to draw your kind attention towards ourr complaints No 258/59and 325/59 dated 14-5-59and 2-6-59respectively.

On 26-8-59 Com. Satish Loomba came to Hissar In this presence It was decided that a summary of the complaints connected with the grievance procedure be sent to the management for scrutiny and for immediate point by point reply . That letter was sent accordingly (copy enclosed) . But till to day we have not received a reply.

Now after study ing the attitude of the management and having waited for long some improvement but without result we are bringing a few facts connected with the subject mentioned above to your notice

1. THE FACTS ARE AS UNDER.

I Attitude of Sh. P.D. Mehta mil l Labour officer.

IN this connection we had sent numerous complaints to management . When ever this question comes under discussion the management always assured us that there would be no cause for complaint as regards his behavi our in the future.

When Com. Satish Loomba came here in the monthof Oct, 1959again the assurance w as given by the management. " Let us forget the past and start a fr esh" But unfortunately Mr. Mehta has not changed his highly unfair and provocative attitude as showen concretely in our letters No.2 02/59,236/59,277/59;335/59,205/59, 438/59,289/59,707/59,275/59,27 9/59,365/59,and 771/59dated 25-4-59 6-5-59.20-5-59,5-6-59.,27-4-59 .,24-7-59.,10-10.59.20.5.59-.21.5.59 8.6.59.and 5.11.59.In addition to these letters , the workmen concerned have made many individual complaints from time to time.

Phone No. 149

WORKERS UNITE

HISSAR TEXTILE MILLS WORKERS UNION

Regd. No. 40

(AFFILIATED TO A. I. T. U. C.)

NAGORI GATE,
HISSAR

Ref: No.....

Dated.....

2. Some time back the management started the practice of not giving the name of the enquiry office/r when any workers is required to appear for enquiry.

3. Our former union representative Sh.Sat Narain was insulted on 5.8.59. during the enquiry of Sh. Ganesh Parshad by Sh. P.D. Mehta inquiry officer.

4. The representations made by the Motor attendants on 22.1.59 and 19.6.59. were not replied to by the management .

5. Sh. Hari Singh Frame doffer has been refused work illegally.

6. Our shift representative Sh . Hoshiar singh and a worker sh. Dukhi were transferred from one machine to another. In this way their workload was increased and they were harassed without justifiable cause for nearly two months.

7. Workload has been increased on waterworks attendants for the last seven months without increase in wages.

8. No reply has been given at all to the demands put forwarded by the frame depttworkers .

9. Demands put forward by the winding workers have not been properly discussed and replied to.

10. Com. Subermaniam , Shri one hand and nearly one Dozen union leaders and workers have been suspended . These are clear -cut cases of victimisation.for union activities.

11. The management is not communicating to us the names of protected workmen.out of the list supplied by the union in accordance with the Disputes Act and the Rules made thereunder.

Phone No. 149

WORKERS UNITE

HISSAR TEXTILE MILLS WORKERS UNION

Regd. No. 40 (AFFILIATED TO A. I. T. U. C.) NAGORI GATE, HISSAR

Ref: No..... Dated.....

12. The Management has punsihed our Vice president Sh. Subermainaim an frivolous charges for which there is no provision in the standing order even.

13. Suspension allowance is no t paid to the concerned workmen in time.

14. The Management had imposed restrictions on the entry of union General Secretary and some oth er union officials without proper notice U/s 9 A. Only after stronge protest by the workers were the restrictions withdrawn.

15. The management has interfe red in our legitimate union activiti es many a time.

16. The managment interfered w ith the collection of union funds.

17. The management is helping to prop up a puppet union whichhas no support among the workmen.

18. In order to under mine the authority and prestige of our union and against the oral unde retandinggiven to us the management nominated called some twenty workers to represent the work men in a meeting schedule to be held between the representatives of the workmenand the management.

19. The management have filed suits against our union in defiance of Section 9/A of I.D. Act .

20. The managment failed to give reasonable opportunity for getting their grievances redressed to five doffers. This was most necessary according to grievance procedure.

21. Sh. Narang mills executive officer , misbehavioured with and even threatened one of our union leaders Sh. Tek Chandat the Mills Gate.

Phone No. 149

WORKERS UNITE

HISSAR TEXTILE MILLS WORKERS UNION

Regd. No. 40

(AFFILIATED TO A. I. T. U. C.)

NAGORI GATE,
HISSAR

Ref: No.....

Dated.....

"5"

22. The management is constantly propagating against the union x General Secretary and Tek Chand on false and flimsy ground.

23. Sh. Gopal s/o Munar Pass No . 38 Ring II was demoted to waiting list (Badli) on 21.5.59. for one month . But he was made permanent after three months on 29.7.59.

24. No reply has been sent to our letter No 682/59 dated 23.9.59 regarding water Taps , latrines and bath rooms

25. Reference letter dated 27.7.59 regarding school fee. No reply. No action.

26. Reference letter dated 21- 7-59 regarding Malaria fever . No action taken, no reply sent.

27. Reference letter dated 30-6-59 regarding half time running of machine in Ring deptt. No action .

28. Sarder Darshan singh super visior misbehaved to our shift representatives Moshier singh and Dina Nath No action on complaints sent.

29. On 8. 10.59. Sh. Bhaggen Reeling I was refused work .

30. In the month of Oct, Sh. Paris Nath (who has a permanent card) was refused work without cause.

31. On 14.8.59. workers of the evening shift were forced to stop work for one hour from 5.15 to 6.15. and the peace rated workers have been not compensated. for that.

32. Sh. Gurdial singh s/o Girdhari pass No 119 Ring II was not given Badli as required under the Agreement.

33. The Ring workers have not been given Inam since July and August 1959.

Phone No. 149

WORKERS UNITE

HISSAR TEXTILE MILLS WORKERS UNION

Regd. No. 40

(AFFILIATED TO A. I. T. U. C.)

NAGORI GATE,
HISSAR

Ref: No..................

Dated...

34. The Rate of Tea etc have not been increased by the shop keeper in the mills colonymarket. No [illegible] action has been taken by the management .

35. The management refused to [illegible] some demands as agreed to in the agreement dated 11.4.59.

36. The Management failed to fulfill the promises made on 26-8.60 in the presence of Com. Satish Loomba.

I hope that [illegible] speedy action will be taken on this complaint.

Yours faithfully

[signature]

General Secretary.

1. Com. Satish Loomba G. S. Head (PTUC) Jullundur city.
2. The Secretary A.I.T.U.C. [illegible] Road New Delhi.
3. The Labour Minister Chandigarh.
4. The Labour Secretary Chandigarh.
5. Shri Gulzari Lal Nanda Union Labour Minister New Delhi.
6. Shri N.K. Jain Labour Officer Bhiwani.

16th Dec 1959

261/A

Dear K. G.,

Herewith a copy of a Memorandum, that will be submitted today to the Bombay Vidhan Sabha.

A procession of workers of the first shift will be taken to the Vidhan Sabha, to present the memorandum.

The decision to organise the Morcha was taken by the Action Committee elected by the Mumbai ~~Girani~~ Rajya Girani Kamgar Parishad held on Nov. 28th & 29, 1959.

A full report of the Parishad has appeared in the Yugantar of last week, together with resolutions. I have arranged to send you a copy of the particular Number.

Since Com. Pandhe is there (who knows Marathi) I think you can utilise the material.

Greetings,

Yours,

Shibnath

— मुंबई गिरणी कामगार युनियन —

ता. १६ डिसेंबर " मागणी दिन " यशस्वी करा !

कामगार बंधूभगिनींनो,

गिरणी धंद्यातील सद्य:परिस्थितीचा विचार करण्यासाठीं आपल्या युनियनच्या वतीनें ता. २८-२९ नोव्हेंबर रोजीं मुंबई शहरांत **मुंबई राज्य गिरणी कामगार परिषद** भरवली.

नागपूर, अकोला, सोलापूर, सांगली, इचलकरंजी, जळगांव, अमळनेर, धुळें, चाळिसगांव, अहमदाबाद येथील गिरणी कामगार केंद्रांतील एकूण ८१ प्रतिनिधि आले होते, तर खुद्द मुंबई शहरांतील ६५७ चे वर प्रतिनिधिंनी परिषदेत भाग घेतला होता.

परिषदेस आलेल्या प्रतिनिधिंनीं परिषदेस आपआपल्या केंद्रांतील जे अहवाल सादर केले त्यावरून **गिरणी कामगारांची आज कशी कोंडीची परिस्थिति तयार झाली आहे हें स्पष्ट झालें.**

गिरणी कामगारांवर आज मालकांकडून सर्वबाजूंनीं हल्ले सुरू आहेत. एका बाजूला वेजबोर्डाकरवी पगारवाढीच्या प्रश्नाचा विचार चालू असतांना प्रत्यक्षांत मालकांनीं पाळयाबंदी व गिरणबंदीचा धाक घालून सोलापूर व खानदेशमधील अमळनेर, जळगांव, धुळें इ. लहान केंद्रांतून रा. संघाकरवी महागाईभत्ता कपातीचे करार घडवून आणले आहेत. गिरणी धंदा अरिष्टांत आहे या नांवाखालीं कामवाढ व आधुनीकीकरण पुढें रेटण्यासाठीं आज महाराष्ट्रांतील व गुजराथमधील अनेक गिरण्यांना टाळी लावण्यांत आली आहेत. मुंबई शहरांतील धनराज व माधव मिल चालू करण्याचे दृष्टीनें सरकारकडून कोणतेहि निश्चयात्मक पाऊल पडलेलें नाहीं. एवढेंच नव्हे तर सक्सेरियाचे बाबतीतहि मालकांनी चालू गिरणी बंद पाडण्याचे दृष्टीनें कोलदांडा घालण्याचे प्रयत्न चालविले आहेत.

कापड गिरणी मालक आज त्रिपक्षीय करार उघडपणें धाब्यावर बसवून आज कामवाढीचा हल्ला पुढें रेटीत आहेत व त्यासाठीं हजारों कामगार बेकार केले जात आहेत. उरलेले कामाच्या असह्य बोजाखालीं कासावीस होत आहेत. बदली व स्त्री कामगारांची गिरण्यांतून अक्षरश: हकालपट्टी सुरू असून उरलेल्यांना महिन्यांतून कित्येक दिवस काम मिळत नाहीं. महागाई शिगेस पोचली असतां वेतनवाढ देण्यासाठीं नेमलेल्या वेतनमंडळाचा निकाल २॥ वर्षें झालीं तरी बाहेरच येत नाहीं. याशिवाय कामाच्या परिस्थितीसंबंधीं—सांच्यावर वा बाजूवर घाग होणें, खळकांजी ठीक नसणें, घोटे, चामडे, पिकास वगैरे वेळेवर न मिळणें वगैरे असंख्य तक्रारी कामगारांच्या आहेत, तर दररोज शेंकडो वार्निंग व दंडाचे पास कामगारांना देण्यांत येत आहेत.

या अन्यायाचा प्रतिकार करण्यासाठीं कामगार ज्या आपल्या विश्वासाच्या, एकजुटीच्या युनियनकडे पहातात, त्या युनियनला मान्यता नाहीं. मान्यतेच्या युनियनकडे पहावें, तर तिच्या नेत्यांनीं मालकांशीं हातमिळवणी केलेली. स्वतःच कांहीं प्रतिकार करावा, तर बेकायदा संपाचा बडगा ठेवलेला. बरें ! सरकार कांहीं संरक्षण देईल म्हणावें, तर त्याचा मालकांच्या धोरणाला उघड पाठिंबा. **अशा परिस्थितींत गेल्या कित्येक वर्षांत कामगारांचा एकही जिव्हाळ्याचा प्रश्न सुटलेला नाहीं.**

परिस्थितीची ही कोंडी कशी फोडावयाची याचा परिषदेनें विचार केला. हा विचार केल्यानंतर परिषदेचें मत बनलें कीं **हे प्रश्न धसास लावावयाचे तर एका गिरणीतील**

किंवा एका केंद्रातील नव्हे, तर सर्व केंद्रांतील कामगारांचा राज्यव्यापी लढा उभारला पाहिजे–राज्यव्यापी एकजूटीची कृति केली पाहिजे.

अशा प्रकारचा लढा संगठित करण्यासाठीं परिषदेनें निरनिराळ्या केंद्रांतील एक **क्रांति–समिति** निवडली.

परिषदेनें गिरणी कामगारांच्या जिव्हाळ्याच्या प्रश्नावर पुढील घोषणा दिल्या आहेत.

* सद्यःपरिस्थितींत कामवाढीला व नवीन मशीनरी आणून बेकारी वाढविण्यास संपूर्ण बंदी घातली पाहिजे.
* कमीत कमी २५ टक्के पगारवाढ तांबडतोब मिळाली पाहिजे. मेंहागाई भत्ता पगारांत सामील केला पाहिजे. टेक्सटाईल इंजिनिअरिंग कामगारांना वार्षिक वाढत्या पगाराच्या वेतनश्रेणी मिळाल्याच पाहिजे.
* एका नंबरावर सतत २ महिन्यापेक्षां अधिक काळ वा सर्व नंबरांवर सतत ३ महिन्यापेक्षां अधिक काळ काम करणाऱ्या बदली कामगारांना तांबडतोब कायम केले पाहिजे. बदली कामगारांना महिन्यांतून किमान १५ दिवस काम वा १५ दिवसांचा पगार मिळाला पाहिजे.
* गिरणधंद्यातील २५ टक्के नोकऱ्या व कांहीं खास खातीं स्त्री कामगारांसाठीं राखून ठेवली पाहिजेत.
* विमा योजनेतील दोष तांबडतोब दूर झाले पाहिजेत. कामगारांसाठीं हॉस्पिटलें बांधण्याचा कार्यक्रम तांबडतोब हातीं घेतला पाहिजे.
* बंद गिरण्या सरकारनें तांबडतोब ताब्यांत घेऊन त्या चालू केल्या पाहिजेत.

या मागण्या मिळविण्यासाठीं क्रांति–समितीने तांबडतोब मोहीम उभारण्याचें ठरविलें आहे. तिची सुरवात म्हणून ता. १६ डिसेंबर हा दिवस गिरणीकामगारांचा "मागणी–दिन" म्हणून पाळण्याचे क्रांति–समितीने ठरविलें आहे.

या दिवशीं पहिल्या पाळीच्या कामगारांचा "विराट मोर्चा" विधानसभेवर जाईल व आपल्या मागण्यांचे-गाऱ्हाण्यांचे निवेदन विधानसभेला सादर करील.

महाराष्ट्रांतील इतर केंद्रांचे प्रतिनिधीही या मोर्चांत भाग घेतील.

कामगार बंधूनों, हा मोर्चा हें आपल्या लढ्याचें शिंग फुंकणें आहे. त्यांत हजारोंच्या संख्येनें भाग घेऊन गिरणीमालक व सरकार यांना निक्षून सांगा कीं गिरणी कामगार इतःपर आपली कोंडी सहन करणार नाहीं.

क्रांति–समितीचे निर्णय व पुढील कार्यक्रम समजावून सांगण्यासाठीं रविवार ता. १३ डिसेंबर ५९ रोजीं युनियनतर्फे जाहीर सभा होईल.

जागाः— **नरे पार्क, परळ, मुंबई १२.**

वक्तेः—**साथी एस. एम. जोशी** आमदार **आर. डी. भंडारे**

कॉ. एस. ए. डांगे आमदार **दत्ता देशमुख** आमदार **उद्धवराव पाटील**

हजारोंच्या संख्येने हजर रहा ! मागणी दिन यशस्वी करा !!

ता. १६ डिसेंबर रोजीं विधान सभेवर होणाऱ्या मोर्चात

हजारोंच्या संख्येनें सामील व्हा !

हें पत्रक श्री. **यशवंत चव्हाण** यांनीं मुंबई गिरणी कामगार युनियन, दळवी बिल्डिंग, परेल, मुंबई यांचे वतीनें आनंद प्रिं. ॲण्ड प. दादर मुंबई, १४ यांजकडे छापून प्रसिद्ध केलें.

19 DEC 1959

PHONE : 24011 (4 LINES)
GRAMS : "YARN"

DELHI CLOTH MILLS

PROPRIETORS : THE DELHI CLOTH AND GENERAL MILLS CO., LTD.

BARA HINDU RAO
POST BOX NO. 1039
DELHI.

Ref. No. L/o 515

261

Date 16/12/59

The General Secretary,
Kapra Mazdoor Ekta Union,
Goushala Gate,
Kishanganj Mill Area,
DELHI.

Dear Sir,

We are in receipt of your letter No.334/59/KMEU, dated the 9th instant. It hardly needs any comment from our side how you have all along for nearly one and a half year done everything possible to disrupt the good working of the Mill, disturb the peace, preach hatred against the Management and vilify responsible officers of the Mill, day in and day out; how your top executives have time and again during this period agitated the workers, attempted to force illegal strikes, but the Management has, with patience, counselled you moderation and to give up these tactics.

Your present letter appears to have been written with the object of white-washing all your wrong actions of at least last one year. If someone were to take a detached view of the whole situation and were to follow the correspondence that has passed between you and the Management which is full of filthy, abusive and irresponsible language on your part, one would understand the fine record you have of your relations with the present Management.

Mere repudiation without reference to context, or without substance does not mitigate the wrong which you have been practising inspite of repeated requests to write and behave like a responsible office bearer of the Union. Since the letter under reply is only

..2..

PHONE : 24011 (4 LINES)
GRAMS : "YARN"

DELHI CLOTH MILLS

PROPRIETORS : THE DELHI CLOTH
AND GENERAL MILLS CO., LTD.

BARA HINDU RAO
POST BOX NO. 1039
D E L H I .

Ref. No. .....

Date .....

intended to send another volley of your malicious allegations against the Management and to continue to pursue the policy of vilification against the Management, you seem to be harping the same old tune. In the face of irrefutable facts, we consider that unless you make sincere effort to educate your executives to behave in a responsible manner while writing the board, giving speeches, talking to workers and writing letters to the Management, no useful purpose would be served in the direction of improving relations between the Management and Union.

In the matter of your drawing attention to the accidents, the Management is alive to its responsibilities and, as usual, has been doing the needful.

Yours faithfully,

Sd/- B.D.Pathak.
GENERAL MANAGER.

Copy to:

L/No. 519
16/12/59

The General Secretary,
All India Trade Union Congress,
4, Asoka Road,
NEW DELHI.

(261)

Translated copy of the Cotton Mills Mazdoor Union (Regd), Abohar(Punjab) letter dated December 2, 1959 to the Labour Inspector, Ferozpur.

The management of the Shree Bhawani Cotton Mills have made arbitrary changes in the working hours and leave pattern of the workers without consulting the union. Some workers have been detained for more than 48 hours inside the mills.

On December 8, 1959 when the workers went for their duty, they were turned out. The police is patrolling the Labour Colony and terrorising the worker. The workers have not yet been paid.

Hence you are requested to intervene and try to save the situation.

बोनस के लिये, छटनी के विरोध में,   ६।१२।५८
                                                                       इन्दौर
प्रजा सोशलिस्ट और कम्युनिस्टों का

साथ-साथ भूख हड़ताल

इन्दौर १९५८ के बोनस के लिए, और काम बाढ़ और छटनी के विरोध में और अखिल भारतीय कपड़ा वेज बोर्ड के फैसले लागू कराने के लिए, मिल मजदूर यूनियन, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता साथ-साथ काम करते हैं। प्रजा सोशलिस्ट कार्यकर्ता तथा यूनियन के उपमंत्री साथी रतनलाल सिसोदिया, कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता तथा यूनियन के जनरल सेक्रेटरी का० रामलाल तथा कार्यकारिणी के सदस्य का० डूंगरसी, ता० ४।१२।५८ से दिन के ४ बजे, चिमन बाग चौराहे पर आमसभा में यूनियन के अध्यक्ष साथी [illegible] के द्वारा स्वागत करने के बाद उसी जगह उपरोक्त साथियों ने ९६ घंटे की भूख हड़ताल शुरू कर दिये। तभी से भूख हड़ताली साथियों से मिलने के लिए मजदूरों तथा जनता की भीड़ लगी हुई रहती है।

इंटकी भाग खड़े हुये

मजदूर नेताओं द्वारा मांगों के लिए किये जा रहे भूख हड़ताल का समर्थन करने के बजाय इंटकियों ने पुलिस की इजाजत लेकर उसी जगह मिटिंग करने का एलान किया। उन्होंने मिलों से जाबरों, मुकादमों और मास्टरों द्वारा दबाव डलवा कर मजदूरों को घेर कर लाये। और गंदी गंदी गालियों और भद्दे शब्दों का प्रयोग करते रहे।

चिमन बाग चौराहे पर बिजली के खम्भों पर कई लाल झंडे लहरा रहे थे। उन्होंने चीन के सीमा विवाद की बातें करके झंडे जलाने की प्रयत्न करने लगे। पुलिस अधिकारियों के मना करने पर भी न माने।

तब मजदूरों ने नारे दिये — लाल झंडा नहीं जलाने पायेंगे इसके लिए खून बहा देंगे। लाशों पर लाशें गिरेंगी लेकिन लाल झंडे की हिफाजत करेंगे।

यह कहते ही मजदूरों के खून उबाल उठे। फिर क्या था ज्योंही मजदूर साथियों ने अपने झंडे के बचाने के लिए

२

आगे बढ़े त्यों ही इंटकियों ~~में भगदड़~~ के भाड़े की फौज में भगदड़ मच गई। वे भाग कर होटलों में छिप गए। जिनके कपड़े-पाजामें रही, गटर में कूद छिपे और भाषण देनेवाले द्रविड़ी-केशरी, यादव, नरवता छोड़ कर भाग खड़े हुए। गांधी टोपी, हिफाजतवाला, मायकों को छोड़ कर भाग खड़े हुए। जिनके गीतों में मजदूर और शासन की जनता मखौली उड़ा रही है। मिट्टी के माधो लोग चले थे लाल झण्डा गलाने। फिर भाग क्यों बाबू ?॥

विशाल आमसभाएं

सुपरइण्टेन्डेंट के निष्कासन के विरोध में ता० ५।१२।५९ को दिन में 3 बजे और रात को १२ बजे सियागंज चौराहे पर आमसभा हुई। जिसमें ८ हजार मजदूरों ने हिस्सा लिया। का० होमी दाजी, का० शिवचन्द्र सावंत, का० दिवाकर, का० अब्दुलरहमान के भाषण हुए।

ता० ६।१२।५९ को मालवा मिल गेट पर आम सभा हुई जिसमें 300 हजार मजदूरों ने हिस्सा लिया का० होमी दाजी का० होमी दाजी के भाषण हुए।

ता० ७।१२।५९ को विशाल जुलूस निकालने की तैयारी हो रही है।

शिवनारायण श्रीवास्तव

मिल मजदूर यूनियन
१६७, जवाहर, इन्दौर.

रजिस्टर नं. २६७

मिल मजदूर युनियन इन्दौर (रजिस्टर्ड)

१६७ नयापुरा नं. १,
इन्दौर (म. प्र.)

क्रमांक .... दिनांक १९

प्रिय साथी,

आज ही के डाक से भूख हड़ताल सम्बन्धी लेख आपके कार्यालय को भेज रहा हूँ। उस लेख में इस नोट को भी जोड़ लीजिएगा।

'भूख हड़ताल के समर्थन में हजारों मजदूरों की आमसभाएं होती रहती हैं। इसके अलावा निम्न ट्रेड यूनियनों ने भूख हड़ताल के समर्थन में प्रस्ताव पास किये हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं।

१- मोटर कर्मचारी यूनियन इन्दौर
2- मालवा वनस्पति मजदूर यूनियन इन्दौर।
3- जीवन बीमा कर्मचारी यूनियन इन्दौर
४- इंजीनीयरिंग मजदूर यूनियन इन्दौर।
५ देवास मिल मजदूर यूनियन

प्रकाशनार्थ

शिवनारायण श्रीवास्तव
८/१२/५९

सोलापूर गिरणी कामगार युनियनचा

अहवाल: सन १९५८-५९.

सोलापूर गिरणी कामगार युनियनची स्थापना होऊन १।। वर्षे झाली. आजची ही दुसरी वार्षिक सभा आहे. या युनियनच्या स्थापनेचा अितिहास असा कीं,

पूर्वी म्हणजे स्वातंत्र्यपूर्वी कालांत गिरणी कामगारांना अेकत्र करणारी व कामगारांच्या तर्फे अेकच अेक आवाजाने बोलणारी व कामगारांचे निरनिराळे प्रश्न कामगारांच्या अेकजुटीने सोडविणारी अशी अेकच अेक लाल-बावटा गिरणी कामगार युनियन होती. यानंतर राष्ट्रीय संघ निर्माण झाला. गिरणी मालकांनीं दिलेल्या सवलती व कॉंग्रेससरकारनें दिलेला पाठिंबा या दुहेरी जोरावर राष्ट्रीय संघ प्रातिनिधीक -- झाला. सोलापुरांत कामगारांची जी अेकजूट होती त्यामध्यें भेद निर्माण झाला यानंतर अितरही संघ निघाले. अुदा० शे. का. पक्षाची गिरणी कामगार सभा. प्र.सो.पार्टीची मिल मजदूरसभा, व त्या नंतर गिरणी कामगार कमेटी व अितरहि राजकीय पक्षाचे -- कार्यकर्ते कामगारांत काम करीत होते. अुदा० लालनिशाण गटाचे कार्यकर्ते. यामुळें कामगारांचा अेक आवाज बंद झाला.

मालकाबरोबर मसलती करणें, काय चालले व काय करावयास पाहिजे याची -- कामगारास वरचेवर माहिती न देणे व खात्यांतील अधिकाराच्या जोरावर वर्गणी जमा करणे. अेवढाच कार्यक्रम व हाच अेकमेव धंदा राष्ट्रीय संघ करीत आहे.

१९५७ सालच्या निवडणुकीमध्ये कामगार वर्गामधील मोठ्या विभागानें कॉंग्रेसला साथ दिली. महाराष्ट्रामध्यें कोठेही अश्याप्रकारची चूक कामगार वर्गाने केली नाहीं. कामगार वर्गाच्या या चुकीचें प्रायश्चित्त त्यांना लाबडतोब मिळाले. निवडणुकीचा -- निकाल लागल्या बरोबर नरसिंग गिरजी बंद होऊन ४००० कामगार बेकार होऊन शहरांत अेक प्रकारचे तंग वातावरण निर्माण झाले. याच वेळीं जुन्या गिरणीला बंद होण्याची घरघर लागली होती. हजारों कामगारांना काम नाही म्हणून परत पाठविण्यात येत होते. कामगारामध्यें अशी परिस्थिती असताना संघ व कॉंग्रेसचे पुढारी-कोठल्याहि प्रकारची हालचाल करण्यास त्यार नव्हते. यावेळी महाराष्ट्रात कॉंग्रेस -विरोधी व संरकार विरोधी मुंबअी सह संयुक्त महाराष्ट्र मिळविण्याची चळवळ चालू होती ही चळवळ हाणून पाडण्यासाटी सरकारने मुंबअी, अहमदाबाद, निपाणी वगैरे ठिकाणी जो राक्षसी गोळीबार केला त्याचा कडकडून निषेध करण्यासाठी गिरण्यातील कामगार हरताळ करून खवळून अुठला. व हळके हळके समितीच्या नेतृत्वाखाली कामगार वर्ग येत चालला या गोष्टीची कल्पना सोलापूरांतील समितीला आल्याबरोबर -- नरसिंगगिरजीचा प्रश्न सोडविण्यासाठीं बेकार विरोधी कमिटी स्थापन करण्यांत -- आली. व साथी अेस. अेम. जोशी यांचे नेतृत्वाखाली नरसिंगगिरजी मिल चालू -- करण्याचा प्रयत्न करण्यात आला. सरकारच्या व संघाच्या वतीने अनेक अडथळे आले असतानासुध्दां समितीने कामगारांना अुपासमारीपासून वाचविण्यासाठी गिरणी -- चालविण्याचा प्रयत्न केला व सरकारनीही गिरणी चालूं करण्याबाबत अेक स्कीम-समिती नेत्यापुढें ठेवली व समिती नेत्यांनीं त्या स्कीमला दुष्काळी योजना म्हणून पाठिंबा दिला व गिरणी चालूं झाली.

समितीच्या या योग्य नेतृत्वामुळें कामगार वर्ग समितीकडे जास्त प्रमाणांत झुकुं लागला व संयुक्त महाराष्ट्र मिळविण्यासाठीं सगळेपक्ष अेक झाले. तसे कामगाराचें प्रश्न सोडविण्यासाठीं या पक्षानीं का अेक होऊ नये अशी कामगार वर्गाकडून विचारणा होऊं लागली. कामगारांच्या या रास्त भावनेला समितीनें ताबडतोब साथ दिली. व फेब्रुवारि १९५८ मध्यें आपल्या या युनियनची स्थापना करण्यात आली. या युनियनची स्थापना व्हावयास व जुनी गिरणी बंद पडण्यास अेकच गांठ पडली. तसेच विष्णू-लक्ष्मी, जाम गिरणी मालकांनी संघाबरोबर महागाअी कटींचा कामगार विरोधी असा विश्वास घातकी करार करण्याचा मोका साधला. जुनी गिरणी बंद पडल्यामुळें

७००० कामगार बेकार झाले. या कामगार वर्गाला मिळणारा पगार थांबल्यामुळें व ३।। रुपयाचा करार केल्यामुळे कामगारांच्या उत्पन्नांत घट निर्माण झाल्यामुळें -- शहरातील एकूण धंद्यावर व जीवनावर विपरीत परिणाम घडून आले. हजारो कामगारानीं आपल्या घरातील किडूक मिडूक विकून आपली गुजराण चालू ठेवण्याचा प्रयत्न केला. कित्येक कामगार कुटुंबातील स्त्रियांना आपल्या कच्या-बच्यांची पोटाची -- खळगी भरण्यासाठीं स्वतः ची अब्रू विकावी लागली. इतर गिरण्यामधील कामगाराना सुध्दां मिळणाऱ्या अपुऱ्या पगारांत भागणें अशक्य झाल्यामुळे फारच मोठ्या प्रमाणात कर्जबाजारी व्हावे लागले. व हे जबर व्याजाचे कर्ज फेडण्यासाठीं अंगात काम करण्याची हिम्मत व ताकद असतानासुध्दां केवळ प्रॉव्हिडंट फंड मिळतो व त्यांतून कर्ज फेड करतां येते म्हणून राजीनामे द्यावे लागत. अशा प्रकारची अतिशय गंभीर परिस्थिती सोलापूरात निर्माण झाली.

ह्या गंभीर परिस्थितीची सरकारनें व मालकानें व संघाने वेळीच दखल घ्यावी नाही तर अचानक स्फोट झाल्या शिवाय रहाणार नाहीं. याची दखल त्यांना दिली पण कोणाचीही झोप उडाली नाहीं. म्हणून कामगार वर्गाला भेडसावणारे हे भयानक सर्व प्रश्न कामगारांच्या ताकदीवर सोडवून घ्यावयाचे या जिद्दीनें युनियननें कामास हात घातला. ३।। रु. महागाई कटीच्या करार विरुध्द कामगाराना संघटित करुन एप्रिल १९५८ च्या १० तारखेला मिळणारा पगार कामगारानी स्वीकारु नये व संघानें केलेला विश्वास घातकी कराराचा निषेध करावा म्हणून आपल्या युनियननें आदेश दिला. त्याला विष्णू-लक्ष्मी, जाम या तिन्हीही गिरणीतील कामगारानी १०० % साथ दिली व त्या महिन्यात आपल्या युनियनचे जवळ जवळ ५००० कामगार १ रुपया वर्गणी देऊन सभासद झाले. रा. संघाचें प्रतिनिधित्व हिरावून घेऊन ते - आपल्या युनियनला मिळाले म्हणून कामगारांच्या मनामध्यें जोरदार भावना निर्माण झाली. याच वेळीं जुनी गिरणी चालू केल्याबद्दल हायकोर्टाने जो मसुदा तयार केला होता त्यावर आपल्या युनियननें जोरदार हल्ला चढविला. संघानें महागाईचा करार करुन जसा तीन गिरण्यातील कामगारांचा विश्वास घात केला त्याच प्रमाणें जुन्या गिरणीतील कामगारांच्या पाठीवर कामगारांच्या सह्या घेऊन जुन्या गिरणीच्या - कामगारांचा विश्वास घात केला. कायदा प्रमाणें जुन्या गिरणीतील कामगाराला - १७ ते १८ लाख रुपये नुकसान भरपाई मिळावयास पाहिजे होती. ती संघाने १ - लाखावर आणून ठेवली. व तीही अद्याप मिळाली नाही. पाळ्याचे पैसे ८ लाख मिळावयास पाहिजे होते. ~ ते २ लाखावर आणून ठेवले. व तेही अद्याप मिळाले नाहीत. ३।। रुपया महागाई भत्ता मिळण्याचा करार केला या सगळ्या मुद्द्याला युनियनच्या वतीने विरोध करण्यासाटीं आपल्या युनियनचे प्रतिनिधी (१) बाबा कुसूरकर (२) बाबूराव कुलकर्णी व (३) कॉ. इनामदार हे १५ मे १९५८ ला मुंबईला गेले व त्या ठिकाणीं कॉ. इनामदार यांनी आपल्या युनियनची बाजू मांडून ही गिरणी लिलावात गेली तरच कामगारांचा कसा फायदा आहे हे दाखून सांगितले. सावकारांची - पूर्वीची थकलेली देणी देण्यासाटीं मालकाला वाव मिळावा म्हणूनच ३।। रुपया महागाईचा करार संघाने केला आहे. म्हणजे मालक लोणी खाऊन मोकळा झाला व त्याचे कर्ज मात्र कामगाराने फेडावयाचे हा उलटा न्याय संघाने कामगारांच्या डोकांडी - मारला. संघाची ही कृत्यें कामगार वर्गाच्या हिताच्या विरोधी आहेत. व संघाचे प्रतिनिधित्व काढून घ्यावे व ते आपल्या युनियनला मिळावे. म्हणून आपण अर्ज केला. त्या अर्जाच्या सुनावणीच्या वेळेला कॉ. साने व कॉ. इनामदार यांनी संघाची - कामगार विरोधी कृत्यें रजिस्टरच्या नजरेस आणून दिली. व शेवटी रजिस्टरने - आठवले यांना त्याबद्दल जाब विचारला पण सरकार कॉंग्रेसचे असल्यामुळें व संघ कॉंग्रेसचा असल्यामुळें संघाने केलेली सगळी पापे पचून गेली. व आपली युनियन रजिस्टर -

होण्याबद्दल अडथळे निर्माण होऊ लागले. त्यातच ४ महिन्यानंतर कामगार - वर्ग युनियनचा पुन्हा मोठ्या प्रमाणांत सभासद न झाल्यामुळें आपल्या युनियनच्या प्रतिनिधित्वाचा प्रश्न तसाच भिजत राहिला.

आपली युनियन जरी रजिस्टर झाली नाही तरी सतत सभा घेऊन आपण संघाचा व मालकांचा महागाई वाढ मिळवून घेण्यासाठीं पिच्छा पुरविला व त्याचा योग्य तो परिणाम होऊन सप्टेंबरमध्यें १९५८ ला ४ आणे वाढ मिळाली. - त्याच वेळीं नरसिंगगिरजीमधील कामगारांनाही पगारातील फरकाची वाकी आपण मिळवून देऊ शकलो. कामगारवर्गाबरोबर रोज संबंध यावेत व त्यांच्या अडी अडचणीला ताबडतोब तोंड फोडतां यावे म्हणून आपण आपले ऑफिस नव्या पेठेतून हलवून गिरणी विभागांत आणले व त्याचा फारच बंगला परिणाम दिसून आला. आपल्या ऑफिसमध्यें रोज शेकडो कामगार त्यांच्या दैनंदिन तक्रारी घेऊन येतात व युनियन त्या सोडविण्याचा अटोकाट प्रयत्न करते. पेपर्स वाचणें माहिती करून घेणें वगैरेसाठीसुध्दां कामगार फारच मोठ्या प्रमाणांत युनियन ऑफिसमध्यें येतात. हे दृश्य पाहिल्यावर कामगाराची खरीखुरी युनियनहीच आहे अशी कामगारांची भावना वाढीस वाढूं -- लागली.

कामगार वर्ग अशात-हेने हळूहळू आपल्या युनियनच्या झेंड्याखाली संघटित - होत चालला असताना महागाई भत्याच्या प्रश्नावर कोर्टाने कामगार विरोधी - निकाल दिला व त्यामुळें रा. संघ मात्र निकालात निघाला कोर्टाचा निर्णय समाधान कारक नसल्यामुळें २३-८-५९ ला तीन्ही गिरण्यातील कामगारवर्ग स्वयंस्फूर्तीने - संपावर आला संपावर आलेल्या कामगाराना जास्तीत जास्त संघटित करणें व त्यांना संघाचे स्वरूप समजावून सांगणे यासाठीं आपल्या युनियनने जिवाचे रान केले. व २८-८-५९ ला शहरातील मालक, सरकारी अधिकारी, राजकीय पुढारी यांना - दाखवून दिले कीं, सोलापुरांतील कामगार संघाला मानीत नाहीत व तो सोलापूर गिरणीकामगार युनियनच्या पाठीमागे आहे. या प्रभावी संपामुळें सोलापुरांतील - राजकीय वातावरण ढवळून निघाले. व कामगाराचा मित्र कोण व शत्रु कोण याची - पुरेपुर कल्पना शहरवासियांना आपण आणून दिली. संपकाळामध्यें श्री. बुध्दवराव पाटील व कॉ. भगतराव सूर्यवंशी यांनी मुंबईहून येऊन आपल्या युनियनला जे बहुमोल मार्गदर्शन केले व योग्य वेळीं संप परत घेण्याचे जे कौशल्य दाखविले त्याबद्दल आपली युनियन त्यांना धन्यवाद देते. तसेच येथील म्यु. कौन्सिलर यांनी संपामध्यें युनियनला जी बहुमोल मदत केली त्याबद्दल युनियन त्यांचे आभार मानते.

२८ तारखेला संप परत घेत असताना युनियनने कामगाराना बजावून सांगितले कीं हत्यार अेकाच हातात घ्यावयाचे व लढण्यास दुस-यास सांगावयाचे ही परि - स्थिती त्यांनी ~~बदलली~~ बदलली पाहिजे. संघाला असलेला प्रतिनिधित्वाचा हक्क काढून घेऊन तो आपल्या युनियनला मिळवून देण्याचा झगडा यापुढें चालू ठेवा असा स्पष्ट आदेश श्री. बुध्दवराव पाटील यानी दिला. त्याचा परिणाम म्हणूनच पुढील महिन्यांतच ७००० कामगार सभासद झाले. कामगारवर्गाची ही संघटित ताकद पाहून कोठल्याही कामगाराला संप केल्याबद्दल कामावरून काढून टाकण्यात येणार नाहीं. असें मालकाला व कलेक्टरला अश्वासन द्यावे लागले. व त्यामुळें कोर्टाने संप बेकायदेशीर ठरवूनसुध्दां कोठल्याही कामगाराला कामावरून काढणें मालकाला शक्य झाले नाहीं.

या वर्षाच्या काळांत नरसिंगगिरजी गिरणी, कामाच्या त्रासामुळें व थोड्याशा असंतोषातून संप झाला, त्यावेळीं आपल्या युनियनने कामगाराना योग्य ते मार्गदर्शन

केले व रास्त मार्ग दाखविला. उलट राष्ट्रीय संघानेमात्र कामगारांची मानहानी करणारे असे माफीपत्र लिहून देण्याची अट घातली. या संपाचे वेळीं व गिरणीची झालेली टाळेबंदी ताबडतोब काढून टाकणें विषयीं आमदार उद्धवराव पाटील - यांनी खूपच मदत केली. युनियनला व कामगारांनाही मार्गदर्शन केले.

या अहवालाच्या काळातच आपल्या युनियनचे दोन कार्यकर्ते श्री. आरवडे व श्री. बाबूराव वाणकर यांना सभासद नोंदणीच्या आरोपावरून गिरण्यानी कमी केले. व आपल्या दोन कार्यकर्त्यांना नोकरीस मुकावे लागले.

जुन्या गिरणीतहि सरकारने त्वरित उपाय योजना करावी म्हणून वारंवार मागणी केली आहे. अेवढेच नव्हे तर करारा प्रमाणें गिरणी चालत नाही म्हणून शक्य झाले तर कायदेशीर उपाय योजना करण्याचीही तयारी युनियनने केली आहे.

अहवालाचे सालांत जवळ जवळ ८० ते ९० जाहीर सभा ५ मोर्चे या खेरीज अनेक ठिकाणी ग्रुप कामगारांच्या बैठकी घेतल्या पत्रव्यवहार, कामगारांच्यातक्रारी या बाबत आकडेवारीच देणे शक्य नाहीं. वर्षाच्या काळांत कामगारांच्या निरनिराळ्या अेक हजार तक्रारी तरी युनियननें लिहून पाठवल्या.

कामगारवर्ग आज जरी युनियनच्या नेतृत्वाखाली आला असला तरी त्याच्या विचारांत सुसंगतपणा व अेकसुत्रीपणा नाही. हे नमूद करणें युनियनला भाग आहे. कारण संघाचे सभासद झाल्यामुळें कोणकोणत्या आपत्तीस तोंड द्यावे लागले याची पुरी जाणीव कामगाराला असतानासुध्दां युनियनचे मोठ्या प्रमाणांत सभासद राहून युनियनला प्रातिनिधीक दर्जा मिळवून देण्याचा सतत प्रयत्न कामगार करीत नाहीत. कोठल्यातरी प्रश्नावर भावनेच्या आहारी जाऊन कामगारांचे प्रश्न सुटत नसतात. त्याच्या पाठीमागे नेहमी संघटित व जागृत ताकद उभी करावी लागते. हे ज्या दिवशीं कामगार वर्गाच्या लक्षांत येईल तोच त्यांच्या दृष्टीनें सुदीन होय. व त्या भूमिकेने सोलापुरांतील कामगार वर्गाने पुढील वाटचाल केली पाहिजे. पुढील येणारा काळ फारच बिकट आहे हे कामगारांच्या लक्षांत आणून देणे युनियन आपले कर्तव्य समजते. २ साच्या अैवजीं ४ साचे २ बाजू अैवजी ४ बाजू निरनिराळी खातीं कॉन्ट्रॅक्ट पद्धतीनें देऊन कामगारांना बेकार करणें वगैरे आपल्याला थोड्याच दिवसांत कामगाराला तोंड द्यावे लागणार आहे. अशा वेळीं कामगाराच्या हिताचे रक्षण करणारी युनियन जर प्रातिनिधीक नसेल तर सध्या पैकी निम्मे कामगार येत्या १-२ वर्षात रस्त्यावर फेकले जातील. याबद्दल युनियन कामगाराला गंभीर अिशारा देवूं अिच्छिते आणि म्हणून कामगारवर्गाची खरीखुरी जी आपली युनियन आहे तिला प्रतिनिधीत्वाचा हक्क मिळवून देण्यासाठीं जे कामगार सभासद झाले नसतील त्यानी ताबडतोब - सभासद व्हावे व झाले असतील त्यानी पुढील सहामहिन्याची वर्गणी द्यावी अशी - युनियन त्यांना कळकळीची विनंती करीत आहे. कोठल्याही दमदाटीला भिऊन जर संघाचे सभासद झालात तर आपली युनियन प्रातिनिधीक होणार नाहीं. हे कामगारांनी लक्षांत ठेवावे. व जिद्दीने येत्या वर्षांत आपली युनियन प्रातिनिधीक करणें - अेवढा अेकच ध्यास बाळगून कामाला लागणे ही विनंती.

आपल्या युनियनमध्यें काम करणारे तुमच्यासारखेच अेकेकाळीं कामगार असलेली मंडळी आहेत. कॉ. साने यांच्यासारखा कामगारवर्गातील दर्दीमनुष्य निघून गेल्यामुळें फारच कुचंबणा होते. युनियनमध्यें संपूर्णवेळ कामकरणाऱ्या कार्यकर्त्यांस जगविणे हे कामगारांचे कर्तव्य आहे. व त्यांना योग्य ते वेतन दिल्या शिवाय कामामध्यें अेकसूत्रीपणा येणार नाहीं. कामगारापुढील प्रश्नांचा अभ्यास करून त्यांचे योग्य ते मार्गदर्शन कर-

करण्यासाठीं जर तुम्हांला कार्यकर्ते पाहिजे असतील तर त्या कार्यकर्त्याला - युनियन शिवाय दुसरे कोठलेही कामाचा व्याप असता उपयोगाचा नाहीं.

कामगार बंधूंनो तुमच्या बरोबर काम करणारी कार्यकर्ती मंडळी तुमच्या सारखीच कामगार मंडळी पैकी आहेत त्यांच्या हातून चुका झाल्या असण्याची शक्यता आहे त्या चुका अेकत्र विचार विनिमय करून आपण दुरुस्त करुया व पुढील वर्षाची तिसरी वार्षिक सभा ज्या वेळीं आपण घेऊ त्या वेळीं आपली - युनियन प्रातिनिधीक झालेली असेल अशी उमेद बाळगूया.

सोलापूर ता. १२-११-१९५९

अेस. वाय. फलमारी
सेक्रेटरी.

आर. अेस. रणशृंगारे
अध्यक्ष
सोलापूर गिरणी कामगार युनियन.

President - R. S. Ranshringare.
General Secretary - B. Y. Kulkarni.